REFERENCE

Re. Police Firing at Hubli, Karnataka on 15Th August 1994

विपक्ष के नेता (श्री सिकन्दर बख्त): सदर साहिबा, ''सरामद राजगारे ये फकीरे'' हम लोग जब मौजूद नहीं थे हाउस में तो यहां हुबली का सवाल उठाया गया। अहम सवाल था। उठना चाहिए था। लेकिन मुझे शिकायत है कि कुछ फैक्ट्स को नजरअंदाज किया गया। मेरा इरादा किसी किस्म की-आज पहले ही दिन कोई ऐसी कंट्रोवर्सी खड़ी करने का नहीं है कि जिसमें हमारी तबियतें बिखरना शुरू हो जाएं। लेकिन मैं मजबूर हूं कि कुछ बातें जो इस हाउस में कही गयी हैं वे कुछ वाकयात से, असल वाकयात से हटकर कही गयी हैं। यहां से चली गयीं हमारी पार्लियामेंट अफेयर्स की मिनिस्टर साहिबा।

شری سکندر بخت صاحب: صدر صاحبہ: سرآمد روزگارے ایں فقیرے ہم لوگ جب موجود نہیں تھے ہاؤس میں تو یہاں ہبلی کا سوال اٹھایا گیا۔ اہم سوال تھا۔ اٹھانا چاہئے تھا لیکن مجھے شکایت ہے کہ کچھ فیکٹس کو نظر انداز کیا گیا۔ میرا ارادہ کسی قسم کی۔ آج پہلے ہی دن کوئی ایسی کنٹروورسی کھڑی کرنے کا نہیں ہے کہ جس میں ہماری طبیعتیں بکھرنی شروع ہو جائیں لیکن میں مجبور ہوں کہ کچھ باتیں جو اس ہاؤس میں کہی گئی ہیں وہ کچھ واقعات سے۔ اصل واقعات سے ہٹ کر کہی گئی ہیں یہاں سے چلی گئیں ہماری پارلیمنٹ افیرس کی منسٹر صاحبہ۔

श्री सैयद सिब्ते रजी (उत्तर प्रदेश): दूसरे बैठे हैं।

شری سید سبط رضی: دوسرے بیٹھے ہیں

श्री सिकन्दर बख्त: मेरे पास इस अखबार में जो बातें यहां कही है उनके कुछ हिस्से मैं देना चाहता हूं, उसके बाद मैं हुबली से मुताल्लिक फैक्ट इस सदन के मेम्बर्स की खिदमत में रखना चाहता हूं। पहला जुमला सदर साहिबा इसमें यह है कि-

شری سکندر بخت: میرے پاس اس اخبار میں جو باتیں یہاں کہی ہیں ان کے کچھ حصے میں دینا چاہتا ہوں۔ اس کے بعد میں ہبلی سے متعلق فیکٹس اس سدن کے ممبرس کی خدمت میں رکھنا چاہتا ہوں پہلا جملہ صدر صاحبہ اس میں یہ ہے کہ۔

"The Centre is monitoring the situation in Hubli and has asked the Karnataka Government to ensure that there is no escalation in violence."

अब यह ''इस्कलेशन'' का जो लफ्ज इस्तेमाल किया गया है इसका मतलब यह है कि वहां वायोलेंस मौजूद था और उस वायोलेंस में इजाफा न होने दिया जाए। मैं ठाकुर साहब के जरिए से चाहूंगा कि मिनिस्टिर साहिबा को बतायें।

اب یہ "اسکیلیشن" کا جو لفظ استعمال کیا گیا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ وہاں وائلنس موجود تھا اور اس وائلنس میں اضافہ نہ ہونے دیا جائے۔ میں ٹھاکر صاحب کے ذریعہ سے چاہوں گا کہ منسٹر صاحب کو بتائیں۔

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश): वे भी पार्लियामेंट अफेयर्स मिनिस्टर हैं।

श्री सिकन्दर बख्त: वे हैं लेकिन यह बयान मुताल्लिक किया गया है मारग्रेट आल्वा साहिबा से...(व्यवधान)

†[ITransliteration in Arabic Script

मेरी गुजारिश सुन लीजिए। मैं बहुत नर्मी से बात कर रहा हूं। मेरा कोई झगड़ा करने का मकसद बिल्कुल नहीं है, माफ करें। मैं सिर्फ यह कहना चाह रहा हूं कि इस्कलेशन इन वायोलेंस तो तब हो सकता है जब वायोलेंस पहले से मौजूद है और यह बयान बिल्कुल गलत है।

شری سکندر بخت: وہ ہیں لیکن یہ
بیان متعلق کیا گیا ہے مارگریٹ الوا
صاحب سے... مداخلت "میری گزارش
سن لیجئے۔ میں بہت نرمی سے بات کر رہا
ہوں۔ میرا کوئی جھگڑا کرنے کا مقصد بالکل
نہیں ہے۔ معاف کریں۔ میں صرف یہ کہنا
چاہ رہا ہوں کہ "اسکیلیشن ان وائلنس"
تو تب ہو سکتا ہے جب وائلنس پہلے
سے موجود ہے اور یہ بیان بالکل غلط ہے۔

There was absolutely no violence.

दूसरी बात मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि इसमें कहा गया है-और यह भी मारग्रेट आल्वा साहिबा से मुताल्लिक किया गया है।

دوسری بات میں یہ عرض کرنا چاہتا
ہوں کہ اس میں کہا گیا ہے اور یہ بھی
مارگریٹ الوا صاحبہ سے متعلق کیا گیا ہے

"The question led to a wide-spread protest from the Congress Members who were on their feet and said that though the tri-colour could be hoisted anywhere, the BJP was deliberately choosing disputed sites."

मैं अर्ज करना चाहता हूं कि वह मैदान डिसपयूटेड साइट न था, न है इस वक्त। बदकिस्मती यह है कि इस किस्म की डिस्क्रिमिनेशन पूरे मुल्क को देकर जहां किसी किस्म की वायलेंस न हो, जहां बुनियादी तौर पर कोई डिस्प्यूट न हो, वायलेंस भड़काने की कोशिश की जाती

"They are trying to create tension and hatred among the people. They have gone there with a simister design, to spread communal disharmony in the South."

सदर साहिबा, मैं फरवरी में बंगलौर में था और कुछ मुस्लिम हजरात से मेरी बात-चीत हो रही थी। उनसे बात-चीत करने के बाद मैंने उनसे अर्ज किया कि राष्ट्रीय ध्वज के सिलसिले में फिरकेवाराना तनाव का पैदा होना बेबुनियाद बात है, गलत बात है, नहीं होना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज का एहतराम रखना चाहिए और इस फिरकेवाराना तनाव को मिटाने के लिए अब की दफा 15 अगस्त को मैं हुबली पहुंचूंगा और वहां सिर्फ चंद मुस्लिम कार्यकर्ताओं को साथ ले जाकर मैं राष्ट्रीय ध्वज वहां फहराऊंगा। जाने से एक हफ्ता कबल, हफ्ता दस रोज कबल प्राइम मिनिस्टिर साहब से मेरी मुलाकात हुई। प्राइम मिनिस्टर साहब को मैंने इतलाह दी कि मैं यही इरादा रखता हूं कि मैं 15 अगस्त को हुबली जाऊं, ताकि मैं वहां जो कम्युनल टेंशंस पैदा की जा रही हैं, कौन पैदा कर रहा है मैं उसका जिक्र करूंगा, मैं उन कम्युनल टेंशंस को डिफ्यूज करने में वहां की सरकार का मददगार हूं। मैंने प्राइम मिनिस्टिर साहब से दरख्वास्त की कि मेहरबानी से आप यह बात कर्णाटक के चीफ मिनिस्टिर साहब को भी कन्वे कर दें। प्राइम मिनिस्टर साहब ने यह बात कर्णाटक के चीफ मिनिस्टिर को कन्वे करने का वायदा किया। मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि इस 15 तारीख से दो-चार रोज पहले मैंने टेलीफोन करके अब्बास को कहा कि तुम जाकर अंजुमन इसस्लाम के दोस्तों से मुलाकात करो, मिलो और उनसे कहो कि अगर वह खुद झंडा सलामी के लिए तैयार है तो हम लोग दूर रहेंगे, उससे वह झंडा सलामी कर दें। अब इस किस्म की एहतियातें करने के बावजूद हम पर यह इलजाम लगाने की कोशिश करना कि हमारा सिनिस्टर डिजाइन और हम कम्युनलिज्म वहां फैला रहे हैं, मैं चाहता था कि इस हाउस में यह इलजाम लगने से पहले अगर हमारे आनरेबल मैंबर्ज प्रधान मंत्री जी से इसकी तसदीक कर लेते तो अच्छा होता सदर साहिबा, डिस्क्रिमिनेशन के जरिए से, जहां कोई नाम-निशान, किसी किस्म की वायलेंस जब नहीं था, हिंदुस्तान में वायलेंस की आब-व-हवा, वायलेंस की फिजा बनाना निहायत गुनाहगारी की बात है। सदर साहिबा, बदकिस्मती क्या है कि यहां के लोगों के सामने अदालती कार्यवाही क्या है, कब से वहां किस्सा, पुराना किस्सा बताया जाता है, लेकिन पिछली तीन अदालतों से हाई कोर्ट से पहले सैशन कोर्ट में, उससे पहले मुंसिफ कोर्ट में मामलात थे। फैसला हो गया कि वह जमीन सिर्फ

†[ ]Translateration in Arabic Script

दो बार ईद के मौके पर, ईद और बकर ईद के मौके पर ईदगाह में जब लोग भर जाते हैं तो भरने के बाद ज्यादा लोग नमाज़ पढ़ने आते हैं वे बाहर नमाज़ पढ़ते हैं। उस जगह को पब्लिक प्लेस माना गया है। हर अदालत में, यहां तक कि सुप्रीम कोर्ट के पास जो मुकदमा है, उन्होंने जो स्टे दिया है उन्होंने मैदान के पब्लिक प्लेस रहने से कोई रुकावट नहीं है और बिल्कुल सफाई से कहा है कि मैदान हर किस्म की पब्लिक एक्टिविटी के लिए खुला रहेगा। लफ्ज़ जो इस्तेमाल किया गया है मैं उसको "यात्रा" कहूं या "जात्रा" कहूं, JATRA. whatever it means उसके लिए खुला रहेगा।

स्टे सिर्फ इसलिए दिया गया है कि वहां अंजुमन इस्लाम ने कुछ दुकानों को तामीर कर लिया था, उन तामीरात को डिमोलिश नहीं किया जाय। तो नीचे के तीनों कोर्ट्स में उन तामीरात को डिमोलिश करने का हुक्म था, उसको स्टे कर दिया गया है सिर्फ, लेकिन मैदान के इस्तेमाल को कतई स्टे नहीं किया गया है।

सदर साहिबा, बदकिस्मती यह है कि हमारे कुछ दोस्तों ने यह एक तरीका अख्तियार कर दिया है कि बी.जे.पी. की गर्दन में एक तौक डालना है कि ये फिरकापरस्त हैं और जिस असली फिरकापरस्ती के साथ वह एक किस्ती में सफर कर रहे हैं, उस फिरकापरस्ती पर पर्दा डालने की कोशिश है लगातार। सदर साहिबा, मैं कहना चाहता हूं कि आखिर दिल्ली वाले हैं हम और आप सब भी दिल्ली में बहुत अरसे से हैं। दिल्ली में दर्जनों जगह पर ईद की नवाज होती है जिनमें तीन जगहें मेजर हैं-जामा मस्जिद, ईदगाह और फतेहपुरी की मस्जिद। तो जब ईद का दिन होता है, उनमें इतने लोग वहां नवाज पढ़ने जाते हैं कि उसमें समा सकते नहीं, उबल पड़ते हैं वे। सड़कों पर आ जाते हैं, मैदानों में आ जाते हैं और आना चाहिए उनको। वह इसी किस्म का मौका है कि जब लोगों को इबादत करने की खुली इजाजत होनी चाहिए, लेकिन साल में दो मर्तबा अगर सड़कों और मैदानों तक लोग पहुंच जाते हैं किसी भी मजहबी इमारत के बाहर तो क्या मालिक बन जाते हैं उस जमीन के? जमीनें तो अगर सरकार की है तो सरकार की रहती है। मतलब वहां मिल्कियत का सवाल क्यों पैदा किया गया, किस वक्त पैदा किया गया? क्या उस जमीन को जोकि पब्लिक की जमीन थी, उसको किसी वक्त भी अपने कब्जे में लेने के लिए जो तरीका अख्तियार किया गया, वह फिरकावाराना तरीका था या यह कि वहां झंडा जाकर फहराना, वह फिरकावाराना तरीका था? सदर साहिबा, मुझे बड़ा रंज है कि हम लोग जो असली चेहरे हैं, उनको सामने लाने से घबराते हैं। हमने एक इलेक्टोरल अर्थमैटिक का जेहन रखकर चीजों के मुताल्लिक फैसला करना शुरू कर दिया है।

मैं इसको तसलीम करता हूं कि वहां एटमास्फियर कम्युनलिज्म का फैलाने की कोशिश की गयी, लेकिन करनेवाले कौन हैं? उनका नाम लेते हुए हम क्यों झिझकते हैं? सदर साहिबा, आम पब्लिक की जमीनों पर मजहब का नाम लेकर कब्जा करना क्या मुनासिब है और क्या ऐसा करने वाले हिंदुस्तान में फिरकापरस्ती को कमजोर करने की बात करते हैं या फिरकापरस्ती को बढ़ावा देने की बात करते हैं? सदर साहिबा, यह बेकग्राउंड है। मैंने इसके अंदर कुछ जुमले लिए हैं। अब मैं थोड़ीसी वह तारीख भी बता दूं आपको। सदर साहिबा (व्यवधान)

شری سکندر بخت: مسلسل جاری
میں عرض کرنا چاہتا ہوں کہ وہ میدان
"ڈسپیوٹیڈ سائٹ" نہ تھا، نہ ہے اس
وقت۔ بدقسمتی یہ ہے کہ اس قسم کی ڈس
انفارمیشن پورے ملک کو دی گئی۔ جہاں کسی
قسم کی وائلنس نہ ہو، جہاں بنیادی طور
پر کوئی ڈسپیوٹ نہ ہو۔ وائلنس بھڑکانے
کی کوشش کی جاتی ہے۔ تیسری بات جو
کہی گئی ہے...

"They are trying to create tension and hatred among the people. They have gone there with a sinister design, to spread communal disharmony in the South."

صدر صاحبہ۔ میں فروری میں بنگلور
میں تھا اور کچھ مسلم حضرات سے میری بات
چیت ہو رہی تھی۔ ان سے بات چیت کرنے
کے بعد میں نے ان سے عرض کیا کہ راشٹریہ
دھوج کے سلسلے میں فرقہ وارانہ تناؤ کا
پیدا ہونا بے بنیاد بات ہے۔ غلط بات

†[ ]Transliteralion in Arabic Script

اس سے وہ جھنڈہ سلامی کر دیں۔ اب اس قسم کی احتیاطیں کرنے کے باوجود ہم پر یہ الزام لگانے کی کوشش کرنا کہ ہمارا "سنسٹو ڈیزائن" اور ہم کمیونلزم وہاں پھیلا رہے ہیں۔ میں چاہتا تھا کہ اس ہاؤس میں یہ الزام لگانے سے پہلے اگر ہمارے آنریبل ممبرس پردھان منتری جی اس کی تصدیق کر لیتے تو اچھا ہوتا۔ صدر صاحبہ۔ ڈس انفارمیشن کے ذریعہ سے جہاں کوئی نام و نشان کبھی قسم کی وائلنس جب نہیں تھا ہندوستان میں وائلنس کی آب و ہوا۔ وائلنس کی فضا بنانا نہایت گناہ گاری کی بات ہے۔ صدر صاحبہ۔ بدقسمتی کیا ہے کہ یہاں کے لوگوں کے سامنے عدالتی کارروائی کیا ہے۔ کب سے وہاں قصہ۔ پرانا قصہ بنایا جاتا ہے لیکن پچھلی تین عدالتوں سے ہائی کورٹ۔ ہائیکورٹ سے پہلے سیشن کورٹ میں۔ اس سے پہلے منصف کورٹ میں معاملات تھے۔ فیصلہ ہو گیا کہ وہ زمین صرف دو بار عید کے موقع پر۔ عید اور بقرا عید کے موقع پر عیدگاہ میں جب لوگ بھر جاتے ہیں تو بھرنے کے بعد زیادہ لوگ نماز پڑھنے آتے ہیں وہ باہر نماز پڑھتے ہیں۔ اس جگہ کو پبلک پلیس مانا گیا ہے۔ ہر عدالت میں یہاں تک کہ سپریم کورٹ کے پاس جو مقدمہ ہے انہوں نے

ہے نہیں ہونا چاہیئے۔ راشٹریہ دھوج کا احترام رکھنا چاہیئے اور اس فرقہ وارانہ تناؤ کو مٹانے کے لئے اب کی دفعہ ۱۵ اگست کو میں ہبلی پہنچوں گا اور وہاں صرف چند مسلم کارسیوکوں کو ساتھ لے جا کر میں راشٹریہ دھوج وہاں پھیراؤنگا۔ جانے سے ایک ہفتہ قبل۔ ہفتہ دس روز قبل میری پرائم منسٹر صاحب سے ملاقات ہوئی۔ پرائم منسٹر صاحب کو میں نے یہ اطلاع دی کہ میں یہی ارادہ رکھتا ہوں کہ میں ۱۵ اگست کو ہبلی جاؤں گا۔ تاکہ وہاں پر جو کمیونل ٹینشن پیدا کی جا رہی ہے۔ کون پیدا کر رہا ہے۔ میں اس کا ذکر کروں گا میں ان کمیونل ٹینشن کو ڈفیوز کرنے میں وہاں کی سرکار کا مددگار ہوں۔ میں نے پرائم منسٹر صاحب سے درخواست کی کہ مہربانی سے آپ یہ بات کرناٹک کے چیف منسٹر صاحب کو بھی کنوے کر دیں۔ پرائم منسٹر صاحب نے یہ بات کرناٹک کے چیف منسٹر صاحب کو کنوے کرنے کا وعدہ کیا۔ میں یہ بھی عرض کرنا چاہتا ہوں کہ اس ۱۵ تاریخ سے دو چار روز پہلے میں نے ٹیلی فون کر کے عباس کو کہا کہ تم جا کر "انجمن اسلام" کے ورکروں سے ملاقات کرو۔ ملو اور ان سے کہو کہ اگر وہ خود جھنڈا اسلامی کے لئے تیار ہیں تو ہم لوگ دور رہیں گے

تین جگہیں میجر ہیں۔ جامع مسجد، عیدگاہ اور فتحپوری کی مسجد۔ تو جب عید کا دن ہوتا ہے تو ان میں اتنے لوگ وہاں نماز پڑھنے جاتے ہیں۔ میدانوں میں آجاتے ہیں اور آنا چاہیئے ان کو۔ وہ اسی قسم کا موقع ہے کہ جب لوگوں کو عبادت کرنے کی کھلی اجازت ہونی چاہیئے لیکن سال میں دو مرتبہ سڑکوں اور میدانوں تک اگر لوگ پہنچ جاتے ہیں کسی بھی مذہبی عمارت کے باہر تو کیا مالک بن جاتے ہیں اس زمین کے، زمینیں تو اگر سرکار کی ہیں تو سرکار کی رہتی ہیں مطلب وہاں ملکیت کا سوال کیوں پیدا کیا گیا۔ کس وقت پیدا کیا گیا۔ کیا اس زمین کو جو کہ پبلک کی زمین تھی اس کو کسی وقت بھی اپنے قبضہ میں لینے کے لئے جو طریقہ اختیار کیا گیا وہ فرقہ وارانہ طریقہ تھا یا یہ کہ وہاں جھنڈہ جاکر پھہرانا وہ فرقہ وارانہ طریقہ تھا صدر صاحبہ۔ مجھے بڑا رنج ہے کہ ہم لوگ جو اصلی چہرے ہیں۔ ان کو سامنے لانے سے گھبراتے ہیں۔ ہم نے ایک "الیکٹورل ارتھ میٹک" کا ذہن رکھ کر چیزوں کے متعلق فیصلہ کرنا شروع کر دیا ہے۔

میں اس کو تسلیم کرتا ہوں کہ وہاں "ایٹماسفیئر کمیونلزم" کا پھیلانے کی کوشش کی گئی لیکن کرنے والے کون ہیں۔ ان کا جو اسٹے دیا ہے انہوں نے میدان کے پبلک پلیس رہنے سے کوئی رکاوٹ نہیں ہے اور بالکل صفائی سے کہا ہے کہ میدان ہر قسم کی پبلک ایکٹیوٹی کے لئے کھلا رہے گا لفظ جو استعمال کیا گیا میں اس کو "یاترا" کہوں یا "جاترا" کہوں

اس کے لئے کھلا رہے گا۔ اسٹے صرف اس لئے دیا گیا ہے کہ وہاں انجمن اسلام نے دکانوں کو تعمیر کر لیا تھا۔ ان تعمیرات کو ڈمولیش نہیں کیا جائے تو نیچے کے تینوں کورٹس میں ان تعمیرات کو ڈمولیش کرنے کا حکم تھا۔ اس کو اسٹے کر دیا گیا ہے صرف لیکن میدان کے استعمال کو قطعی اسٹے نہیں کیا گیا ہے

صدر صاحبہ۔ بدقسمتی یہ ہے کہ ہمارے کچھ دوستوں نے یہ ایک طریقہ اختیار کر لیا ہے کہ بی۔ جے۔ پی کی گردن میں ایک طوق ڈالنا ہے کہ یہ فرقہ پرست ہے اور جس اصلی فرقہ پرستی کے ساتھ وہ ایک کشتی میں سفر کر رہے ہیں اس فرقہ پرستی پر پردہ ڈالنے کی کوشش ہے لگاتار۔

صدر صاحبہ، میں کہنا چاہتا ہوں کہ آخر دلی والے ہیں ہم اور آپ سب بھی دلی میں بہت عرصہ سے ہیں۔ دہلی میں درجنوں جگہوں پر عید کی نماز ہوتی ہے۔ جن میں

نام لیتے ہوئے ہم کیوں جھجکتے ہیں۔ صدر صاحبہ، عام پبلک کی زمینوں پر مذہب کا نام لے کر قبضہ کرنا کیا مناسب ہے اور کیا ایسا کرنے والے ہندوستان میں فرقہ پرستی کو کمزور کرنے کی بات کرتے ہیں یا فرقہ پرستی کو بڑھاوا دینے کی بات کرتے ہیں۔ صدر صاحبہ یہ پبلک گراؤنڈ ہے۔ میں نے اس کے اندر کچھ چھپے لئے ہیں۔ اب میں تھوڑی سی وہ تاریخ بتا دوں آپکو۔ صدر صاحبہ... "مداخلت"...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी (उत्तर प्रदेश) : सिर्फ एक बात पूछूंगा सिकन्दर बख्त साहब, अगर इजाजत हो चैयर की? मैं आपकी हिमायत में बोलूंगा। मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि मेरी कोई नॉलेज नहीं है, मैं यह जानना चाहता हूं, जैसाकि आपने फरमाया कि एक मजहब के लोग किसी ऐसी जगह पर जोकि पब्लिक का मैदान है, उस पर कब्जा कर के मजहबी रंग दें, तो यकीनन यह नाजायज काम है। मगर क्या ऐसा हो रहा है कि वहां किसी एक मजहब के लोग अपने बाप की बपौती समझकर यह कह रहे हैं कि यह हमारी ही जमीन है। हम इस पर कोई काम नहीं होने देंगे या गवर्नमेंट का काम हो रहा हो या पब्लिक का कोई काम हो रहा हो तो नहीं होने देंगे? मैं सिर्फ यह जानना चाहता था।

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: صرف ایک بات پوچھوں گا سکندر بخت صاحب۔ اگر اجازت ہو چیئر کی؟ میں آپکی حمایت میں بولوں گا۔ میں یہ عرض کرنا چاہتا ہوں کہ میری کوئی نالج نہیں ہے۔ میں یہ جاننا چاہتا ہوں۔ جیسا کہ آپ نے فرمایا کہ ایک مذہب کے لوگ کسی ایسی جگہ پر جو کہ پبلک کا میدان ہے۔ اس پر قبضہ کرکے اس کو مذہبی رنگ دیں تو یقیناً یہ ناجائز کام ہے۔ مگر کیا ایسا ہو رہا ہے کہ وہاں کسی ایک مذہب کے لوگ اپنے باپ کی بپوتی سمجھ کر یہ کہہ رہے ہیں کہ یہ ہماری ہی زمین ہے۔ ہم اس پر کوئی کام نہیں ہونے دیں گے یا گورنمنٹ کا کام ہو رہا ہے یا پبلک کا کوئی کام ہو رہا ہو تو نہیں ہونے دیں گے میں صرف یہ جاننا چاہتا تھا۔

श्री सिकन्दर बख्त: आपका सवाल हो गया। सदर साहिबा, मैं किसी के बाप-दादा तक नहीं पहुंचना चाहता यह मेरे वश की बात नहीं है। बिल्कुल मेरे वश की बात नहीं है। वह है ही नहीं मेरे वश की बात। मगर मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि पब्लिक प्लेस थी और पब्लिक प्लेस है।

सदर साहिबा, अब मैं 15 अगस्त के वाकियात पर आना चाहता हूं।

شری سکندر بخت: آپ کا سوال ہو گیا۔ میں کسی کے باپ دادا تک نہیں پہنچنا چاہتا یہ میرے بس کی بات نہیں ہے۔ بالکل میرے بس کی بات نہیں ہے۔ وہ ہے ہی نہیں میرے بس کی بات۔ مگر میں صرف اتنا کہنا چاہتا ہوں کہ پبلک پلیس تھی اور پبلک پلیس ہے۔ صدر صاحبہ۔ اب میں ۱۵ اگست کے واقعات پر آنا چاہتا ہوں۔

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: मैडम, जब तक सुप्रीम कोर्ट का फैसला न हो जाय सिकन्दर बख्त साहब यह नहीं कह सकते कि यह पब्लिक प्लेस है या नहीं?

†

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: میڈم جب تک سپریم کورٹ کا فیصلہ نہ ہو جائے۔

†[ITransliteratioin in Arabic Script

سکندر بخت صاحب یہ نہیں کہہ سکتے کہ وہ پبلک پلیس ہے یا نہیں ۔

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him finish. Let Mr. Sikander Bakht complete his speech. Other people also want to speak. Mr. Jaipal Reddy also wants to say something. There are other people who want to speak... *(Interruptions)*... I would not permit it... *(Interruptions)*... Please let Mr. Sikander Bakht finish his speech.

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, मैं 15 तारीख के वाकियात आपके सामने रखना चाहता हूं।

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ میں ۱۵ تاریخ کے واقعات آپ کے سامنے رکھنا چاہتا ہوں ۔

15 तारीख को बी.जे.पी. के लोगों का क्लेम यह है कि उन्होंने वहां झण्डा फहराया और गवर्नमेंट का क्लेम यह है कि झण्डा हमने नहीं फहराने दिया।...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: "جاری" ۔۔۔۔ ۱۵ تاریخ کو بی جے پی کے لوگوں کا کلیم یہ ہے کہ انہوں نے وہاں جھنڈا پھیرایا اور گورنمنٹ کا کلیم یہ ہے کہ جھنڈا ہم نے نہیں پھیرانے دیا ... "مداخلت" ...

श्री बी.के. हरिप्रसाद (कर्नाटक): किसने झण्डा When did they start hoisting the flag there? Prior to 1992, the people of Anjuman-e-Islam were hoisting the flag there. But these people are trying to politicise *(Interruptions).*

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, अगर ऑनरेबिल मैम्बर में थोड़ी सी पेसेन्स हो।..(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ اگر آنریبل ممبر میں تھوڑی سی پیشنس ہو۔ مداخ

†[ ]Transliteration in Arabic Script

SHRI B.K. HARIPRASAD: Mr. Sikander Bakht is misleading the House, Madam. It is very unfortunate. ...*(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will permit you. ... *(Interruptions)*...

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, बहुत बहुत शुक्रिया। मैं जो कहना चाह रहा हूं, मैं इस वक्त झण्डे के फहराने की सच्चाई को या न फहराने की सच्चाई को नहीं लाना चाह रहा, लेकिन मेरा सिर इस बात से झुका हुआ है शर्म से, कि स्टेट का चीफ मिनिस्टर इस बात पर फख्र जाहिर करने की कोशिश करे कि वह कामयाब हो गया, उसने 15 अगस्त को हमारा राष्ट्रीय ध्वज फहराने नहीं दिया। मैं इस चक्कर में पड़ना नहीं चाह रहा कि वह किसका बयान दुरुस्त है या नहीं, मगर यह कहना चाह रहा हूं कि उसमें काबिले-दाद की बात, काबिले-फख्र की बात क्या है? हिन्दुस्तान के पब्लिक प्लेस पर, पब्लिक प्लेस को भी छोड़ दीजिए, सदर साहिबा, हमारा राष्ट्रीय ध्वज...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ بہت بہت شکریہ۔ میں جو کہنا چاہ رہا ہوں میں اس وقت جھنڈے کے پھیرانے کی سچائی کو یا نہ پھیرانے کی سچائی کو نہیں لانا چاہ رہا۔ لیکن میرا سر اس بات سے جھکا ہے شرم سے کہ اسٹیٹ کا چیف منسٹر اس بات پر فخر ظاہر کرنے کی کوشش کرے کہ وہ کامیاب ہو گیا اس نے ۱۵ اگست کو ہمارا راشٹریہ دھوج پھیرانے نہیں دیا۔ میں اس چکر میں پڑنا نہیں چاہ رہا کہ وہ کس کا بیان درست ہے یا نہیں، مگر یہ کہنا چاہ رہا ہوں کہ اس میں قابل داد کی بات، قابل فخر کی بات کیا ہے۔ ہندوستان کے پبلک پلیس پر، پبلک پلیس کی بھی چھوڑ دیجئے صدر صاحبہ، ہمارا راشٹریہ دھوج ... "مداخلت" ...

श्री अजीत जोगी (मध्य प्रदेश): एक बार देश को जला दिया, फिर जलाएंगे क्या?...(व्यवधान)...

SHRI B.K. HARIPRASAD: Madam, he is misleading the House ... *(Interruptions)...*

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra ■Pradesh): My request is, let Win complete. We shall all make our submissions. Let me complete. ... *(Interruptions)...* Let him complete. ... *(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Hanumantha Rao, I will permit you. Let him finish. But he should finish fast because

बख्त साहब, और भी नाम हैं। ...(व्यवधान)... बैठिए। बैठ जाइए।

श्री राजूभाई ए. परमार (गुजरात): मैडम, इनको बड़ा गर्व है कि आर.एस.एस. के हैडक्वार्टर नागपुर में राष्ट्रीय झण्डा नहीं फहराने दिया। ...(व्यवधान)...

सिकन्दर बख्त: आप मेरे साथ चलो। मैं आपको नागपुर ले चलता हूं आर.एस.एस. के हैडक्वार्टर पर। राष्ट्रीय ध्वज मैं फहराऊंगा, आप चलो मेरे साथ। क्या बात है?...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: آپ میرے ساتھ چلو۔ میں آپ کو ناگپور لے چلتا ہوں۔ آر۔ ایس۔ ایس۔ کے ہیڈ کوارٹر پہ۔ راشٹریہ دھوج میں پھہراؤں گا۔ آپ چلو میرے ساتھ۔ کیا بات ہے۔۔۔"مداخلت"۔۔

उपसभापति: सिकन्दर बख्त साहब, प्लीज। ...(व्यवधान)... बैठिए। बैठ जाइए। सिकन्दर बख्त साहब, और भी नाम है। ...(व्यवधान)...

श्री सिकन्दर बख्त: मैडम, आप कहेंगी, मैं बैठ जाऊंगा। मैं कोई गुस्ताखी के अलफाज किसी की शान में इस्तेमाल नहीं कर रहा हूं। मैं निहायत नर्मी से सिर्फ वाकयात रख रहा हूं।

सदर साहिबा, इस अखबार की रिपोर्ट में यह कहा गया है-

شری سکندر بخت: میڈم، آپ کہیں گی، میں بیٹھ جاؤں گا۔ میں کوئی گستاخی کے الفاظ کسی کی شان میں استعمال نہیں کر رہا ہوں۔ میں نہایت نرمی سے صرف واقعات رکھ رہا ہوں۔ صدر صاحبہ، اس اخبار کی رپورٹ میں یہ کہا گیا ہے۔

"The Bhartiya Janata Party had already decided to drop the idea of storming the Idgah Maidan at 11 a.m.".

यह वक्त का ख्याल जेहन में रखिए। सदर साहिबा, वहां से दो किलोमीटर के फासले पर एक जगह है देशपांडे नगर। लोग वहां चले गए। वह इलाका पूरा एक हिन्दू आबादी का इलाका है। यह अखबारात कह रहे हैं। यह लोकल पेपर है इंडियन एक्सप्रेस, बंगलौर का 16 तारीख इस्यू है। वहां जाकर लोग सिर्फ रिजोयस कर रहे थे।

یہ وقت کا خیال ذہن میں رکھیے صدر صاحبہ۔ وہاں سے دو کلومیٹر کے فاصلے پہ ایک جگہ ہے دیش پانڈے نگر۔ لوگ وہاں چلے گئے۔ وہ علاقہ پورا ایک ہندو آبادی کا علاقہ ہے۔ یہ اخبارات کہہ رہے ہیں۔ یہ لوکل پیپر ہیں انڈین ایکسپریس بنگلور کا ۱۶ تاریخ کا ایشو ہے۔ وہاں جاکر لوگ صرف رجوائس کر رہے تھے۔

They were there celebrating, celebrating the fact of having succeeded in hoisting the flag. Forget about that part...

फायरिंग किस वक्त हुई? 12 बजे के बाद। कहां हुई? On the spot. Which was considered to be controversial, वहां नहीं हुई, वहां से दो किलोमीटर दूर देशपांडे नगर में हुई। फायरिंग किसने की? रैपिड एक्शन फोर्स ने की। और, पुलिस की क्या राय है? पुलिस की राय, यह मैं पुलिस की बात कह रहा हूं, अपनी बात नहीं कह रहा हूं, सदर साहिबा। ...*(Interruptions)*... The crowds were in a jubilant mood. Suddenly, without any warning ...*(Interruptions)*....

†[ ] Transliteration in Arabic Script

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please. Chairman Saheb has permitted him and I am allowing him ...*{Interruptions}*.... Please. He has been permitted ...*(Interruptions)*.... Chairman Saheb has given the permission to him and 1 am allowing \nm...*(Interruptions)*...

SHRI SIKANDER BAKHT: We were at the receiving end in our action ...*(Interruptions)*...

श्री मोहम्द सलीम (पश्चिमी बंगाल): ज़ीरो ऑवर का स्टेटमेंट इससे पहले कभी आधा घंटा नहीं हुआ है ...**(व्यवधान)**... अयोध्या के मामले को इसी तरह से ...**(व्यवधान)**...

شری محمد سلیم: زیرو آور کا اسٹیٹمنٹ اس سے پہلے کبھی آدھا گھنٹہ نہیں ہوا ہے ... "مداخلت"... ایودھیا کے معاملے کو اسی طرح سے ... "مداخلت"...

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: सबको टाइम देना होगा। ...**(व्यवधान)**...

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: سب کو ٹائم دینا ہوگا ... "مداخلت"...

श्री अजीत जोगी: कितना खून और बहाओगे? ...**(व्यवधान)**... अभी भी प्यास नहीं बुझी आपकी? ...**(व्यवधान)**...

श्री सिकन्दर बख्त: मैं बहुत खामोशी से और अदब से अपनी बात कह रहा हूं, यह जो खामख्वाह शोर मचाने की आदत पड़ गई है, यह रुकनी चाहिए। मैं किसी पर जाति हमला नहीं कर रहा, मैं सिर्फ फैक्ट बता रहा हूं।...**(व्यवधान)**...

شری سکندر بخت: میں بہت خاموشی سے اور آرام سے اپنی بات کہہ رہا ہوں یہ جو خوامخواہ شور مچانے کی عادت پڑ گئی ہے یہ رکنی چاہیئے۔ میں کسی پر ذاتی حملہ نہیں کر رہا۔ میں صرف فیکٹ بتا رہا ہوں "مداخلت"۔

श्री विजय कुमार मल्होत्रा (दिल्ली): लाल झंडे की बात नहीं हो रही है।...**(व्यवधान)**...

श्री सिकन्दर बख्त: बैठिए, बैठ जाइए। सदर साहिबा, पुलिस अफसर का क्या कहना है ...**(व्यवधान)**... मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूं, पुलिस अफसर का क्या कहना है:-

شری سکندر بخت: بیٹھئے۔ بیٹھ جائیے صدر صاحبہ پولیس افسر کا کیا کہنا ہے ... "مداخلت"... میں اپنی بات نہیں کہہ رہا ہوں پولیس افسر کا کیا کہنا ہے۔ ....

"Suddenly without any warning, shots were fired in the air and the bewildered crowd ran helter-skelter.".

The Police officers who were trying to pacify the crowd told them clearly that the police had made a mistaken firing... *(Interruptions)*...

SHRI B.K. HARIPRASAD: Madam, he is misleading the House. Please allow me to speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will permit you, O.K. Let him finish.

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, मेरी बात सुनिए। ...**(व्यवधान)**... आप मेरी बात सुनिए।...**(व्यवधान)**...

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ۔ میری بات سنئے ... "مداخلت"... آپ میری بات سنئے ... "مداخلت"۔

Several police officers, including a Circle Inspector and a senior Traffic Officer said that the firing was a terrible mistake and the crowd would have been handled with patience. It was not a violent crowd. Even then they did not, in spite of all the provocations of firing, break into any violence.

सदर साहिबा, फैक्ट यह है, एक बड़ा सीधा सवाल हर हिन्दुस्तानी को अपने सामने रखना चाहिए कि अगर

†[Transliteration in Arabic Script

गड़बड़ होनी चाहिए थी तो वहां होनी चाहिए थी जहां मैदान था, गड़बड़ वहां क्यों हो? कोई अगर यह कहे कि देशपांडे नगर में गड़बड़ हुई और पुलिस वाले यह कहें कि वहां लोग कुछ गड़बड़ नहीं कर रहे थे, उसके बाद वहां फायरिंग के मायने क्या हैं? मेरा सवाल यह है, सदर साहिबा, कि देशपांडे नगर में रैपिड एक्शन फोर्स का मतलब क्या था? सदर साहिबा, वाक्या दरअसल यह है ...(व्यवधान)... वाक्या दरअसल यह है ...(व्यवधान)... सदर साहिबा, वाक्या दरअसल यह है ...(व्यवधान)...

†صدر صاحبہ فیکٹ یہ ہے۔ ایک بڑا سیدھا سوال ہر ہندوستانی کو اپنے سامنے رکھنا چاہیئے کہ اگر گڑبڑ ہونی چاہیئے تھی تو۔ وہاں ہونی چاہیئے تھی جہاں میدان تھا۔ گڑبڑ وہاں کیوں ہو۔ کوئی اگر یہ کہے کہ دیش پانڈے نگر میں گڑبڑ ہوئی اور پولیس والے یہ کہیں کہ وہاں لوگ کچھ گڑبڑ نہیں کر رہے تھے اس کے بعد وہاں فائرنگ کے معنی کیا ہیں۔ میرا سوال یہ ہے صدر صاحبہ کہ دیش پانڈے نگر میں ریپڈ ایکشن فورس کا مطلب کیا تھا صدر صاحبہ۔ واقعہ دراصل یہ ہے ...مداخلت... واقعہ دراصل یہ ہے ...مداخلت...

श्री मोहम्मद सलीम: मुद्दा क्या है? जहां गड़बड़ कराना चाह रहे थे वहां गड़बड़ नहीं हुई, मुद्दा क्या यह है? ...(व्यवधान)...

شری محمد سلیم: مدعا کیا ہے۔ جہاں کرانا چاہ رہے تھے وہاں گڑبڑ نہیں ہوئی مدعا کیا یہ ہے ...مداخلت...

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, वाक्या यह है कि उन पांच बेगुनाह मासूम जानों को ज़ाया करना हुबली के अंदर वास प्लेन एंड सिम्पल मर्डर ...(व्यवधान)... मैंने अभी खत्म नहीं किया है। मैं चीफ मिनिस्टर साहब से पूछना चाहता हूं और यहां भी यह बात कही गई है कि अयोध्या शुरू हो रहा है, मैंने वहां प्रैस के सामने कहा है कि अयोध्या के मामले में तो बहुत गुफ्तोशुनीय चली, बरसों तक चलती रही, अयोध्या का मामला एक बिलकुल दूसरे नेचर का था, हुबली को अयोध्या से मिलाना एक अब्सर्ड बात थी। ...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: صدر صاحبہ واقعہ یہ ہے کہ ان پانچ بے گناہ معصوم جانوں کو ضائع کرنا ہبلی کے اندر واس پلین اینڈ سمپل مرڈر ...مداخلت... میں نے ابھی ختم نہیں کیا ہے میں چیف منسٹر صاحب سے پوچھنا چاہتا ہوں اور یہاں بھی یہ بات کہی گئی ہے کہ ایودھیا شروع ہو رہا ہے۔ میں نے وہاں پریس کے سامنے کہا ہے کہ ایودھیا کے معاملے میں تو بہت گفت وشنید چلی۔ برسوں تک چلتی رہی۔ ایودھیا کا معاملہ ایک بالکل دوسرے نیچر کا تھا ہبلی کو ایودھیا سے ملانا ایک ابسرڈ بات تھی ...مداخلت...

मौलाना ओबेदुल्ला खान आजमी: बाबरी मस्जिद तोड़ दी गई और एक गोली नहीं चली ...(व्यवधान)... क्या बात करते हैं आप? ...(व्यवधान)...

مولانا عبیداللہ خان اعظمی: بابری مسجد توڑ دی گئی اور ایک گولی نہیں چلی ...مداخلت... کیا بات کرتے ہیں آپ ...مداخلت...

श्री सिकन्दर बख्त: आप ज़रा खामोश बैठिए। ...(व्यवधान)... सदर साहिबा, मेरी बात खत्म नहीं हुई है। ...(व्यवधान)... आप बैठ जाइए, मेरी बात खत्म नहीं हुई है। ...(व्यवधान)...सदर साहिबा, मेरी बात खत्म नहीं हुई है। मैं कहना चाहता हूं ...(व्यवधान)...

شری سکندر بخت: آپ ذرا خاموش بیٹھئے ...مداخلت... صدر صاحبہ میری بات

† [Transliteralion in Arabic Script

ختم نہیں ہوتی ہے..."مداخلت" صدر صاحب میری بات ختم نہیں ہوئی ہے۔ میں کہنا چاہتا ہوں... "مداخلت"..

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल (उत्तर प्रदेश): हुबली के अंदर पांच लोग मारे गए, हमको बहुत दुख है ...(व्यवधान)... अयोध्या की घटना के बाद पूरे मुल्क के अंदर हजारों आदमी मारे गए, कभी इन्होंने बात करी? ...(व्यवधान)... सारी दुनिया के अंदर पूरे मुल्क को बदनाम करा दिया इन्होंने ...(व्यवधान)...

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: ہبلی کے اندر پانچ لوگ مارے گئے۔ ہم کو بہت دکھ ہے.."مداخلت"۔ ایودھیا کی گھٹنا کے بعد پورے ملک کے اندر ہزاروں آدمی مارے گئے۔ کبھی انہوں نے بات کری "مداخلت" ساری دنیا کے اندر پورے ملک کو بدنام کرا دیا انہوں نے.."مداخلت"..

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: आइए जाकर आर एस एस के हैड क्वार्टर पर झंडा लहराइए आप, वहां क्यों नहीं लहराते? ...(व्यवधान)...

مولانا عبید اللہ خان اعظمی: جائیے جا کر آر ایس ایس کے ہیڈ کوارٹر پر جھنڈا لہرائیے۔ آپ وہاں کیوں نہیں لہراتے.."مداخلت"..

उपसभापति: बैठिऐ बैठ जाइए। ...(व्यवधान)...

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ भीम अफजल: 1942 के अंदर यह ''वंदे मातरम्'' का मज़ाक उड़ाते थे ...(व्यवधान)... 1942 के मूवमेंट में ये लोग ''वंदे मातरम्'' का मज़ाक उड़ाते थे ...(व्यवधान)...

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: ۱۹۴۲ کے اندر یہ ونڈے ماترم کا مذاق اڑاتے تھے.."مداخلت"..

†[ ]Transliteration in Arabic Script

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: جاری! ۱۹۴۲ کے موومنٹ میں یہ لوگ وندے ماترم کا مذاق اڑاتے تھے...."مداخلت"..

उपसभापति: अफ़ज़ल साहब, बैठ जाइए ...(व्यवधान)

श्री सिकन्दर बख्त: जरा हमारी शक्लों पर मुलाहिज़ा फरमाइए ...(व्यवधान)... सदर साहिबा, मेरा कहना यह है कि एक फैक्टर कॉमन था अयोध्या में और हुबली में और वह कॉमन फैक्टर यह था कि अयोध्या में भी A Dyer was let loose on the innocent people. A Dyer was let loose on the innocent people. का कत्ल हुआ है। अयोध्या में भी बेगुनाह और मासूम लोगों का कत्ल किया गया...(व्यवधान)...

सदर साहिबा, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह मुल्क राष्ट्रीय मामलात के सिलसिले में अब किसी की डिक्टेशन सुनने को तैयार नहीं है। बहुत सुन लिया हमने लेकिन अगर कोई राष्ट्रीय मामलात में दखल देगा, कोई राष्ट्रध्वज की बेईज्जती करेगा तो हम उसको बरदाश्त करने के लिए तैयार नहीं हैं। सदर साहिबा, यह हम आपको बता दें कि बहुत वक्त निकल गया...(व्यवधान) अब हिन्दुस्तान में जो दोबारा से 1947 से पहले की ज़हनियत पैदा हो गई है इस मुल्क को दोबारा से तोड़ने की, हम उस ज़हनियत को इस मुल्क को तोड़ने नहीं देंगे। हम वंदे मातरम् भी कहेंगे और हुबली में जा करके झंडा भी लहराएंगे और अयोध्या में राम-मंदिर भी बनाएंगे।

सदर साहिबा, अब हम बैठकर ये तमाशा, इन लोगों के हाथों में हिंदुस्तान की इज्जत, हिंदुस्तान का वकार सैक्रिफाईस करने के लिए तैयार नहीं हैं। सदर साहिबा, हिंदुस्तान हिंदुस्तानियत की वैल्यूज के साथ चलेगा, भारतीय वैल्यूज के साथ चलेगा, हिंदुस्तान के तौर-तरीकों के हिसाब से चलेगा। सदर साहिबा, बहुत हो गया, अब ये डिक्टेशन अपने घर पर रखें कि चाहे जिस जमीन पर कब्जा करो और उस पर अपनी ठेकेदारी कायम करो। ये मैंने कुछ वाक़यात रखे हैं। बहुत-बहुत शुक्रिया सदर साहिबा।

شری سکندر بخت: ذرا ہماری شکلوں اور ان کی شکلوں پر ملاحظہ فرمائیے.."مداخلت"۔

صدر صاحبہ، میرا کہنا یہ ہے کہ ایک ڈائر کا من تھا۔ ایودھیا میں اور ہبلی میں اور وہ کامن [illegible]

A- Dyer was let loose on the innocent people.

A Dyer was let loose on the innocent people.

اور ہبلی میں بھی

وہاں بے گناہ اور معصوم پیٹریاٹس کا قتل ہوا ہے۔ ایودھیا میں بھی بے گناہ اور معصوم لوگوں کا قتل کیا گیا۔ ۔۔مداخلت۔۔

صدر صاحبہ، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ یہ ملک راشٹریہ معاملات کے سلسلہ میں اب کسی کی ڈکٹیشن سننے کو تیار نہیں ہے۔ بہت سن لیا ہم نے لیکن اگر کوئی راشٹریہ معاملات میں دخل دے گا۔ کوئی راشٹر دھروج کی بے عزتی کرے گا تو ہم اس کو برداشت کرنے کیلئے تیار نہیں ہیں۔ صدر صاحبہ، یہ ہم آپ کو بتا دیں کہ بہت وقت نکل گیا۔ ۔۔مداخلت۔۔ اب ہندوستان میں جو دوبارہ سے ۱۹۴۷ کی ذہنیت پیدا ہو گئی ہے۔ اس ملک کو دوبارہ سے توڑنے کی، ہم اس ذہنیت کو اس ملک کو توڑنے نہیں دیں گے۔ ہم وندے ماترم بھی کہیں گے اور ہبلی میں جاکر کے جھنڈا بھی لہرائیں گے اور ایودھیا میں رام مندر بھی بنائیں گے۔

صدر صاحبہ، اب ہم بیٹھ کر اب ہم بیٹھ کر یہ تماشہ ان لوگوں کے ہاتھوں میں ہندوستان ہندوستانیت کی ویلیوز کے ساتھ چلے گا۔ بھارتیہ ویلیوز کے ساتھ چلے گا۔ ہندوستان کے طور طریقوں کے حساب سے چلے گا۔ صدر صاحبہ، بہت ہو گیا۔ اب یہ ڈکٹیشن اپنے گھر پر رکھیں کہ چلے ہے جس زمین پر قبضہ کر دو اور اس پر ٹھیکیداری قائم کر دو۔ یہ میں نے کچھ واقعات رکھے ہیں۔ بہت بہت شکریہ صدر صاحبہ۔

†[Transliteration in Arabic Script

THE DEPUTY CHAIRMAN: Just one minute... *(Interruptions)...* I am in the Chair. I have a right to listen to the leader of party. So, do not disturb him. Let me listen to him and I will dispose it of ... *(Interruptions)...*

SHRI S. JAIPAL REDDY: We have our own very strong viewpoints which are totally at variance with those of the Leader of the Opposition. The Leader of the Opposition has referred to a matter in great detail and we should also be permitted to speak so that the subject which he raised is fully dealt with. Therefore, may I begin, Madam?

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let me tell you one thing. Just one minute please. *...(Interruptions)...* The Chairman has permitted Sikandar Bakhtji, Prof. Vijay Kumar Malhotra and Shri Raghavji. Three names have been cleared by the Chairman ... *(Interruptions)...*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Zero Hour mention *...(Interruptions)...* Please hear *me...(Interruptions)...* It is not an ordinary Zero Hour mention. The Leader of the Opposition...*(Interruptions)...* So far took more than half-an-hour. I did not object. I wanted to hear him. I have got great respect for him. I wanted to hear. The matter was not dealt with in the nature of a brief Zero Hour mention. He dealt with it in depth, in extenso. Therefore, it should be given a different treatment. Therefore, I suggest that you permit me to speak. Let Vijay Kumar Malbotraji and Raghavji also join at a later stage ... *(Interruptions)...*

SHRI S.S. AHLUWALIA (Bihar): Why at a later stage?... *(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Malhotra made a suggestion that there is no need to be agitated. If you do not oblige, okay, both of you speak. I will permit Mr. Jaipal Reddy and others because I have got many requests and ... *(Interruptions)....*

The Members want to say, Mr. Hanumanthappa wants to say... *(Interruption^*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, you may kindly give a ruling. This matter needs to be addressed to by all sides of the House. *(Interruptions)*

SHRI KRISHNAN LAL SHARMA (Himachal Pradesh): Madam, if you are allowing a discussion, then it is another thing...

SHRI S. JAIPAL REDDY: It is a kind of discussion.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I leave it entirely to the House.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, I am submitting to you that the sense of the House demand that this be given a shape of discussion. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I take the sense of the House. If the House so agrees, I will permit. For me, there is no problem.

SHRI S. JAIPAL REDDY: From my party... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Mr. Malhotra and Raghavji speak, then you can speak.

मल्होत्रा जी, सिकन्दर बख्त साहब ने काफी टाईम बोला, विस्तार से बोला, अब आप इतना लम्बा न बोलिए। चंद शब्दों में जो भी आपको कहना है कह दीजिए because if you are going to have other Members, then it will be difficult. *(Interruptions)* It is not a discussion. But if the House...

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: I have written to the Chairman. I have given my name. The Chairman has permitted. The Members who have not given their names... *(Interruptions)*

SHRI VIREN J. SHAH (Maharashtra): It is a Special Mention. Now it is becoming a discussion. From my Party also, we would like to speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Viren Shah, it was not a discussion. But because Mr. Sikander Bakht said that it is a seriou* matter, I permitted him almost more than half an hour, about 45 minutes. But never in the Zero Hour is any person allowed 45 minutes. And that is what Mr. Jaipal Reddy has mentioned. If the House so agrees...

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: He would have finished in 15 minutes..

THE DEPUTY CHAIRMAN: If the House so agrees to speak on the subject, it is the House which is supreme. I agree with whatever the House says. *(Interruptions)* Now, let us not waste time. *(Interruptions)* Mr. Sanadi,I will permit you. *(Interruptions)*

प्रो. आई. जी. सदनी (आन्ध्र प्रदेश): चूंकि 15 अगस्त को मैं वहीं पर था, मेरी आंखों के सामने सारी घटनाएं घटी हैं। जो बातें हैं, यहां गलत इठाई गई हैं।...(व्यवधान) मैंने देखा है आंखों से, स्थिति क्या है, यह मुझे मालूम है। दो दिन के लिए मैं वहीं पर था। उससे पहले भी मैंने हाथ जोड़कर, करबद्ध होकर यहां पर कहा था इसको रोका जाए और इंटरवीन किया जाए। लेकिन फिर भी वहां पर जो घटनाएं घटी हैं उसका जो ट्विस्ट करके यहां गलत बयान दिया जा रहा है। क्योंकि मैं वहीं था...(व्यवधान)

श्री एस. एस. अहलुवालिया: यह वहीं के रहने वाले हैं।..(व्यवधान) इनका मैदान के सामने घर है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Sanadi, let him finish. When time comes, I will permit you.

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Kamataka): Madam, my submission is that the real facts from the area, from the State should go on record. Many of our friends who have not seen the area or know the topography cannot explain the facts. Without unnecessarily depending upon the press reports and without harping upon the reports, let the real facts come on record. Then what the Members want to say, many of the things they themselves may withdraw, just like Sikandar Bakhtji. He said, "public place'. Immediately he withdrew because it was not a public place. *(Interruptions)* Let these facts go on record. If some of these facts go on record, many of our friends may not like to add anything at all. This is what is required. *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Goby parties.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I leave it to the House. Whatever they want, I will agree to it.

SHRI S. JAIPAL REDDY: The BJP has already taken so much time. Let me speak from

my party. After all, it was not treated as a Zero Hour mention.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: जब हम लोग हाऊस में नहीं थे तब कल और परसों में 15 आदमी हमारे खिलाफ बोले और 15 आदमियों ने पूरा टाईम उसमें लिया है। इसलिए बार-बार यह कहना कि लीडर आफ दि अपोजिशन क्यों बोलें। हमने अपनी बात यहां आकर के रखी और आज चेयरमैन साहब ने एलाऊ किया तीन आदमियों को बोलने के लिए। यह भी अपना इश्यू यहां रखें और इश्यू रखकर के यह परमिशन लें चेयरमैन साहब से।...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have always allowed you to speak. Don't say that. *(Interruption!;)* I leave it to the House. I am not taking any responsibility. Let the House decide. It is fine. *(Interruptions)* Let Mr. Malhotra speak, please. *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I propose that the matter be discussed in the form of a... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaipal Reddy, let him speak first. Afterwards, you can speak. *(Interruptions)*

SHRI SIKANDER BAKHT: In response to Mr. Jaipal Reddy's request, I would say that this matter can be discussed in the form of a half-an-hour discussion. We can discuss it. We can have a regular discussion. Fine. Any day you like. *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, the Leader of the Opposition took forty-five minutes. It has already become a discussion. Let this be continued. *(Interruptions)* Permit me. Madam. *(Interruptions)*

उपसभापति: अभी उनको बोलने दीजिए, उसके बाद आप बोल दीजिएगा।

श्री मोहम्मद सलीम: मैडम, यह अच्छा किया, उनको बोलना चाहिए। जो लोग पूरे देश में फगवा झंडा लहराने चले थे, आज वे हुबली में तिरंगा लहरा रहे हैं।(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश): मैडम, जो सारी दुनिया में लाल झंडा लहराने लगे थे वे राइटर्स बिल्डिंग में ही सीमित हो गए।(व्यवधान)

तिरंगे में फगवा है, लाल नहीं है। तिरंगे में फगवा शामिल है।

श्री मोहम्मद सलीम: तिरंगे में जो फगवा है, वह आपका फगवा नहीं है। त्याग का है।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: वही है, वही है।(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Mr. Malhotra speak, please. *(Interruptions)* If you think the matter is serious, please allow Mr. Malhotra to speak. *(Interruptions)* Order, please. *(Interruptions)*

SHRI K. R. JAYADEVAPPA (Karnataka): Madam, one minute, please.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not allowing anybody. Not even one minute, please. 1 have to keep the House in order. Please. *(Interruptions)* I will permit accordingly. Mr. Malhotra, please be brief because Sikander Bakhtji had spoken enough.

SHRI K. R. JAYADEVAPPA: Madam, since the matter relates to Kamataka, more opportunity should be given to the Members from Karnataka.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Okay, I would. Your request is considered by the Chair. I will abide by it, but please sit down now

and allow Mr. Malhotra to speak.

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is the Chairman who had permitted him. Why are you asking me? I do not understand. The Chairman had permitted these three Members. How can I question the Chairman's permission? If you do, you can go. Okay. I cannot. I have to work under the directions of the hon. Chairman.

श्री ईश दत्त यादव (उत्तर प्रदेश): एक चीज़ डिसाइड हो जाए कि आप ज़ीरो आँवर चला रहे हैं या...

उपसभापति: अब आप बैठ जाइए। मैंने आपको एलाऊ नहीं किया है। आप सनदी साहब को फोन करें।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैडम, इनको रोकिए ना।

श्री एस. एस. अहलुवालिया: महोदया, सवाल यह नहीं है पर यह एक बहुत ही अहम मसला है और इस पर पूरे देश में एकतरफा रिपोर्ट दी जानी चाहिए। इस सदन के अंदर जितने सदस्य हैं सबको बोलने का अधिकार है। (व्यवधान) और मैं चाहता हूं कि आप अगर बुलवाना चाहती है, सिकन्दर बख्त साहब बोल चुके हैं, उसके बाद आप हरेक पार्टी के एक-एक सदस्य को बुलवा लें। फिर विजय कुमार मल्होत्रा बोलें फिर एक-एक को बुलवाइए। (व्यवधान) इस तरह से एक ही की बात को सुन कर क्या करेंगे? एकतरफा बातें हो रही हैं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Ahluwalia, after they speak, you would have the opportunity to reply to whatever they have

said. But please sid down and allow Mr. Malhotra, who has been given permission, to speak. May I request you to sit down?

श्री एस.एस. अहलुवालिया: मैं कहां कह रहा हूं कि परमीशन नहीं दी है। परमीशन उन्होंने दी है और परमीशन को न करने की मेरी इच्छा नहीं है। मैं यह कह रहा हूं कि इस सदन में बहस हो और सबकी बात सुनें।

उपसभापति: सबकी बात सुनेंगे। आप बैठिए, आपकी भी सुनेंगे।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: उपसभापति महोदया, सिर्फ दो सवाल सामने हैं। एक तो यह है कि हुबली में बिना चेतावनी के पुलिस की गोलीबारी से पांच लोग मारे गए, निर्दोष लोग मारे गए और दूसरा स्वतंत्रता दिवस पर 15 अगस्त को एक सार्वजनिक स्थान पर राष्ट्रीय झंडा लहराने से रोका गया...(**व्यवधान**)

उपसभापति: आप ज़रा सुन लेंगे खामोशी के साथ?

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: राष्ट्रीय झंडे का अपमान किया गया। उपसभापति महोदया, इन दोनों चीजों की पूरी जिम्मेदारी कर्नाटक के मुख्य मंत्री पर है। उन्होंने पहले दिन से घोषणा कर दी कि कोई राष्ट्रीय झण्डा लहराने की कोशिश करेगा तो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई करेंगे। इसलिए पांच लोगों की जो हत्या हुई, उस हत्या के जिम्मेदार वहां के मुख्य मंत्री हैं और वहां पर जो राष्ट्रीय झण्डे का अपमान हुआ, उसके जिम्मेदार भी वहां के मुख्य मंत्री हैं। इसलिए मैं यह कहना चाहता हूं कि राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने के जुर्म में संविधान की सुरक्षा की कसम खाने वाले हमारे प्रधान मंत्री को सबसे पहले हत्याओं की जिम्मेदार और राष्ट्रीय ध्वज के अपमान की जिम्मेदार मोइली सरकार को फौरी तौर पर बरखास्त करना चाहिए और उसको डिसमिस करना चाहिए। (**व्यवधान**) मोइली सरकार को डिसमिस करने के बाद उनके ऊपर पांच लोगों की हत्या करने का मुकद्मा चलाया जाना चाहिए। उप सभापति महोदया, यह मिनी जलियांवाला काण्ड हुआ है। (**व्यवधान**)

SHRI V NARAYANASAMY (Pondicherry): Madam, they are preaching religious fundamentalism in this country ... *(Interruptions)*

श्री एस.एस. अहलुवालिया: शहीदों का इतना बड़ा अपमान मत कीजिए। (**व्यवधान**)

SHRI V. NARAYANASAMY: These people are preaching religious fundamentalism inside Parliament and outside Parliament. This is totally unfair... *(Interruptions)*

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: जलियांवाला बाग में बिना चेतावनी के लोगों पर गोलियां चलायी गयी थीं और यहां हुबली में भी उन पर बिना चेतावनी गोलियां चलायी गयीं। (**व्यवधान**)

श्री एस.एस. अहलुवालिया: हम रोकते नहीं हैं बोलने को लेकिन गलत मत बोलिए। (**व्यवधान**)

उपसभापति: बैठिए, बैठिए, बैठ जाइए। माथुर साहब बैठ जाइए, अहलुवालिया जी, आप भी बैठ जाइए। अब आप जल्दी खत्म करें। (**व्यवधान**)

श्री कृष्ण लाल शर्मा: उप सभापति महोदया.. (**व्यवधान**)

THE DEPUTY CHAIRMAN: 1 have no ruling on this, please. Whatever you want to say, when 1 permit you, you can say... *(Interruptions)* .. 1 will permit you and you can speak, but not now...*(Interruptions)*...Listen to him, now, and answer, if you want to, when you speak.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: जनरल डायर ने बिना चेतावनी के गोली चलाई, लोगों की हत्या कर दी थी और यहां पर भी हुबली में बिना चेतावनी के, बिना बताये हुए वहां शांत लोगों पर गोलियां चलाईं और उसके बाद ...(**व्यवधान**)*

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: यह हाउस की कार्रवाई से निकाला जाना चाहिए। (**व्यवधान**) इसको एक्सपंज कराइये। (**व्यवधान**)

SHRI S. S. AHLUWALIA: He should withdraw the words.... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please. ...*(Interruptions)* Go back. Go back. Go back to your *seats...(Interruptions)*

मिनट आप लोग बैठ जाइये। Keep quiet.

If he withdraws it, fine. If he does not withdraw it, I will expunge it. I will look at the record. I will look into the record. I will look into the record... *(Interruptions)*

I will look into the record and see it... *(Interruptions)*

SHRI SIKANDER BAKHT: They cannot dictate. We are not going to take it... *(Interruptions)*

---

*Expunged as ordered by the Chair.

उपसभापति: आप बैठ जाइये। (व्यवधान)

Mathur Saheb, please sit down. Please sit down.

Mathur Saheb, nothing is going on record... *(Interruptions)*

Just one minute. Just one minute, please... *(Interruptions)*

Mr. Narayanasamy, please.

I will look into the record and see..

SHRI SIKANDER BAKHT: What?

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will look into the record and see whatever has been written. I say, I will look into the record and see what has gone on record. 1 will check it up myself. If it hurts the sentiments of people...

SHRI SIKANDER BAKHT: What sentiments?... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I do not know. I do not know. I say, I will look at it. **बैठ जाइये। (व्यवधान)** I say, "You sit down." Pleasesit down ...*(Interruptions)* **बैठ जाइये।**

(व्यवधान)

Nothing is going on record ...*(Interruptions)*

Until and unless I see the record, I will not say anything. I will look into the record, and I will give my ruling. I will have to see the record.

Mr. Sikander Bakht, please abide by the ruling of the Chair. Please... *(Interruptions).*

I will look into the record, please... *(Interruptions)***बैठ जाइये। (व्यवधान)** ... *(Interruptions)*

Please sit down... *(Interruptions)***माथुर साहब बैठिये। (व्यवधान)** Please sit down. Please sit down. Please keep quiet.

I, as the presiding officer presiding in this House, have a right. It is not the first time. Many times I have seen the record. Until and unless I see the record. I will not give my ruling now.

I request the Member to confine himself to what happened at Hubli and not to go around here and there... *(Interruptions)* Mr. Sikander Bakht, one minute please. *(Interruptions)* Mr. Sikander Bakht, Chairman Sahib ...*(Interruptions)*

SHRI VIREN J. SHAH: Madam, I would make one submission.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Chairman Sahib has given a limited permission to raise the issue on Hubli and I will permit that.

SHRI VIREN J. SHAH: One sentence, please. Is it not a fact that in the Central Assembly when Gen. Dyer... *(Interruptions)*

SHRI V. NARAYANASAMY: You know that. You know the history. Don't forget it, Mr. Sikander Bakht. *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, the Member should not compare the Rajya Sabha to that House. *(Interruptions)* He has no respect for this House. *(Interruptions)*

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: We have every right to ... *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Shah, please sit down.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, they have no right to insult this House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. I have already said that I will look into the record. It should keep your tempers cool. But I suggest and I am telling you again that the Chairman has given a limited permission to raise the question of Hubli. Please raise it and don't go to other issues. I am not permitting that.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: मैडम, मैंने शुरू में ही कहा हुबली के सिर्फ दो सवाल हैं ...

उपसभापति: सवाल कर दीजिये और बात खत्म कीजिये।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: एक शांतिपूर्ण ढंग से लोग वहां पर इकट्ठे हुए थे। लोगों पर बिना चेतावनी दिये गोली चलाना और दूसरा तिरंगे झंडे, राष्ट्रीय झंडे को न फहराने देना। पहले सवाल पर मैंने यह कहा था कि इस तरह की घटनायें पहले भी हुई हैं।...(व्यवधान)...

उपसभापति: आप उसको मत कहिये, आप अपनी बात कहिये।...(व्यवधान)...

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: उपसभापति महोदया, तिरंगे झंडे को देश में किसी सार्वजनिक जगह पर लगाने के बारे में, मुझे अफसोस है कि परसों या कल यहाँ पर

आप लोगों ने हमारी अजमेंस में यह सवाल उठाया तो आपने कहा कि दो जिम्मेदारियां बी.जे.पी. पर आती हैं। उन्होंने उनको इकट्ठे क्यों किया। यह तो ऐसी ही बात है कि जैसे कह दिया था कि जलियांवाला बाग में लोगों को इकट्ठा क्यों किया, बिल्कुल उस तरह की हिस्ट्री है वहां की...(व्यवधान)...

They are repeating the same history. You are setting the same history yourself. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: You have raised the two points now. Please sit down. *(Interruptions)* Please sit down.

SHRI S. K. T. RAMACHANDRAN (Tamil Nadu): Madam, we cannot understand what he is speaking. This earphone is not working. *(Interruptions)*

श्री जगेश देसाई (महाराष्ट्र): आजादी के संघर्ष में आप कहा थे, जो आज यहां वहां की बात रह रहे हैं?

SHRI S. K. T. RAMACHANDRAN: We know your intentions. You have proposed yourselves. Your intention is to destroy the unity of the country. You want to destroy the integrity of the country. *(Interruptions)*

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: उपसभापति महोदय, ...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: What has happened to the mike system? ...*(Interruptions)*... Let me find out what the problem of the mike is. There is some problem.

श्री जनार्दन यादव (बिहार): माइक के बिना यह हाल है (व्यवधान) अगर माइक होगा तो अस्पताल जाएंगे (व्यवधान)

उपसभापति: मल्होत्रा जी आपने काफी बोल दिया है। (व्यवधान)

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: I have not even started. I will take five minutes.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I have other Members who want to speak.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: मैं जल्दी खत्म करता हूं। उपसभापति महोदया, दूसरा सवाल है। (व्यवधान) बोलने कोई नहीं देता, मुझे शुरू नहीं करने देते (व्यवधान) उपसभापति महोदया, मैं पूछना चाहता हूं राष्ट्रीय ध्वज को 15 अगस्त को लहराना क्या कोई अपराध है? अगर यह अपराध नहीं है तो जो लोग...(व्यवधान) बोलने कोई नहीं देता। आप उनको रोकिये न। (व्यवधान) मैं बोलना शुरू करता हूं तो खड़े हो जाते हैं।

उपसभापति: आप इधर देख कर खत्म कीजिये।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: उपसभापति महोदया, जिन लोगों ने पाकिस्तान का झंडा श्रीनगर में लहराया। उनको तो आपने नहीं पकड़ा, गोली नहीं चलाई। जिन्होंने हिन्दुस्तान का तिरंगा झंडा, राष्ट्रीय ध्वज जलाया, उनको तो आपने नहीं पकड़ा, गोली नहीं चलाई। जिन्होंने 26 जनवरी और 15 अगस्त का बायकाट किया, दिल्ली में जुलूस निकाला, उनके खिलाफ तो आपने कोई कदम नहीं उठाया, उनको नहीं पकड़ा, उनके ऊपर कोई कार्यवाही नहीं की लेकिन जो तिरंगा झंडा लहराते हैं उन पर आप गोलियां चलाते हैं, उनका खून करते हैं, उनका रक्त बहाते हैं और बाद में उनकी वाहवाही में उनकी डिफेंस में यहां खड़े हो कर भाषण देते हैं (व्यवधान)

SHRI S. K. T. RAMACHANDRAN: Madam... *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will allow you. Please sit down.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: मैं यह कहना चाहता हूं कि यहां पर जिन लोगों को आप बातचीत करने का न्योता दे रहे हैं कश्मीर में आप चीफ मिनिस्टर बनाना चाहते हैं और यहां पर तिरंगा झंडा लहराने वालों को (व्यवधान) हम तो यह आशा करते थे (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: I understood.

बात खत्म हो गई।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: मैं दो मिनट में खत्म कर रहा हूं।

SHRI VIREN J. SHAH: What is the problem in listening to the history?... *(Interruptions)*

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: I will take only two minutes.

श्री सिकन्दर बख्त: कश्मीर में पाकिस्तान का झंडा लहराया गया तो कोई (व्यवधान) इतनी बेशर्मी है... (व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY: Madam, you have already given your ruling that he

should confine himself to the Hubli incident. But he is going round the world.

SHRI S.K.T. RAMACHANDRAN: Madam.... *(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Ramachandran, please sit down. I said, "no." Not even once.

आप खत्म कीजिये। (व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: मैं दो मिनट में खत्म कर रहा हूं। उपसभापति महोदया, मैं केवल दो बातें कहना चाहता हूं। मुझे आशा थी कि सारा सदन हुबली में जो हुआ ...(व्यवधान)

उपसभापति: आप दो बातें रिपीट मत कीजिये।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: जिन की वहां पर हत्या हुई, उनका खून भी वैसे ही खून है जैसे आपका सब का है। मुझे आश्चर्य होता है कि पांच आदमी निर्दोष मारे जाएं और उनके बारे में कोई शब्द कहे बिना, यहां पर उल्टा उनके बारे में दूसरी बातें शुरू करना...(व्यवधान)

SHRI MADAN BHATIA (Nominated): You are responsible for it.

श्री एस.एस. अहलुवालिया: घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं (व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: उपसभापति महोदया, यहां पर जान की कोई कीमत नहीं है। (व्यवधान) चाहे कितना भी मुआवजा दे दिया जाए लेकिन किसी की जान वापिस नहीं आती है (व्यवधान) परंतु मैं यह कहना चाहता हूं कि जिन लोगों ने वहां पर बम फेंके, जिन लोगों ने वहां पर हत्याएं कीं, जो दंगे कर रहे थे और वे पुलिस की गोलियों से मारे गए उनको दो लाख रुपये का मुआवजा घोषित किया। सेंट्रल गवर्नमेंट ने बम्बई में कहा कि सबको दो लाख रुपए दिए जाएं। यहां एक लाख रुपये घोषित करते हैं और इसमें भी भेदभाव किया जाता है...(व्यवधान) यह भी शर्म की बात होनी चाहिए। उपसभापति महोदया...(व्यवधान) एक बात कहकर खत्म कर रहा हूं...(व्यवधान) यह सोचने की बात है कि यहां पर अयोध्या की बात आप करते हैं....(व्यवधान) अयोध्या में इसी तरह से गोलियां चलायी गयीं निहत्थे लोगों पर। अयोध्या के बाद हुबली में किया गया है। अगर ये घटनाएं की जाएंगी तो अयोध्या और हुबली के बाद सारा देश अयोध्या और हुबली बनेगा। मैं इस बात पर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं।

† [ ]Transliteration in Arabic Script

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now it is over. *(Interruptions).* Order, please. Let there be order in the House. I have to adjourn the House for lunch. *(Interruptions).*

बैठिए, आप बैठ जाइए।

मौलाना ओबैदुल्ला खान आजमी: आदमियत का खून बहाना चाहते हैं...(व्यवधान)

مولانا عبید اللہ خان اعظمی:.....
آدمیت کا خون بہانا چاہتے ہیں"..مداخلت"

THE DEPUTY CHARIMAN: Please keep quiet. At 1.30 p.m. I have to adjourn the House for lunch. If the House so agrees, we will dispense with the lunch-hour. Okay? *(Interruptions).*

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: अगर आप कोई डिसकस कर रहे हैं तो बात अलग है।

SHRI S. JAIPAL REDDY: I am for dispensing with the lunch-hour. Because this discussion has started, the,whole discussion must be completed before the House adjourns. *(Interruptions)*

SHRI SIKANDER BAKHT: We are not in favour of that.

के बाद। मगर लंच न डिसपेंस किया जाए।

کنٹی نیو کریئے اس کو لنچ اور کے
بعد۔ مگر لنچ نہ ڈسپنس کیا جائے۔

SHRI S. JAIPAL REDDY: I am in favour of dispensing with the lunch-hour. *(Interruption)*-

THE DEPUTY CHAIRMAN: I would take the sense of the House. If the House so agrees, I agree. I am not taking any responsibility. I am only leaving it to Members. *...(Interruptions).* Mathur Saheb many a time *(Interruptions).* Let me not quote what happened in the past. What we have done for the Zero Hour, what we have done for a Special Mention and what we have done for

clarifications on a statement, I have got the whole record with me. If the House so agrees—the House is supreme—my views have no meaning. If the House so agrees, I will abide by it. If the House does not want to go for lunch...*(Interruption).* You may not want it. *(Interruptions).*

SHRI SIKANDER BAKHT: I have a right to say that I do not want. How can you stop me?

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am not stopping you. I did not even stop you when you said whatever you wanted. I cannot stop you from saying that you do not want the lunch-hour. But if the majority in the House is for not having the lunch-hour, you cannot stop them also. *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, are you permitting me as a Member?

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: मैं एक क्लैरीफिकेशन चाहता हूं। क्या यह डिसकशन है? या क्या है ...(व्यवधान)

उपसभापति: कुछ नहीं है, आप बैठिए ...(व्यवधान)

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: डिसकशन ही नहीं है।

उपसभापति: जिस तरीके से आप लोग बोल रहे हैं...(व्यवधान)

Do not try to create any unpleasantness in the House. Sit down. Mr. Raghavji. *(Interruption).* It is not going on record.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: It is not going on record *(Interruption).* My ruling is that. Mr. Sikander Bakht made a special mention. It was the Zero Hour. He should not have spoken for 45 minutes. I allowed him. In the same "prakriya", I am allowing Mr. Raghavji to speak.

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mathur Saheb, please sit down. If you do not allow him to speak, I will call somebody else to speak. *(Interruption).* Mathur Saheb, you are not allowing your own party Member to speak. Let him speak.

श्री जनार्दन यादव: उनको तो बोलने दीजिए, तब आप बोलिएगा।

उपसभापति: उन्हीं के मेम्बर एलाउ नहीं कर रहे हैं। (व्यवधान)

श्री राघवजी (मध्य प्रदेश): उपसभापति महोदया, हुबली में निर्दोष और निहत्थे लोगों का खून बहा है। खून इसलिए बहाया गया है कि वे एक सार्वजनिक स्थान पर राष्ट्रीय झंडा फहराना चाहते थे। आज से दो साल पहले भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जब काश्मीर के लाल चौक पर झंडा फहराने के लिए जा रहे थे। तब केन्द्र की सरकार ने ...(व्यवधान) सरकारी ईनाम दिया ...(व्यवधान) और आखिर लाल चौक पर झंडा फहराने दिया गया।...(व्यवधान) उपसभापति महोदया, एक तरफ तो काश्मीर में जब भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष झंडा फहराने के लिए गए थे तब केन्द्र सरकार ने पूरी मदद की थी। हवाई जहाज दिया था और सरकारी हिफाज़त दी गई थी। दूसरी ओर जब कर्नाटक में राष्ट्रभक्त लोग एक सार्वजनिक स्थान पर झंडा फहराने की कोशिश करने गए तो **। पांच लोग मारे गए हैं और दर्जनों घायल हुए हैं। अंग्रेजों के समय में झंडा फहराने में कई लोग शहीद हुए, यह तो समझ में आता है कि अंग्रेजों का राज था, लेकिन अब तो ऐसा लगता है कि आजादी के बाद भी कर्णाटक में राज कर रहे हैं और आज भी देशभक्तों के ऊपर उसी प्रकार से गोलियों से, लाठियों से प्रहार हो रहा है, सिर्फ इसलिए कि व राष्ट्रीय झंडा फहराने जा रहे हैं। वह सार्वजनिक स्थान है। ...(व्यवधान) वहां पर जनता कोई भी कार्यक्रम कर सकती है। लोग अपने घरों पर झंडा फहराते हैं तो हम सार्वजनिक स्थानों पर झंडा क्यों नहीं फहरा सकते? लेकिन आप किसी हिमायत कर रहे हैं सामने वाले बैंचों पर...(व्यवधान) मजहब की आड़ पर, वहां पर मजहब के नाम पर दुकानें बनाई जा रही हैं, उपसभापति महोदया, दुकानें बनाने की कोशिश की गई है। ...(व्यवधान) वह बड़ी मूल्यवान जगह है और मूल्यवान जगह पर ...(व्यवधान) कोशिश की गई है। यह हमारे मित्र लोग जो हैं इस प्रकार के ...(व्यवधान) लोगों की हिमायत कर रहे हैं।...(व्यवधान) उपसभापति महोदया, क्या हम राष्ट्रीय स्थान पर, एक सार्वजनिक स्थान पर इस तरह दुकान बनाने की अनुमति दें और निहत्थे लोगों को गोलियों से भून दिए जाने दें? उपसभापति**

*Not recorded.

*Expunged as ordered by the choir.

महोदया, क्या औचित्य है कि उस स्थान को कांटों की बाड़ से घेरा गया, कंटीले तार लगाए गए और सेना के जवान बड़ी संख्या में वहां पर लगाए गए? कौन थे (व्यवधान) कौन थे वहां पर जो जिन के लिए सारी व्यवस्था की गई थी? क्या कर्नाटक के मुख्य मंत्री को इस बात की शर्म नहीं आई और इसके बाद वह गर्व के साथ कह रहे हैं कि मैं कल्याण सिंह नहीं हूं, मैं कांग्रेस का मुख्य मंत्री हूं और मैं राष्ट्रीय झंडा फहराने नहीं दे सकता। तो क्या भक्त सिंह और चन्द्रशेखर आजाद वह भी...(व्यवधान) राजनीति के लिए किया जा रहा है (व्यवधान) बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। (व्यवधान) वोटों की राजनीति के पीछे (व्यवधान) इनको देशभक्ति से कोई वास्ता नहीं है। ...(व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now. let me call Jaipal Reddy Ji.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Mr Ahluwalia, you have had your say. Madam, in India, there is so much conflict and contention that anybody, who wishes well, with India should discover, expand and emphasise the areas of accord and the areas of concord. But, we are profoundly shocked and grieved to note that we have a party in this country which is hellbent on discovering, manufacturing areas... *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Please hear *me...(Interruptions)...* You please hear me first.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: जब-जब बी.जे.पी. की सरकार रही एक कम्युनल रायट नहीं हुआ दिल्ली में जहां-कहीं ...(व्यवधान)... एक कम्युनल रायट नहीं हुआ।

SHRI V. NARAYANASAMY: It is very surprising to hear that the. BJP Flag is a National Flag! *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPA*L REDDY: I have a right to be heard... *(Interruptions)*... I have a right to be heard. I know if the BJP comes into power, it will not allow anybody to be heard... *(Interruptions)....* Even now when you are in the Opposition, you are not allowing me to speak. *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaipal Reddy did not disturb anybody. Please sit down... *(Interruptions)..* -

SHRI S. JAIPAL REDDY: I would appeal to my BJP friends... *(Interruptions)*... I would appeal to my BJP friends, through the Leader of the Opposition, to hear *me...(Interruptions)...* I heard him for 45 minutes. I heard him for 45 minutes. Now I would like to be heard...*(Interruptions)...* I heard him for 45 minutes. I would like to be beard. It is my personal appeal to the Leader of the Opposition. *(Interruptions)*

श्री सिकन्दर बख्त: सदर साहिबा, एक मिनट। आप मेहरबानी से सुनिए जयपाल रेड्डी जी को।

†[شری سکندر بخت: صدر صاحبہ ایک منٹ۔ آپ مہربانی سے سنیئے جے پال ریڈی جی کو۔]

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: इन्होंने क्यों नहीं रोका जब इनके आदमी हमको बोलने नहीं दे रहे थे?

श्री सिकन्दर बख्त: एक मिनिट रुको। मेरा सिर्फ यही कहना है कि आप भी मेहरबानी कर वह न कहें जोकि ख्वामखाह प्रोवोकेशन मैनुफेक्चर करता हो ...(व्यवधान)... इस किस्म की बात आप मत कीजिए।

†[شری سکندر بخت: ایک منٹ رکو۔ میرا صرف کہنا یہ ہے کہ آپ بھی مہربانی کر کے وہ نہ کہیں جو کہ خواہ مخواہ پرووکیشن مینوفیکچر کرتا ہو... "مداخلت"... اس قسم کی بات آپ مت کیجئے۔]

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Affzal, please sit down...*(Interruptions)...* I do not want anybody to interrupt him. I allowed Sikander Bakht Saheb to speak without being interrupted. I do not want anybody to interrupt him. ... *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I would like to be heard. I was referring to an attempt, a conscious, sedulous attempt at discovering manufacturing and expanding the areas of disagreement, the areas of disharmony *...(Interruptions)...*

SHRI JAGDISH PRASAD MATHUR: Yes,... *(Interruptions)...*

SHRI S. VIDUTHALAI VIRUMBI (Tamil Nadu): Mathur Saheb, thank you for accepting it... *(Interruptions)...*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, can we have a running debate?... *(Interruptions)...* Mr. J. P. Mathur who has no opportunity to shout at home, should not be allowed to shout at me?... *(Interruptions)...*

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: अगर आप मुझे उसका मौका दे रहे हैं तो धन्यवाद।

†[ ]Tramliteration in Arabic Script

SHRI PRAMOD MAHAJAN (Maharashtra): Jaipal, nobody shouts at home. I think you are an exception ... *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Mathur, please listen to him... *(Interruptions)*... Now let us be serious... *(Interruptions)*... Mr. Afzal, please be serious.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Let me make one thing clear that I do not want to provoke any section of the House, including my BJP friends, but I must give expression to my feelings, feelings of agony, anguish, not of anger. You see, I can appreciate, welcome the love of BJP for National Flag, though I may consider it 'new-found love'. Yet the love for National Flag, though belated, is welcome.

AN HON. MEMBER: Well said *(Interruptions)*

SHRI NARAIN PRASAD GUPTA (Madhya Pradesh): *

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. You did not seek my permission. I am not permitting you. It is not going on record... *(Interruptions)*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I beg of you not to interrupt me. *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: All right. We appreciate. Let him finish. *(Interruptions)*...

SHRI S. JAIPAL REDDY: I beg of you not to interrupt me. My point is this. Madam: National Flag is a thing of universal veneration. It is not only sacred but also sacrosanct. But, I can't but admire the rare political genius of the BJP which can convert the National Flag into a thing of controversy *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him speak. *(Interruptions)*...

SHRI S. JAIPAL REDDY: India is a vast country. *(Interruptions)*...

श्री प्रमोद महाजन: बहुत देर के बाद सुना है यह। बारह बजे से आपने कभी नहीं कहा लेट हिम स्पीक।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes, I allowed. I allowed Mr. Sikander Bakht for 45 minutes. *(Interruptions)*... Please see the record. I don't want to twist the facts in the House. *(Interruptions)*... Whatever is spoken in the House is recorded. *(Interruptions)*... The answer is there and everybody knows it. *(Interruptions)*... You confine your comments to yourself. *(Interruptions)*

SHRI JANARDAN YADAV: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: No, I am not permitting. *(Interruptions)*

SHRI JANARDAN YADAV: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: 1 am not permitting. *(Interruptions)*... I am not permitting. It is not going on record. *(Interruptions)*... Keep quiet, please. *(Interruptions)*...

SHRI S. JAIPAL REDDY: India is a vast country which comprises millions of square kilometres. *(Interruptions)*...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please be serious. *(Interruptions)*... I don't want any comment. Let him finish. *(Interruptions)*... No, it is all right. It may not be unparliamentary but it is uncalled for when a Member is speaking. Not only that, the Member is the leader of his party. It is very impolite to start shouting slogans in the House. *(Interruptions)*...

SHRI S. JAIPAL REDDY: For the benefit of my friends, who are not hearing but speaking, I would like to repeat my sentence. India is a vast country which comprises millions of square kilometres of area. But we have a set of friends who would like to locate such a little, microscopic area where the National Flag also can spark off a conflagration, confrontation and hatred. *(Interruptions)*...

श्रीमती सुषमा स्वराज (हरियाणा): पूरे देश में कौन-कौन सी जगह हैं, जहां राष्ट्रीय ध्वज मुद्दा बना है...(व्यवधान)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: क्या वह हिन्दुस्तान का हिस्सा नहीं है, पाकिस्तान है?...(व्यवधान)...

श्री सिकन्दर बख्त: एक मिनट। मैंने जयपाल जी से यह दरखास्त की है कि हिंदुस्तान बहुत बड़ा है, मगर क्या हिंदुस्तान का कोई चप्पा ऐसा हो सकता है, जहां राष्ट्रीय झंडा न फहराया जाय?

*Not recorded.

شری سکندر بخت: ایک منٹ میں نے جے پال جی سے یہ درخواست کی ہے کہ ہندوستان بہت بڑا ہے مگر کیا ہندوستان کا کوئی چپہ ایسا ہو سکتا ہے جہاں راشٹریہ جھنڈا نہ لہرایا جائے۔

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: जहां पर राष्ट्रीय झंडा नहीं लहराया जा सकता, वह जगह हम ढूढेंगे। ...(व्यवधान)...जहां पर अराष्ट्रीय तत्व होंगे, वह जगह हम ढूढेंगे। (व्यवधान)

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, if the Leader of the Opposition thinks that I should not speak, I will resume my seat. *(Interruptions)* If they think that I should not speak, I will not speak. *(Interruptions)*

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: आप बधाई के पात्र हैं कि आप इस पक्ष के हैं कि कहां झंडा नहीं लहराया जा सकता, उसको आप सुरक्षित कर सकते हैं, लेकिन मैं और मेरी पार्टी इस पक्ष में हैं कि हिन्दुस्तान का कोई चप्पा हम नहीं छोड़ेंगे जहां झंडा नहीं लहराया जा सकता हो। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: माइक्रोस्कोप से देखकर एक-एक इंच भूमि पर राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे।...(व्यवधान)... और राष्ट्रीय ध्वज लहराकर आएंगे। ...(व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let Mr. Jaipal Reddy finish what ever he wants to say. *(Interruptions)*

बैठ जाइए, बैठ जाइए। अग्रवाल साहब, बैठिए न। उनकी बात सुनने की कोशिश करिए।

श्रीमती सुषमा स्वराज: क्या कोशिश करें?

उपसभापति: जो बोल रहे हैं उनकी बात सुनिए। ...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: झंडा नहीं फहराया जाएगा, क्यों नहीं फहराया जाएगा? ...(व्यवधान)...

उपसभापति: आप बैठिए, बैठ जाइए। प्लीज़ सिट डाउन। ...(व्यवधान)...

When I identify you, you can speak, not now. *(Interruptions)*.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, if they don't want to hear me, I will not speak. I will go out of the House. *(Interruptions)*

श्रीमती सुषमा स्वराज: यह नहीं सुनेंगे। ...(व्यवधान)...

श्री शंकर दयाल सिंह: आप लोग बोल रहे थे तो जयपाल जी सुन रहे थे ...(व्यवधान)...

श्री जनार्दन यादव: वह टोक रहे थे।...(व्यवधान)...

श्री शंकर दयाल सिंह: जयपाल जी की आदत यह नहीं है ...(व्यवधान)... आपसे अनुरोध है कि जयपाल जी बोल रहे हैं आप उसे सुन लीजिए, हमारी यही आपसे प्रार्थना है। ...(व्यवधान)...

THE DEPUTY CHAIRMAN: Nothing is going on record. Whatever is being said, is not going on record. Let nothing be recorded. *(Interruptions)*

श्रीमती सुषमा स्वराज: *

श्री शंकर दयाल सिंह: *

श्री जनार्दन यादव: *

श्रीमती सुषमा स्वराज: *

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: *

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down. *(Interruptions).* Mathurji, please sit down. *(Interruptions).* Please sit down *(Interruptions).* You people were away. Now, the Opposition has come back. There is a discussion on the subject which is hurting everybody. If Mr. Jaipal Reddy is saying something, listen to him. I am quiet sure he is not going to speak which you are going to like and you may not speak what he likes. But, democracy means that you should listen to him. If you dont want to ...... *(Interruptions).* If you didn' t want to listen to him, he offered to walk out ....*(Interruptions).* If you want him to walk out, let him walk out....*(Interruptions).* All right, then, you keep quiet.... *(Interruptions).*

SHRI PRAMOD MAHAJAN. We are willing to listen.... *(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN: I tell you, the most impolite thing is that when I am trying to say something, you people don't even listen to me. What can I expect from you? *Not recorded.

†[]Transliteration in Arabic Script

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, my good friend, Prof. Malhotra, was referring to the incidents of burning of the National flag in Punjab .....*(Interruptions)* ..... in Kashmir and also to the hoisting of the Pakistani flag in Kashmir. I do not know how these incidents can be compared with that.....*(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Order, order.... .*(Interruptions).*

जरा सुनने की कोई हिम्मत रखनी चाहिए। डेमोक्रेसी में सभी को अपनी बात कहने का अधिकार है। अभी सुन लीजिए, बाद में आप भी कह लीजिएगा.....(व्यवधान)

श्री प्रमोद महाजन: जयपाल जी समझे नहीं कि वह क्या बोल रहे थे।

THE DEPUTY CHAIRMAN: All right, you are more intelligent when Mr. Jaipal Reddy. But, still, he is a Member and he has equal right to speak.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, I do not know when our friends wanted themselves to be compared with those who wanted to hoist the Pakistani flag and who wanted to bum our national flag.... *(Interruptions).*

SHRI SIKANDER BAKHT: He is talking about the inaction of the Government ...*(Interruptions).*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I did not like the way ...*(Interruptions).* Please hear me. I did not like one word of Mr. Sikander Bakht, but I heard him. I did not like one formulation of Sikander Bakht, but I heard him. Even if he did not like my formulations.....*(Interruptions)*..... they may be perverse, they may be preposterous; I can supply you phraseology to describe my formulations. But the fact remains that I am entitled to my formulations. I am entitled to articulate my formulations. Madam, Mr. Sikander Bakht had a meeting with the Prime Minister. Whenever our BJP leaders do something, whether it is demolition of the Babri Masjid or something in Hubli, they always have a very interesting, significant and inscrutable meeting with the Prime Minister ...*(Interruptions).* I do not know what transpired .... *(Interruptions).*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PERSONNEL, PUBLIC GRIVANCES AND PENSIONS AND THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRIMATI MARGARET ALVA): Don't keep misleading the House.... *(Interruptions).*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I do not know what transpired between the Congress (I) Leader, Mr. P. V. Narasimha Rao, and the leader of the BJP, Mr. Sikander Bakht. A lot of things have transpired which have been beyond the ken of our knowledge and the ken of our comprehension. And thanks to the deft handling by the Congress (I), the BJP has been able to convert Hubli also a thing of controversy. The BJP must be grateful to the Congress (I). Why they are not, I do not understand. Now, they referred to those people who were killed in the firing. Our hearts go out in sympathy for the families of those who died, in whatever form... *(Interruptions).*

SHRIMATI SUSHMA SWARAJ: They were killed.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Yes. But, what does one say of those who instigated the people to create such incidents? *(Interruptions).*

SOME HON. MEMBERS: Dismiss Moily.... *(Interruptions).*

SHRI S. JAIPAL REDDY: 15th of August is the most sacred day for India. On that day, we have flags to hoist in every house, in every place. So, where is the need for people to descend on a particular place to hoist a flag? Again, any place of worship, whether it is *mandir* or masjid, gurdwara or church... *(Interruptions)*.... Please hear me. Every place of worship is sacred, even for me. Though because I am a non-believer I consider every place of worship scrosanct. So is the national flag. But, is there political genius in converting a place of worship and hoisting of our national flag into Objects of a controversy?..*(Interruptions)*.... I would like to tell you that no party ...*(Interruptions)* ...Please hear me. I would like to tell you ... *(Interruptions)*... I am not from Kamataka. I am not from Karnataka and I am not aware of the details. I am concerned... *(Interruptions)* ... I am concerned with the broad principle.

I would like to tell ... *(Interruptions)* ... I would like to tell you with all the emphasis at my command...

श्रीमती सुषमा स्वराज: ...(व्यवधान) जयपाल रेड्डी सदन को गुमराह कर रहे हैं ...(व्यवधान) उनको ऐसा कोई अधिकार नही है। बताइए छः महीने पहले ...(व्यवधान) प्लेस आफ वर्शिप में जनसभा की थी उन्होंने। हुबली पर ...(व्यवधान)

SHRI S. JAIPAL REDDY: 1 would like to tell you with all the emphasis at my command *(Interruptions)...*

श्री जनार्दन यादव: वह वर्शिप प्लेस नहीं है। आप इसको वापिस लीजिए। वह पब्लिक प्लेस है।....(व्यवधान) वह वर्सिप प्लेस नही है। गलत मत बोलिए.....(व्यवधान) पब्लिक प्लेस पर राष्ट्रीय झंडा फहराने का सबको अधिकार है.....(व्यवधान) आप गलत बात मत बोलिए। हाई कोर्ट के जजमेंट को ठुकरा मत दीजिए.....(व्यवधान) वह पब्लिक प्लेस है।

SHRI S. JAIPAL REDDY: I did not call it a place of worship. I would like to clarify that I did not call it a place of worship .... *(Interruptions)* ....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him finish.

SHRI MOHAMMED AFZAL *alias* MEEM AFZAL: The matter is in the Supreme Court.... *(Interruptions)....*

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam, how can I speak?

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल: यह क्या कोर्ट की इज्जत करेंगे? अयोध्या में इन्होंने ऐसे ही कोर्ट की इज्जत की । आज यह कोर्ट की बात कर रहे हैं.....(व्यवधान)

شری محمد افضل عرف م۔ افضل: یہ کیا کورٹ کی عزت کریں گے۔ ایودھیا میں انہوں نے ایسے ہی کورٹ کی عزت کی تھی۔ آج یہ کورٹ کی بات کر رہے ہیں..."مداخلت"...

SHRI S. JAIPAL REDDY: I did not describe that as place of worship. I meant to say that place of worship and the national flag should be sacrosant to all of os and they should not be used for promoting hatred and for reaping electoral harvest. That is the point I am trying to say. What I am trying to say is that no party which shows... *(Interruptions)...*

SYED SIBTEY RAZI: He is being interrupted on every sentence. It is the right of the hon. Member to say what he wants to say .... *(Interruptions)....*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please sit down.... *(Interruptions)....* I am not permitting anything. Please sit down... *(Interruptions)...* Please sit down. I am sorry... *(Interruptions)...* I am very sorry I am trying to get the matter put on record. I want to have on record everybody's opinion, whoever's opinion it is. Now, at least have the courtesy. to let him speak. Then I have to call other people. This is not the way. Please ask your Members... *(Interruptions)...* You are the one member I have identified today, who has disturbed when I was on my legs ... *(Interruptions)...* I am very sorry... *(Interruptions)...*

SHRI S. JAIPAL REDDY: I don't want to speak further, Madam. I would like to... *(Interruptions)...*

उपसभापति: जयपाल रेड्डी जी, आप कन्कलूड कीजिए।

SHRI S. JAIPAL REDDY: Yes, I would like to conclude. I would like to appeal to BJP... *(Interruptions)..* .I would like to appeal to the BJP sincerely and fervently not to emphasise the areas of division. You are not only doing disservice to the country, you will be doing disservice to yourself as a party... *(Interruptions)...*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Hanumanthappa, please speak ...*(Interruptions)...* Mr. Hanumanthappa ... *(Interruptions)...*

श्री प्रमोद महाजन: जनता दल के लीडर है और पार्टी के लीडर हैं। इनको कोई सज़ा नहीं देगा।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please, order! Mr. Hanumanthappa ... *(Interruptions)...*

ONE MEMBER: Madam, let us have lunch hour now.

†[ ] Transliteration in Arabic Script.

THE DEPUTY CHAIRMAN: No lunch hour. The House agreed that they are not going to have the lunch hour.....*(Interruptions)*.....

THE DEPUTY CHAIRMAN: आप बैठ जाइये।.....*(Interruptions)*.....Sit down. You behave in the House and forget about what happened just now. Mr. Hanumanthappaji, please speak.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam Deputy Chairman, I stand with a heavy heart.....*(Interruptions)*.....

THE DEPUTY CHAIRMAN: Please listen.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Unnecessarily, my State has been described as if it is *antinational*. Karnataka State today has been.....*(Interruptions)*.....

उपसभापति: आप ज़रा चुप रहेंगे, सुनने देंगे मुझे वे क्या कह रहे हैं? (व्यवधान) आपको नहीं सुनना है तो आप जा सकते हैं।

श्री जनार्दन यादव: मैडम, हम को भी सुनना है।

उपसभापति: तो खामोश रहिए।

.....*(Interruptions)*.....

SHRI SIKANDER BAKHT: Madam, please ask him to come to the front bench.

उपसभापति: आप आगे आ जाइए हनुमनतप्पा जी।

श्री जनार्दन यादव: इनके लिए छोटा वाला माइक चाहिए।

उपसभापति: आपके लिए तो मुझे माइक बंद ही कराना पड़ेगा।

श्री हनुमनतप्पा: मैडम बहुत दुख के साथ मैं यह बात करना चाहता हूं। अभी तक जो लोगों ने तकरीर दी है, जो भाषण दिया है उन्होंने यह पिक्चर यही दी है कि Karnataka is in *antinational State*. I am very sorry.

बहुत दुख के साथ यह बात मैं करना चाहता हूं।.....*(Interruptions.)*.....

THE DEPUTY CHAIRMAN: I ask the hon. Member, if he cannot keep quiet, I will have to request him to please withdraw. But you cannot keep disturbing all the time sitting from your seat. This is not proper. Mr. Hanumanthappa did not interrupt anybody. So, please have courtesy for him.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: जितने लोगों ने सिकन्दर बख्त साहब को इंटरप्ट किया था, उनमें से किसी को आपने नेम नहीं किया है।

THE DEPUTY CHAIRMAN: सबको मैं नेम करूंगी। बैठिए।

Now, you sit down. Please . I would be very happy if you don't have टिप्पणी on the Chair.

.....*(Interruptions)*.....

आप चुपचाप बैठे रहिए। मेहरबानी करके खामोश बैठिए तो बेहतर रहेगा।

श्री सिकन्दर बख्त: सबके लिए होतो ज्यादा अच्छा है।

†شری سکندر بخت۔ سب کے لئے ہو

تو زیادہ اچھا ہے۔

उपसभापति: सबके लिए कह रही हूं, सिकन्दर बख्त साहब। (व्यवधान) आप बैठिए।.....*(Interruptions)*.....Now, please keep quiet. Mr. Hariprasad, please keep quiet. Please.....I request everybody to keep quiet. If anybody speaks without my permission, I am going to name the person, I am telling you.....*(Interruptions)*.....

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, I only request, because of my throat infection I cannot shout. I seek the indulgence of my friends. As I said, I stand with heavy heart that unnecessarily Karnataka State has been painted as an antinational State in all the speeches. I don't know, how many of the friends who have spoken about the national flag and moily's indifference in not hoisting the flag, etc., know the history of Karnataka's freedom movement. I don't know whether they know the name of Surupur.....*(Interruptions)*.....

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Nobody has said so.....*(Interruptions)*.....

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Please sit down, please sit down .....*(Interruptions)*.....Time and again, every Member who spoke from BJP has asked for the dismissal of Moily Government. They said that..... Mr. Pramod Mahajan, why don't you please sit down?

†[ ]Transliteration in Arabic Script

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: आप गला ऊंचा कर रहे हैं।

श्री एच. हनुमनतप्पा: गला ऊंचा करना पड़ता है। मल्होत्रा जी से बात करने के लिए गला ऊंचा करना पड़ता है।

Every Member has mentioned that Moily should be dismissed because he has insulted the national flag. That is where 1 pick up the thread. Don't teach me how to sit in Parliament. I have already spent 4 years .....*(Interruptions)* ..... Yes, I do not know how many of these people know the name of Surpur village, isur village, Vidurashwattha village, Tornur village and Gauramma

and Siddhamma.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: And such of those people who laid their lives for the nation in the nationl movement.

.....*(Interruptions)* .....

बैठिए, बैठिए। मैं बताता हूं। कितने लोग उनकी बिरादरी में हैं, मुझे नहीं मालूम।

श्री जनार्दन यादव: आपको कैसे मालूम होगा जब आप वहां थे ही नहीं।

श्री एच. हनुमनतप्पा: ठीक है, आपने जो हिस्टरी उल्टी करके पढ़ी है, वह मैंने सीधी करके पढ़ी है। **(व्यवधान)**

श्री कृष्ण लाल शर्मा: मैडम, आपने कहा हुबली में.....**(व्यवधान)**

SHRI H. HNUMANTHAPPA: Please sit down, gentleman.

THE DEPUTY CHAIRMAN: The whole troubled started with that gentleman ..... *(Interruptions)* .....

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Fine. fine, if Mr. K.L. Sharma's party has confined it only to Hubli, I will not traverse beyond Hubli. Let him stand up and put his hand on his chest and say. Mr. Sharma, please stand up and say you will not traverse beyond Hubli, and then I will confine myself to Hubli and Kamataka. Sitting in a glass-house don't throw stones.....*(Interruptions)*....

2.00 P.M.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, there is another irony today. We have been asked to learn patriotism from those people, The friends of those people, who did not even hesitate to kill Mahatma Gandhi, the Father of the Nation, who fought for our freedom who is the first among the freedom fighters .....*(Interruptions)* .....

श्री ओ. पी. कोहली (दिल्ली): इसका फैसला आप नहीं करेंगे इसका फैसला अदालत ने किया है। आप फैसला करने वाले कौन होते हैं? **(व्यवधान)**

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: आप गलत बयानी कर रहे हैं। महोदय, आपकी अनुमति से पूछना चाहता हूं कि कोर्ट का फैसला क्या है? **(व्यवधान)**

उपसभापति: हनुमनतप्पा जी, अगर हुबली पर बोलेंगे तो ठीक है। इसी पर कन्फाइन करिये।.....**(व्यवधान)**

SHRI K.R. MALKANI (Delhi): I appeal to the Chair to ask the Member to withdraw his words and apologise to the House.

THE DEPUTY CHAIRMAN: I will look at the record. I will see the record. Now, please keep quiet.

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: इनको इसका जवाब देना होगा। यह गलत बयानी कर रहे हैं। **(व्यवधान)** ये क्या जानते हैं महात्मा गांधी के बारे में **(व्यवधान)**

SHRI H. HANUMANTHAPPA: if it does not apply to them why do they stand up? Let them keep quiet..... *(Interruptions)*

SHRI K.R. MALKANI: Everytime he gets up, he talks like this. There is a limit ..... *(Interruptions)* .....I am addressing the Chair..... *(Interruptions)*

SYED SIBTEY RAZI: Madam, this is very unfair. The Member identified is on his legs. And he has a right to speak. ..... *(Interruptions).*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Let him speak.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, hoisting the National Flag.....*(Interruptions)*

उपसभापति: आप जरा चुप रहिये, सुनिये।

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, even the people of Karnataka also respect the hoisting of the National Flag. And

we have hoised the National Flag in every nook and corner. But why should people come from Delhi and other places to hoist the National Flag as though the Kamataka people are not nationalists? *(Interruptions)*

SYED SIBTEY RAZI: Madam, this is very unfair. We have tolerated enough. 1 request the Leader of the Opposition to hold his Members.

उपसभापति: अग्रवाल साहब, आप बैठिये।

SYED SIBTEY RAZI: This is our right to speak. Everytime they are standing up. That is not fair. *{Interruptions)*

SHRIMATI MARGARET ALVA: What is this? Why do so many Members stand up like that? *(Interruptions)*

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Salim, will you please sit down? *(Interruptions.)* Please sit down and don't interrupt.

श्री हेच. अनुमनतप्पा: नेशनल फ्लैग होइस्ट करने के लिये कर्नाटक में, हुबली में लोगों को दिल्ली से, बाहर से आने की जरूरत नही थी। सिकन्दर बख्त साहब को यहां से वहां तक जाने की जरुरत नही थी।....(व्यवधान)....

[The Vice-Chairman (Shri V. Narayanasamy *in the Chair]*

श्री हेच॰ हनुमनतप्पा : मैं आपको बाद में मौका दूंगा। (व्यवधान)....

HE VICE-CHAIRMAN: Agarwalji, kindly don't interrupt the hon. Member. Kindly take your seat. You allow the hon. Member to make his point. You have already made your point. Kindly take your seat Allow the hon. Member to speak.

THE H. HANUMANTHPPA: Sir, actually what provoked it is the publicity that it gained and the people coming from every nook and coener to Hubli in the name of hoisting the National Flag. What was the necessity? There are people in Hubli. They are patriots. They are the citizens of India. They know abut patriotism? They will hoist the National Flag. We never wanted Sikander Bakhtji to come all the way from Delhi to hoist the National Flag in Hubli.

SHRI NARAIN PRASAD GUPTA : what waw wrong with that? *(Interruptions)*

श्री हेच॰ हनुमनतप्पा : एक मिनट।

شری ہنومنتپا: ایک منٹ۔

SHRI H. HANUMANTHAPPA : Before going further...

SHRI SIKANDER BAKHT : Will you please yield for just a second? You probably did not hear me when I said that I had sent my people to the Anjuman-e-Islami people, reguseting them, "you hoist the Flag, we will keep away."

SYED

आप शहर के कोतवाल है? क्या है?

आप हिन्दुस्तान के सारे लोगों को मारते रहेंगे, मरवाते रहेंगे। आप क्या है यह बताइये।

شری سید سبط رضی، آپ شہر کے کوتوال ہیں؟ کیا ہیں؟ آپ ہندوستان کے سارے لوگوں کو مارتے رہیں گے، مرواتے رہیں گے۔ آپ کیا ہیں، یہ بتلائیے۔

श्री सिकन्दर बख्त : मैं कौन हूं यह बता सकता हूं। मैंने ...(व्यवधान)... बाहर निकलो।

شری سکندر بخت: میں کون ہوں یہ بتا سکتا ہوں۔ میں نے ...مداخلت... باہر نکلو۔

SITBEY RAZI : Who are you?

SYED SIBTEY RAZI : It is very sad. You are not permitting him to speak. ...*(Interruptions)*...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V.NARAYANASAMY): Mr. Sibtey Razi, kindly take your seat. ...*(Interruptions)*...

सैयद सिबते रजी: आप क्या हो? लीडर आफ अपोजीशन हो, शर्म नहीं आती है।

سیّد سبط رضی، آپ کیا ہو۔ لیڈر آف اپوزیشن ہو، شرم نہیں آتی ہے۔

† [ ]Translitcration in Arabic Script

एक माननीय सदस्य : आपकी तरह* नहीं है।

सैयद सिब्ते : ज्यादा* मत करो। ...(व्यवधान)... अपोजीशन लीडर ...(व्यवधान)...

سید سبط رضی: زیادہ * مت کرو
...''مداخلت'' ... اپوزیشن لیڈر ... ''مداخلت''...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V.NARAYANASAMY): Mr. Sibtey Razi, kindly take your seat.

सैयद सिब्ते रज़ी: अपनी हैसियत को समझो ...(व्यवधान)

سید سبط رضی: اپنی حیثیت کو سمجھو ... مداخلت...

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): अग्रवाल जी बैठिये। आप बैठिये.....(व्यवधान) बैठ जाइये। आप भी बैठिये। Kindly take your seat. ......*{interruptions)*........ Let us conduct the proceedings in an orderly manner. ......*(Interruptions)*........

SYED SIBTEY RAZI: Mr. Vice-Chairman, Sir, I am very sorry that Mr. Sikander Bakht who occupies a very responsible position in this House as the leader of the Opposition says: "Don't say anything here: come outside What is the meaning of it?....... *(Interruptions)*........How does he says that

श्री मोहम्मद सलीम: यह बुजुर्गों का सदन है.....(व्यवधान)

شری محمد سلیم: یہ بزرگوں کا سدن ہے ... مداخلت...

श्री सिकन्दर बख्त: उन्होंने कहा क्या कर लेगे। मैंने कहा कि मैं यहां कुछ नहीं कर सकता हूं।.....(व्यवधान)

شری سکندر بخت: انہوں نے کہا کیا کر
لوگے۔ میں نے کہا کہ میں یہاں کچھ نہیں کر سکتا ہوں...

† [ ]Transliteration in Arabic Script
* Expunged as ordered by the Chair

SYED SIBTEY RAZI: I express my strong reservation against the statement made by Mr. Sikander Bakht. He must behave properly. He must behave befitting his position as the Leader of the Opposition. He must behave as an elderly Leader. He must behave as the senior leader of the House. He must behave properly as a Member of this dignified House ....*(Interruptions)*........All of you do not know how to behave and how to speak in the House.

श्री चतुरानन मिश्र उपसभाध्यक्ष महोदय, मुझे अर्ज यह करना था आपसे कि हम लोग सभी यहां माननीय सदस्य कहे जाते हैं। यहां तुम कहें और कोई किसी को* कहे .....(व्यवधान) आप भी तुम कहते हो, वह भी तुम कहें यह कोई तरीका नहीं है। उन्होंने भी* कहा, इसके बाद आपने भी तुम कहा, हमने दोनों तरफ से सुना है। यह कोई तरीका है? हम लोग महसूस को रिड्यूज कर देंगे बाजार की तरह। आखिर कौन इस रूल्स की मर्यादा रखेगा?.....(व्यवधान) अगर एक तरफ कुछ अशोभनीय कहे भी तो दूसरे लोग उठ कर कहे ऐसा नहीं कहना चाहिये। यह नहीं कि तुम ने तुम कहा, इसलिए हम भी तुम कहेंगे। फिर कहते हैं कि हम दूसरी जगह देखेंगे.....(व्यवधान) हम यह कह रहे हैं कि इस सदन की मर्यादा हमारे और आपके हाथ में है। इसलिए कम से कम ऐसा मत कोजिये। इसलिये दूसरे की बात सुन लीजिये। यह क्या हो रहा है।.....(व्यवधान)

DR. BIPLAB DASGUPTA (West Bengal): I would make an appeal to both sides of the House. Statements have been made by two B.J.P, friends. Some discussion has started. Now, may be, on each and every sentence, we may have objections to take. But please listen to what the others say. We would also like to have an opportunity to speak. ....*(Interruptions)*.......

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: You were the persons who disturbed us.

DR. BIPLB DASGUPTA: We kept guiet. ....*(Interruptions)*.......

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA: You were the persons. ....*(Interruptions)*

DR. BIPLB DASGUPTA: Mr. Sikander Bakht took forty-five minutes. My appeal to all of you is, let us use the rest of the time in

such a way that we can finish this discussion at 2.30.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Mr. Vice-Chairman, Sir, before going further, let me say that the B.J.P, having lost in the North wants to make a place in Karnataka. For that purpose, if they follow the same methods as they had done in the past, I think they are in for a greater disappointment. Let me say this beforegoing further.

यहां की दाल वहां नहीं गलेगी।

वह दाल नहीं गलेगी, यह चेतावनी दे कर के मैं आगे जाना चाहता हूं।

Sir, what happened? They objected. They said: "Why do you compare it with Ayodhya?". ..... *Interruptions*.....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Please do not interrupt the hon. Member when he is speaking.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Mr. Vice-Chairman, I would not speak anything unparliamentary. But I have got every right to say certain things which.may be unpalatable to my friends over there.....*(Interruptions)*..... I am coming to Hubli. I am very much on Hubli. Don'tworry.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: I have everyright to say

आप हुबली क्यों गये? इसका कारण मैंने बताया है। यह दाल जो ले कर आप गये हैं, हमारे पानी में नहीं गलेगी।

श्री रामदास अग्रवाल: अगले इलेक्शन में पता लग जाएगा। .....(व्यवधान)

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Sir, actually, what was Ayodhya?

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: आपने कोई ठेका नहीं लिया है.....(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Sikander Bakhtji, kindly advise your Members not to interrupt..... *(Interruptions)*.....

आप गलाइये, हम कहते हैं कि नहीं गलेगी। आप बोलो, मैं गलाऊंगा क्यों चिल्लाते हो? चिल्लाने की क्या बात है? अगर नहीं गलेगी तो गलाओ।

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Sir, actually, the point is, it is a disputed area, and matters are in the court, in both the cases. Somebody asked, what is the relationship between Ayodhya and Hubli? Ayodhya was also a disputed place, the matter was in the court, there were two contesting parties, and that is the story. What is Hubli? It is the idgah maidan, socalled or whatever it is. It is a disputed area, the matter is in the court, and there are two contesting parties. Thai is what Mr. Jaipal Reddy has said.

श्री जनार्दन यादव: उत्तर दक्षिण पर मत बात करिए।

SHRI H. HANUMANTHAPPA. I am not prepared to answer any of your points.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Mr. Vice-Chairman, three BJP leaders spoke in a row. To the best of my knowledge, Sikander Bakhtiji spoke for 45 minutes, with minimum interference.

SHRI SIKANDER BAKHT: Not 45 minutes.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Forty or 30 minutes, whatever it is, with minimum interference. After they spoke, every sentence uttered by anybody has been interferred with. Is this the way?

श्री राजूभाई प. परमार: उनको बोलने दें तो फिर बताएंगे।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): I request hon. members, let the proceedings be orderly. Everybody has to participate. Kindly cooperate with the Chair

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Sir, I was just narrating, just like Malhotraji was saying.two masalas. Actually, the story is, the idgah maidan is a disputed area. There are two contending parties and the matter is in the court. That is how I took the name of Mr. Jaipal Reddy. The ingenuity of these persons or people or friends is to find only such areas to step in and take one side. All right, you are a national party and you consider yourself as an alternative party. Fine! You have got every right to come up—we have no objection. But why do you take one side? you be an arbitrator, call both the parties and understand what the thing is. If you can settle it—if you are capable of it—be an arbitrator, be an elderly man, be a leader, be a national party, be a national leader, but don't take one side and act. That is where you come down in the esteem of the

public. This idgah maidan, as I told you, is a disputed area. There are contending parties. The matter has gone to the court, and it has become sensitive also, because two different communities are involved in this. It is a sensitive issue. Why do you *badhkao,* why do you instigate, why do you incite such things and why do you select only such areas? This is our objection. Mr. Jaipal Reddy raised it and I am also saying it.

In Karnataka there are people—good people, intelligent people, people with experience and sacrifice—and they can settle this issue. After it has started, it was your first visit. Please remember, when you started your *morcha* from Kanyakumari to Kashmir, for hoisting the national flag at Srinagar, what happened. Now this has added fuel to the fire. Till you went there, it was only a disputed site. Interested parties were going before the court and fighting it out in the court. But you don't even respect the court. You filed some affidavit or something in the Supreme Court, and acted quite the reverse outside. And you want to give us lessons and sermons! This is the ugliest thing. You do not respect even the court. The matter is in the court. Even an ordinary villager who fights for a bit of land, when the matter goes to court, waits. He goes to the court with his affidavits and supporting documents etc. he will wait for the judgement of the court. Here the matter is in the court. There are contending parties. Unfortuntely, it has become a sensitive issue between the two communities. Why do you pick up only such areas? This is our question. You are adding the national flag to it, and you are painting Karnataka as if it is against the national flag and national interests and as if it is anti-national. I am so sorry.

Sikander Bakhtji asked, "How can anybody stop hoisting of the national flag at any public place on August 15?" Who has stopped you? First of all, this is not a public place. Why don't you understand this? At least, as Members of Parliament you should understand this. You are the law-makers. You can distinguish amongst a public place, a private place and a disputed place. Here is a disputed place. Once it becomes a disputed place between the contending parties, it ceases to be public place. It may be vacant and it may be available for every child to play on it, but, in legal sense, it ceases to be a public place. If our friends do not have this much of legal sense, I do not know what I should say.

Taking this issue, you are saying that Mr. Moily and the Government of Karnataka are thwarting flag-hoisting at a public place and that it is an anti-national activity. We should be responsible when we are speaking in Parlaiment because the whole country is watching us, how responsible we are and what we are talking about.

So, this is about the case of the idgah. Let them put their hands on their hearts. Is there an iota of justification in organising this and in bringing people from outside? Whether one is Sikander Bakhtji or Uma Bharati, whoever they may be, why should they go all the way to a disputed place to hoist the flag?

If I say that this a only to boil your *dal* there, am I wrong? Am I wrong if I say that you have taken your *dal* to boil there? You have public places in your area. You are very much right. As an elected representative, you should be in your place to hoist the national flag on August 15 and to advice your people to be patriotic etc. etc. Do you have to go all the way from Delhi, Punjab, Assam, Madhya Pradesh and Rajasthan to Kamataka to give patriotic lessons to people there? No, we do not require them. That is why I gave the names of half-a-dozen people of Karnataka who sacrified everything for the nation, for the freedom of the country. We do not want them to give us lessons in patriotism.

This is a disputed place. It is not a public place. The BJP has no right to interfere in it. It has no right to go there and to take one side there. It has no right to say, with the national flag in its hand, that it will hoist it there. This is number one.

Actually, my heart goes out to all those people, innocent people who have been killed. In every movement and in every agitation, this is what happens. So, the responsibility lies with the leaders who start such movements, who start such agitations, who start such congregations. The leaders will escape. The organisers will escape. The connected people will escape, but innocent people will die. So,

here it is the responsibility of the political leaders or the agitators or the organisers, whoever they are. Only a person who is capable of containing the crowd, is fit to organise such things. Time and again you have proved your inability to contain the crowd.

What has happened in Hubli is unfortunate, but, what are the reasons? I do not know how many of you know where the Idgah maidan is, where Desphande Nagar is, what connection is there between them, what the topography is and what the map is. if I am wrong, you correct me. Roads from Deshpande Nagar, by the side of the railway line there is Deshpande Nagar. A number of buses were stopped across the railway line. If I am wrong, I give a challenge to correct me. Buses came from all over from Bidar, from Gulbarga from Belgaum, from Bijapur, from Mysore, from Mandya, from Coorg bases came. Why did they come? Have they no business to hoist their own flags in their own places? Why were these people to come and where did they assembles? It was a curfew-bound area. Did these leaders not know it? There they assembled. You bring the people from outside, throughout Kamataka, not only from Delhi and elsewhere and you congregate. What was their motive? What was in their hands? Javelins! Were they peaceful for *Vijaya Utsav?* I do not know. How javelins are connected to it? Are stones and javelins the things to be used for your *Vijaya Utsav?* What did you do with the javelins that you were having? There is a small lane from deshpande Nagar which leads directly to Idgah Maidan. A handful of police people were watching in that lane. When the crowd was more, all eyes set on them. And your javelins acted, your stones acted, on the police people just to clear that lane, injure the people and rush into the area. This is where provocation started. Otherwise there was no provocation. I certainly agree that the killing was not at Idgah Maidan at all, but at a road to Idgah Maidan. There are so many roads and the people have come from all over the State in the buses with a purpose. Of cource, everywhere they have tried to say — you know the names — from Coorg, from Suratkal, etc. — they had been prevented. If you say you have hoisted and they say you have not hoisted, I am not coming to that point, but you brought the people. You wanted to vacate the lane where the police was watching. The police was a handful in number and this was an unruly crowd with javelins and arms in hands. That is where the confrontation started. The police did not fire all of a sudden. Only the firing part is being told here. No, first they resorted to lathi-charge and teargas. They even fired the rubber bullets. When these things could not control, as a last resort, in self-defence they opened the fire. Yes, Sikander Bakhtji quoted from the *Indian Express.* There is a different opinion. Yes, Sikander Bakht Ji says one view that it is all a crowd under control. Hanumanthappa takes a different view. Here is a retired DIG. Each officer would take his own view saying mat he would have controlled them if was given the task. He acted foolishly. There is another police officer who has said this. There can be a different perception in understanding and controlling the matters. But the man on the spot, who is in charge, maybe he was wrong. I do not know he is perfect, but, at that moment of time, when there is a confrontation between a huge crowd organised for the purpose and a handful of policemen who are there to protect that lane, they stopped this crowd from entering into the Idgah Maidan, the man on the spot is the judge at that time. So, he has acted.

Let me tell you, there was a crowd of 3000. If it was an indiscriminating firing, then, all the 3000 people would have been killed.

श्रीमती सुषमा स्वराज: सारे मार दिए होते। ...(व्यवधान)...

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Whether it was a discriminate firing or an indiscriminatory firing, I am not justifying it. I have already mentioned that it is an unfortunate incident. I am not defending the fellow who had fired. I am just mentioning here that it is not an indiscriminate firing which you are trying to paint. If it was an indiscriminatory firing, then, thousands of people who were present would have been lolled.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: आपका मतलब यह है कि इनडिसक्रिमिनेट नहीं हुआ। जानबूझकर गोली चलाई। ...(व्यवधान)

श्री हेच. हनुमनतप्पा: आप देखिए। बाहर जाते हैं। भीतर आते हैं।...(व्यवधान)...

श्रीमती सुषमा स्वराज: इनडिसक्रिमिनेट से मतलब है कम से कम हजार तो मरना ही चाहिए। केवल पांच मरे।...(व्यवधान)...

SHRI H. HANUMANTHAPPA: You cannot understand ray speech, sit down.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): You have to conclude.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Sir you have to give me some time.

DR. BIPLAB DASGUPTA: Mr. Vice-Chairman, our party should also be given an opportunity to speak on this matter. So far three or four Members belonging to different parties have spoken. Already it is 2.30 P.M. Let the Member not repeat what he has already said.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: [am not repeating.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V NARAYANASAMY): Hanumanthappaji, kindly be brief. I have still three Members from the Congress party listed here.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: सर, मुझे तो कहा था कि पांच मिनट में खतम कर दो और आप एक घंटे से बोल रहे हैं।

श्री हेच. हनुमनतप्पा: अगर मैंने मल्होत्रा जी से एक मिनट भी ज्यादा लिया हो तो मैं बैठ जाता हूं। अरे, कुछ भी बात करते हो। आपने चार बार अपने वाक्य को रिपीट किया है, मैंने तो ऐसा नहीं किया, मल्होत्रा जी।

If thirty Members of Parliament belonging to the BJP cannot control themselves within the four walls of Parliament, and you know how they have behaved in the beginning of the Zero Hour, you can imagine about he uncontrollable BJP workers outside. Unfortunately, the BJP is forgetting that they are a national party and they are forgetting that they are the main Opposition party. The whole country is looking towards them. They are starting their own model of entering into the disputed area and fencing the area.

सिकन्दर बख्त साहब ने हक बात कही है कि हर हिंदुस्तानी से मेरी अपील है। हर हिंदुस्तानी को उन्होंने एक अपील की है। मैं उनसे गुजारिश करता हूं कि हर हिंदुस्तानी में अपने आप को मिला लीजिए। बस। आपको मिलाकर आप हर हिंदुस्तानी को अपनी तकरीर दीजिए। जब हम बोलते हैं हर हिंदुस्तानी। तो हम अपने खुद को न भूलें। जो दूसरों के लिए कहते हैं कि हर हिंदुस्तानी को यह करना चाहिए। वह आप को भी करना चाहिए। आप भी हिंदुस्तानी हैं और हरेक हिंदुस्तानी में आपको भी शामिल करना चाहिए। मैं इतना ही सिकंदर बख्त साहब से गुजारिश करना चाहता हूं।

What has happened in Hubli is totally a perversion, a misconception, a misplanning.

श्री जनार्दन यादव: कण्डेम कर दीजिए फायरिंग का।...(व्यवधान)...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V NARAYANASAMY): Mr. Janardan Yadav, I do not want any running commentary from you.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: It is a deliberate act on the part of certain friends, to see, to instigate and to communalise the whole situation. It was a disputed area. The Matter is *subjudice.* The do not respect the verdict of court. They file one affidavit and act contrary to that outside. These ae people having an eye on the elections. The State of Karnataka is going in for elections in the near future. Here is the secret of it. Why have they not done the same thing in the North? Why have they forgotten Uttar Pradesh? Why have they forgotten Madhya Pradesh? Why have they forgotten Rajasthan and other places? Because right now there are not elections. They have already tasted the last elections.

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: आप अकेले ईमानदार बनने की कोशिश मत कीजिए। आप अकेले ईमानदार नहीं है, और लोग भी हैं।...(व्यवधान)...

SHRI H. HANUMANTHAPPA: I am only quoting from their speeches. They have passed a resolution in their national executive session. They said. We are going to form a Government in Kamataka. I am a Member from the Karnataka State.

I have got every right to say that. Keeping an eye on the elections—there are going to be elections there—they have taken this communal violence to the South where as I said, the people are peace-loving. In the South, people are peace-loving and they respect each other. We have no communal violence there

asis happening in the North.

अगर वहां दाल गलती है तो दाल वहां की होगी। पानी भी वहां का होगा। यहां की दाल वहां नहीं गलेगी। थैंक्यू।

DR. BIPLAB DASGUPTA: Mr. Vice-Chairman, Sir, I feel that the issues we are discussing today are very important ones. When I was a child, the national flag was seen as a flag which symbolised national integration. Subhas Chandra Bose, who formed the Indian National Army, had in his ranks Generals belonging to the Hindu community and the Muslim community. There was a Sikh also. He found it necessary to bring all the communities together in the national liberation struggle. At that time, the flag symbolised national integration where all the communities had to play an important role in hoisting the flag. As far as the Independence "Day was concerned. Again, I remember it as a day of happiness because the yoke of imperialism was removed on that day and the country became independent. And, today, when we remember the Independence Day, we also remember it as a day for taking a vow to protect our independence. Unfortunately, what happened in Hubli that day was something which created an atmosphere of national disintegration because hatred between communities was provoked. It is also something which is unfortunate because it created unhappiness. The National Independence Day is not a day when you hold such programmes, such meetings, which really make everyone feel unhappy. The issue is not whether the BJP carried the national flag to that place or not. The question is, what was the motive behind it? The impression one gets, from the way the whole issue was built up day after day by the BJP Press, by the various Press conferences, various statements, is that they were itching for a confrontation, a confrontation with a minority community. That was the impression which was created. Sikandar Bakht Saheb has said that he assured the Muslim community about something. But why should they accept this assurance at its face value after what happened on the 6th December in Ayodhya? We had an experience. Despite the assurances given by the BJP leaders there was violence. Why should any such assurance be taken seriously by the Muslim community even when it comes from some of the highest leaders of that party? The point is, the whole motive behind organising this programme was to provoke communal hatred, communal disharmony. The BJP takes the position that the land was under dispute and there was encroachment. Even in Bengal, I know of many places where temples have been built, even mosques have been built, on public land. What do we do? Do we go and demolish them? We cannot do that. We show respect to religious sentiments, even when there is encroachment of public land. Even if encroachment of public land has taken place, it does not mean that you can go and violate communal harmony or hurt the sentiments of a community by taking such an action. The action taken by the BJP was certainly aimed not at fostering communal unity, not at bringing about national integration, not even at upholding the independence of the country, but mainly at using this incident as a step towards capturing power in Karnataka. My friend from Kamataka. I think, has made a right point when he has said that had there been no election in prospect in Karnataka, probably, this incident would not have been organised in Kamataka but would have been organised in some other place. So, it was very unfortunate that this decision had been taken by the BJP leadership which led to bloodshed. Any bloodshed is unfortunate. These six-seven people, who have died, would never come back. We should feel sorry about them. But, it should also be the responsibility of the BJP to see to it that when they organise these programmes, such things do not happen. Since these people have died due to police firing, it does not mean that the police alone is responsible for that. I would put this reponsibility squarely on the BJP leadership for organising such a programme which led to such a bloodshed. Their inability to control the mob which they were leading, eventually led to the unfortunate incident. So, what has happened is very, very unfortunate. Those lives would never come back. But, for this, I will squarely put the blame on the BJP leadership I also find it very unfortunate that the BJP leadership has mentioned about the Jalianwalah Bagh tragedy. I do not know how much they know about the Jalianwalah Bagh

tragedy. What had happened in 1919 was a landmark in the history of the national movement of our country where the Hindus, the Muslims and the Sikhs, all gathered together in a public place and General Dyer had opened Fire on them by sealing all the points of exit. The occurrence of the Jalianwalah Bagh tragedy is remembered by us both with a sense of pride and also as an occurrence which inspires us to take a resolve to protect our independence. Those who had laid down their lives in this occurrence became martyrs. But, the point is, such a comparison has been made, which led to so much of shouting in this House, which could have been avoided.

Lastly, I would like to say, if the BJP friends think that communal issues are handy issues with the help of which they can mobilise public opinion and win elections, then I hope that they would realise from their own past experience that this is a suicidal policy. They should realise that even after the 6th December episode, they could not retain power in Uttar Pradesh. Madhya Pradesh and Himachal Pradesh. The people of India, whatever their other failings, will not condone such type of deliberate communal attempt to divide the people. Both the Hindus and the Muslims would not pardon them for what had happened either in Ayodhya or in other places. I would request the leaders of the BJP to be somewhat more responsible. If they really want to establish themselves as a national party. They should realise that India consists of many communities and their objective should be to bring all the communities together and not to divide them. They should raise national issues. Only the other day, when we, from the National Front and the Left Front had raised the issue of the ATR, we had no co-ordination with them. But the BJP, somehow, join us. Why am I saying this? Whatever it is, the BJP should have continued to take up issues of secular nature which affect our national interests rather than getting into issues, which unfortunately, divide the people. I would request the BJP leadership to be more responsible in future and should not provoke incidents which destroy the communal amity and lead to such type of bloodshed.

SHRI B. K. HARIPRASAD (Karnataka): Mr. Vice-Chairman, Sir, it is really very unfortunate that a well-respected senior leader of the Opposition, had to be arrested in Bangalore, whatever may be the reasons. The controversy here, as Hanumanthappa] i said, has two sides. One side says that it is a public place and the other side says that it is not a public place. We may come to the conclusion that it is a disputed site. Sir, if I say South, then, the hon. Members may say that there is a difference between North and South. So let me confine myself to Karnataka. Basically, the people of Karnataka are peace-loving. They maintain communal harmony. Even today, you can see that there are so many temples, mosques and *durgah*s situated together.

Not even a single communal riot is reported. The history of this ground goes back to 1907. Neither was I nor were some of the leaders bom at that time. The history goes back to 1907. Even after 1947, neither was there any dispute about this land nor did any of the political parties try to create a nuisance or nonsense on this piece of land. When did the troble start? The trouble started only from 1991 or 1992. Where were these people, the so-called patriots, people having the highest esteem and respect for the National Flag, patriotism and high ideals, all these forty years? They never attempted anything on this ground. Overnight they wanted to hoist a flag. As rightly said by our Communist friend, their intentions are now clear. Nobody has a right to stay in this land if he disrespects the National Flag. A person, whosoever he may be, however big he may be, has no place in this land if he disrespects the National Flag. Let me not restate what the National Flag stands for in this country. As rightly said by some of (he senior leaders, with vast diversity, the National Flag stands for peace, progress and harmony. What have you done with it? I do not endorse what the police has done, but there was no other go for the police. I could understand that there are people who can hoist the National Flag there in the Karnataka State. There was no necessity for Miss Uma Bharti to go, dressed in jeans and mini skirts, to Hubli-Dharward to escape the police-arrest.

Why should she feel scared? It is our own land. It is Mother India. Nobody feels scard to go there to hoist the National Flag. I agree that Sikander Bakht Saheb went there like a Maharaja!

I am not a Pandit in Hindi or Urdu, but 1 know only one couplet:

''कभी शोला कभी शबनम, कभी गुन्जों की तरह,
लोग मिलते हैं, बदलते हैं मौसम की तरह।
इस कुफ्र के दौर में धोके के सिवाय कुछ नहीं है,
मरहम लगाते हैं नस्तर की तरह।''

कभी अयोध्या, कभी हुबली। क्या हो रहा है साहब?

Please keep us away. We are away from all these things. Please keep us away. And the police resorted to firing or whatever it was, but (here was no other go for it, because I knew, I understood that the BJP or its founders are not only training RSS cadres but also animals. They brought monkeys there to hoist a flag. Anybody can understand a human being going there and hoisting a flag but not animals! Even in a circus the animals are trained. That means, it cannot be taken for granted that with sheer patriotism, with sheer respect for the National Flag that a lot of people had gone there. There is a party called BJP in Kamataka also. That could have given a call to the people of Karnataka. What was the response? One of the Members of Pasrliament—it is a shame—was even waiting to get arrested by the police with hardly five people! Maybe, ten; maybe, hundred. I am a layman. I am the sallest worker of my Party. If I go to a place and give a call, a minimum of five thousand people will come to me, anywhere in India. They could have done it. Why did they want Miss Uma Bharti. Why did they want people from Hyderabad and Maharashtra, from everywhere? And these people speak of patriotism! Let me remind them of what happened to the people of the South, who were living in Bombay in the sixties. The so-called political party which has aligned itself with BJP, the Shiv Sena, we know what atrocities they committed on the South Indian people. People have not forgotten that. The pseudo-patriotism, the pseudo-Hinduism will not succeed. Let us make it clear that whenever they tried to create communal disharmony the people in the country, leave alone the people in. the other in the country, the people of U. P., the people of Himachal Pradesh and the people of Madhya Pradesh have shown them their right place. Though the BJP has no hold in Kamataka, they were able to retain their deposits here and there. They will lose even those deposits this time. The people of Karnataka are not for this and, for that matter, the whole people of South India. Their intentions were purely political, keeping in view the forthcoming elections. With these words I once again pleadwith and request to— I don't know much words from the Oxford Dictionary—the BJP people not to provoke the emotions of the people in the South.

श्री चतुरानन मिश्र (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, हुबली में जो गोलीकांड हुआ, उसकी भी मैं निंदा करता हूं और हमारे विरोधी दल के नेता ने वहां जाकर के जो खुराफात की, इसकी भी मैं निंदा करता हूं।...(व्यवधान)

श्री संघ प्रिय गौतम: उपसभाध्यक्ष महोदय, कृपया यह देख लें कि ''खुराफात'' संसदीय शब्द है या नहीं।...(व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र: माननीय सदस्य ने प्वाइंट आफ आर्डर किया है कि ''खुराफात'' शब्द क्या है, यह तो आप तय करेंगे, उसे मालिक आप हैं लेकिन निश्चित रूप से यह सारे खुराफाती हैं। गोलीकांड के लिए तो एक जुडिशियल इंक्वायरी सैट-अप हो गयी है, जो अखबारों में बात आई है, इसलिए मैं उसमें नहीं जाऊंगा। वह मैटर सब-जुडिस है, मैंने सिर्फ निंदा की है उसकी। लेकिन मैं चाहता हूं कि दूसरी इंक्वायरी कमेटी सैट-अप की जाए मेरे इस चार्ज पर कि भारतीय जनता पार्टी और विरोधी दल के नेता वहां जाकर ये खुराफात करते हैं और सारे देश को हिंदू-मुस्लिम दंगों में फंसाना चाहते हैं। यह हमारा चार्ज है आपके ऊपर।

श्री संघ प्रिय गौतम: हम इसका जवाब देंगे जब बोलेंगे तो...(व्यवधान)

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: क्या मैं पूछ सकता हूं कि*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANSAMY): Kindly take your seat. It will not go on record. *(Interruptions)*.., Whatever he says will not go on record. *{Interruptions)*...

*Not recorded.

श्री चतुरानन मिश्र: हमारा भाषण खुराफाती है तो आप बोलिए इंक्वायरी सैट-अप करने के लिए और नहीं तो आप यह मान लें कि एक इंक्वायरी सैट-अप की जाए कि देश की एक पार्टी जगह-जगह ईदगाह चुनकर, मंदिर चुनकर खुराफात करती है सारे देश में। यह क्या संविधान के मातहत काम करती है? आप भा.ज.पा. के माननीय सदस्य इसको ऐक्सैप्ट करेंगे, बोलिए? क्या आप मानेंगे कि एक कमैटी सदन की बिठा दी जाए, जुडिशियल इंक्वायरी हो...(**व्यवधान**)

इसलिए मैं कह रहा हूं कि एक तरफ देश जूझ रहा है पाकिस्तान की खुराफात से जो दूसरे देशों से मिलिटैंट्स को लाकर हमारे देश में लड़ाई छेड़ रहा है, अनडिक्लेयर्ड-वार हो रहा है। प्रधानमंत्री जैसे सीधे आदमी को डिक्लेयर करना पड़ा लाल किले के मैदान से कि ऑकुपाईड कश्मीर का हिस्सा जो है वह हम लेंगे...(**व्यवधान**)

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: देखिए मिश्रा जी, चंद्रशेखर जी ने प्रधानमंत्री जी के भाषण की आलोचना की है जब उन्होंने कहा कि ऑकुपाईड कश्मीर को हम लेंगे ...(**व्यवधान**)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly take your seat.

श्री चतुरानन मिश्र: यह तो चंद्रशेखर जी से पूछिएगा आप। अगर आप अखबार में काम करते तो ऐडीटर आपको डिसमिस कर देता कि किसी का सवाल किसी से पूछते हैं। पूछना है तो चंद्रशेखर जी से पूछिए। हमको क्यों पूछ रहे हैं? हमने इतना ही कहा आपसे कि जब राष्ट्र का प्रधानमंत्री ऐसा आह्वान कर रहा है, उस वक्त में इस देश के विरोधी दल के नेता को क्या यह चाहिए कि राष्ट्रीय झंडा जो हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रतीक है, जो राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है, उसको लेकर के दंगा-फसाद हंगामा उठाने के लिए जाए, ये देशभक्ति का काम है तो देशद्रोही किसको कहते हैं? यह मैं जानना चाहता हूं। यह अगर देशभक्ति का काम है तो देशद्रोही किसको कहते हैं, यह मैं जानना चाहता हूं।

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: क्या झण्डा फहराना देशद्रोह है? ...(**व्यवधान**)

श्री चतुरानन मिश्र: यह झण्डे का अपमान है। जो झण्डे को लेकर दंगा करवाना चाहते हैं, वह झण्डे का अपमान करते हैं। यह झण्डा एकता का झण्डा है, इज्जत का झण्डा है, बर्बादी का झण्डा नहीं है, एकता का झण्डा है यह। ...(**व्यवधान**)

श्री एस. एस. अहलुवालिया: बगल में बैठ लिया है।

श्री चतुरानन मिश्र: बगल में नहीं बैठेंगे तो कहां पर बैठेंगे। यहां तो ऐसे ही होता है। बगल में बैठकर ही यह काम होता है। तो मैं कह रहा था कि इसे पर इंक्वायरी होनी चाहिए। हम यह जांच इसलिए करवाना चाहते हैं कि भा.ज.पा. के लोग मात्र हक चुनाव के लिए देश को आग में झोंक देना चाहते हैं। अभी क्योंकि वहां चुनाव होने वाले हैं इसलिए इन्होंने वहां यह सारी स्ट्रेटजी तय की। अगर आप इंक्वायरी सैट-अप करवा दें तो सारी बात का भण्डा फोड़ हो जायेगा। इसलिए हम कहते हैं कि यह काम जो किया गया है, यह देश के हित में नहीं है, देश विरोधी है और यह अपेक्षा नहीं की जाती है कि विरोधी दल के नेता ऐसा करेंगे। मैं बी.जे.पी. से अपील नहीं करूंगा। मुझे इन पर विश्वास नहीं है। हम यह समझते हैं कि इनका जन्म ही इसी खुराफात के लिए हुआ है। इसी के बल पर इनको वोट मिलेंगे। हमारे मित्र विप्लव दास जी ने अपील की है कि यह काम छोड़ दें। यह काम छोड़ देंगे तो इनकी सब जमानत जब्त हो जाएगी। ...(**व्यवधान**) एक ही तो इनके पास प्वाइंट है, और तो कोई प्वाइंट है नहीं।...(**व्यवधान**)

श्री त्रिलोकी नाथ (उत्तर प्रदेश): सी.पी.आई. और सी.पी.एम. में फर्क क्या है?

श्री चतुरानन मिश्र: सी.पी.आई. और सी.पी.एम. में फर्क है तभी तो दो पार्टियां हैं। आप तो हमारे आडिटर जनरल थे, इतना भी फर्क नहीं बूझ पाते थे तो काम कैसे करते थे? दो पार्टियां हैं, तभी फर्क है। ...(**व्यवधान**) अब हम जिस बात की चर्चा करना चाहते हैं, वह यह है कि जैसा मैंने पहले कहा, में एक बार फिर कहना चाहता हूं कि इंक्वायरी सैट-अप होना चाहिए कि क्यों इतनी बड़ी पार्टी इस तरह के काम हर जगह पर करती है। जब राष्ट्र "मैदान में जूझा हुआ है, लड़ाई हो रही है, हमारे सैनिक वहां मारे जा रहे हैं, दूसरे देश के सैनिक आकर युद्ध कर रहे हैं। इसीलिए मैं चाहता हूं कि इसकी जांच पूरी तरह से की जाए। मैं जानता हूं कि शासक पार्टी इसकी जांच नहीं करेगी क्योंकि वह भी चाहते हैं कि कुछ-कुछ होता रहे। ...(**व्यवधान**) अगर वह नहीं करते तो हम आपसे अपील करना चाहते हैं कि आप जांच कीजिए क्योंकि आजादी की लड़ाई में आपकी पार्टी ने सबसे ज्यादा हिस्सा लिया। भा.ज.पा. तो रोया भी नहीं टूटा आजादी की लड़ाई में।..(**व्यवधान**)

श्री एस. एस. अहलुवालिया: उस समय तो काली टोपी पहनकर बैठे थे।..(**व्यवधान**)

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): सन् 42 के मूवमेंट में हम थे और आज भी गांधीवादी हम हैं, खद्दर पहनते

है, टैपी पहनते हैं।...(व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र: गौतम जी आजादी की लड़ाई में थे लेकिन उस वक्त यह बी.जे.पी. में नहीं थे। जब से ये बी.जे.पी. हुए, तब से इनको पता नहीं है। उस वक्त आप, तो आप थे फज़ल-उल-हक की मिनिस्ट्री में और आपका नाम था डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और गोली चला रहे थे हम स्वतंत्रता सेनानियों पर। आप पर भी गोली चली श्यामा प्रसाद मुखर्जी के टाइम में। बोलिए सच बात है या नहीं। ये आजादी की लड़ाई में तो बोलिए।...(व्यवधान) आप तो कभी जिन्दगी में नहीं थे अभी हाल में गये।...(व्यवधान)

श्री नारायण प्रसाद गुप्ता: मिश्र जी, कौन पहले आया, कौन बाद में आया? 1942 में कम्यूनिस्ट पार्टी का क्या रोल था?

श्री त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी: श्यामा प्रसाद मुखर्जी फज़ल-उल-हक की मिनिस्ट्री में थे पर कब तक, 1942 के आन्दोलन में गोली चली थी कि नहीं? श्यामा प्रसाद मुखर्जी का क्या रोल रहा यह तो...(व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र: आखिर में मैं इतना ही कहकर समाप्त करूंगा। मैं फिर अपील करता हूं कि सदन में अशोभनीय ढंग से हम लोग चर्चा न करें। आज मुझे बहुत दुख हुआ जब एक मेम्बर दूसरे मेम्बर को तुम, तंग करके बोल रहा था। यह बहुत लज्जाजनक बात है और वैसे भी यह सदन है और एल्डर्स का सदन है। अगर यहां से यह चीज बाहर जायेगी तो हम लोग क्या जवाब देंगे। इतनी बात कह कर मैं समाप्त करता हूं।

3.00 P.M.

प्रो. आई.जी.सनदी (कर्नाटक): उपसभाध्यक्ष जी, मैं उसी गांव से आता हूं मैंने अपनी आंखों से यह सब देखा। क्योंकि आसानी से यह मामला तय होने वाला नहीं है। आसधानी तलवार फिर लटक रही है। 26 जनवरी फिर आ रही है। मैं चाहता हूं बहुत बड़ी जिम्मेदारी हम दोनों पर है इसलिए मैं आप से अनुरोध करूंगा, विनती करूंगा कि आप सुनें।

हिन्दू कहे मोहि राम प्यारा, मुस्लिम कहे रहमाना।

आपस में ये दो लरी-लरी मुए, मन-मन कोहु जाना।।

कबीर की इस बात को उद्धृत करते हुए कहता हूं कि ईदगाह का क्या मर्म है मालूम नहीं। बहुत से लोगों को मालूम नहीं। जहां कहीं भी मैं जाता हूं सभी लोग मुझ से पूछते हैं क्योंकि मैं मुसलमान हूं कि क्या हो गया है आप हुबली के मुसलमानों को कि एक राष्ट्रीय ध्वज को वहां पर फहराने नहीं देते। इस तरह से जब पूछेंगे तो सचमुच मेरा माथा झुक जाता है। हकीकत यही है कि जितना खून हिंदुओं का बहा इस आजादी के लिए, इस राष्ट्र ध्वज को फहराने के लिए मैं समझता हूं उससे कम खून मुसलमानों का नहीं बहा होगा। लेकिन जो झगड़ा वहां हुबली में है वह नेशनल फ्लैग होएस्टिंग को लेकर नहीं है। यह झगड़ा क्यों है आप मुझे ध्यान से सुने तो मैं दो बातों को बताना चाहता हूं। मैं 1958 से लेकर वहां विद्यार्थी रहा। कालिज में एक लेक्चरार रहा। प्राध्यापक रहा, जर्नलिस्ट रहा, डिस्ट्रिक्ट कांग्रेस का प्रेजीडेंट रहा और यह ईदगाह का जो झगड़ा फैला हुआ था इस आग में कालिज को छोड़ कर मुझे एम.एल.ए. बना दिया गया। 30-35 सालों से इसके पीछे लगा हुआ हूं। आप नहीं मानेंगे ऐसा एक भी हुबली धारवाड शहर में कोई घर नहीं मिलेगा जहां पर मेरी एन्ट्री उनकी किचन तक न हो? चाहे ब्राह्मण हो, चाहे हरिजन हो, चाहे आर.एस.एस. को, बी.जे.पी. हो, हर किसी से क्लोज कांटेक्ट जितने मेरे हैं शायद दूसरे किसी मुसलमान के होंगे। यह सारा मुवाद मेरे मन में है। मैं खुलासे के तौर पर कहना चाहता हूं इतना अच्छा दूसरा कोई मौका नहीं मिला कि मैं वहां पर बयान कर सकूं। हुबली धारवाड़ में बसने वालों के बारे में बताना चाहता हूं कि पहले हुबली अलग था और धारवाड़ अलग था। इन दोनों शहरों का कारपोरेशन हो गया। आबादी बढ़ने लगी। जब वहां गवर्नमेंट की मेहरबानी, हुबली शहर के मुसलमानों के लिए ईदगाह की जरूरत रही तो उन्होंने एक रेजोलूशन करके लीज पर एक एकड़ और चार गुंठा जमीन दे दी ईदगाह के लिए। अब तक कोई झगड़ा नहीं रहा। लेकिन धीरे-धीरे आबादी बढ़ने लगी। यह जगह छोटी होने लगी और 3 से साढ़े तीन घंटे एक किलोमिटर से ज्यादा लम्बे नेशनल हाईवे पर नमाज़ के लिए बैठने लगे। रोड्स ब्लाक होने लगीं। यह जगह ऐसी है जहान से सोलापुर की रोड आकर लगती है। बल्लादी की रोड आकर लगती है। बलगाम की रोड़ आकर लगती है। कारवाड़ की रोड़ आकर लगती है। बंगलौर की रोड आकर लगती है। यह स्थान सात रास्तों से ऐसे ही घिरा हुआ है जैसे दिल्ली का कनाट सर्कस और इसी तरह की इम्पोर्टेन्ट जगह है वह। इसके ऊपर किस-किस की नजरें लगी हैं मैं बता दूं। मुसलमान हुबली के चाहते थे कि वहां पर नमाज पढ़ें लेकिन उनके दिल में आ गया कि हर साल दो बार इस तरह से नमाज़ पढ़ेंगे और तीन-तीन, चार-चार घंटों तक इस राष्ट्र के मेन प्रवाह में बहने वाले लोगों को रोक कर रखेंगे तो उन्होंने समझा यह ठीक नहीं है तो फिर क्या किया जाए। इसको बदला जाए। क्यों बदला जाए इसके पीछे घटना हो गई। मैं इसका ज्वलंत उदाहरण दे रहा हूं। आप जानते हैं सिकन्दर

बख्श जी, जब नमाज़ के लिए सभी खड़े थे रकात बांध कर खड़े थे तो एक गाय की दुम पर एक टिन के डिब्बे को बांधकर नमाज़ के लिए खड़ी जमात में छोड़ दिया गया। यह पुलिस रिकार्ड में है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि जब राकत बांधकर लाखों की तादाद में मुसलमान वहां पर-गाय को मारेंगे तो गो हत्या होगी, हमें मालूम है वह क्या चीज होती है और उसको लेकर कैसा खून-खराबा इस देश में हुआ। अगर उसको छोड़ दें तो नमाज खराब होती है। इस तरह की हरकतों का हुबली में होना शुरू हो गया। उसके बाद मैं जानता हूं जब गवर्नमेंट आफ इंडिया में मोहसिन साहेब मिनिस्टर थे कई जमाने तक वह अंजुमन-ए-इस्लाम के प्रेसीडेंसी भी रहें। उन्होंने गवर्नमेंट आफ कर्नाटका, आज गवर्नमेंट आफ कर्नाटक है, उस समय गवर्नमेंट आफ मैसूर थी, उसको अप्लीकेशन दे दी। उन्होंने एक रेजोल्यूशन भेजा। वह रज्योल्यूशन अंजुमनेए-इस्लाम हुबली का यह था कि यह जगह हमें छोटी हो रही है और हमारे दुश्मन इस देश में अगर कोई है तो वह है हमारी अज्ञानता और जो बेरोजगारी है। इसको अगर हमें दूर करना है तो बच्चों को हम तालीम दें। इसलिये पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर सबसे पहले कर्नाटक में, हुबली में एजूकेशन में आगे आने के लिये नेहरू आर्ट, साइंस एंड कामर्स कालेज प्रारंभ किया। वह चाहते थे कि वह जो हमारी ईदगाह जगह है इसमें नीचे शाप्स बना लें और फस्ट और सेकंड फ्लोर जो होगा वहां पर कालेज चलेगा। इस इरादे से उन्होंने अप्लीकेशन दी, रेजोल्यूशन भेजा, गवर्नमेंट आफ मैसूर को। गवर्नमेंट आफ मैसूर इतनी मेहरबन थी कि उन्होंने अजमुन-ए-इस्लाम को परमीशन दे दी, 6 कंडीशंस के साथ कि अगर आप वहां पर शाप बनाना चाहेंगे, उस जमीन पर जो एक एकड़ से थोड़ी ज्यादा जमीन है, तो आपको इन 6 कंडीसंस का पालन करना पड़ेगा। इन 6 कंडीशंस के साथ आपको इजाजत दे दी गयी है ऐसा गवर्नमेंट आफ मैसूर की परमीशन मिली। एक है ईदगाह के लिये मुसलमान दूसरी जगह नहीं मागेंगे, अपना इंतजाम उन्हें खुद करना पड़ेगा। दूसरी, अगर वहां पर बिल्डिंग बनाना चाहते हैं तो लोकल कारपोरेशन जो है, जो म्युनिस्पैलिटी है उसकी परमीशन लेनी होगी। एक रुपये का जो लीज रेंट है दे मस्ट गो आन पेयेंग दि लीजरेंट। थर्ड, वहां पर जो एजूकेशनल इंस्टीट्यूशन बनेंगे, जो पैसा आयेगा, दूकानों का किराया, यह पूरा पैसा एजूकेशन के लिये ही खर्च करना पड़ेगा। और लास्ट प्वाइंट है कि आप जितने भी एजूकेशनल इंस्टीट्यूशन खोलेंगे वे हर कम्युनिटी के लोगों के लिये खुले रहेंगे। इन 6 कंडीशंस के साथ उन्होंने परमीशन दे दी और नेक्स्ट था हमारा बिल्डिंग का परमीशन लेना, उसके लिये हम चले गये कारपोरेशन में। कारपोरेशन में कांग्रेस थी, उसके बाद जनसंघ विपक्ष में था। समय की घंटी

यह बहुत ही इम्पोर्टेन्ट है, क्योंकि बहुत से देश में रहने वालों को यह बात मालूम नहीं है इसलिये पांच मिनट और दे दें। मैं चार साल में बहुत कम बोला हूं। आज मौका मिला है, मैं इस पर कुछ बोलना चाहता हूं।

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): ठीक है, बोलिये।

प्रो. आई. जी. सनदी: यह जो झगड़ा है यह नेशनल फ्लैग का नहीं है। जब से इजाजत के लिये कांग्रेस ने हाथ उठाया तो जनसंघ के लोग विपक्ष में वहां पर बैठे हुए थे उन्होंने कहा कि नहीं, हम नहीं देंगे ईदगाह। नमाज के लिये दे दिया है। यहां दूकानें कैसे बनेंगी। हम नहीं देंगे। झगड़ा वहां दो कारपोरेटर्स में हुआ है। उसके बाद वह झगड़ा रोड पर आया और उसके बाद वह झगड़ा हिन्दु-मुसलमान में हुआ और कई लोग उसके शिकार हो गये। कभी-कभी हुबली में ऐसा भी भड़काने की कोशिश होती है जहां पर मस्जिद रहती है, तो जिस जानवर को मुसलमान बहुत ही हेट करता है, उसको काटकर मस्जिद में फेंक देते हैं और जिसकी पूजा हिन्दु करते हैं गाय को काटकर किसी मंदिर में फेंकना, इस तरह का कलुषित वातावरण करने का जो सिलसिला चुका हुबली में इससे क्या हुआ कि हिन्दु-मुसलमानों के बीच में जो सद्भावना थी, उस पर आघात पहुंचा। इसको सुधारने की कई कोशिशें की गयीं। गवर्नमेंट का उस पर कोई एतराज नहीं है, परमीशन दे दी। कारपोरेशन को कोई एतराज नहीं, बिल्डिंग बनाने के लिये परमीशन दे दी। लेकिन वहां पर बी.जे.पी. वाले जो कारपोरेशन में जीत नहीं सके, इन्होंने सौ आदमियों को लेकर पब्लिक इंटरेस्ट के नाम से एक दावा वहां पर दखिल करके रखा और हमें धोखा वहां पर हो गया। एक ऐसे जनाब वहां पर आये, मैं उनके बारे में यहां चर्चा नहीं करना चाहता, उन्होंने कहा कि दो वक्त नमाज पढ़ी जाये। दो वक्त क्यों हम कई बार, तीन वक्त भी वहां पर पढ़ चुके हैं। जब देश के ऊपर हमला हुआ तब भी नमाज पढ़ी गयी है। जब कभी बरसात नहीं होती थी उस वक्त भी वहां पर मुसलमान नमाज पढ़ते थे। जब उन्होंने कहा कि बाकी समय में यह ईदगाह की जगह ऐसी खुली पड़ी रहेगी, ये नमाज पढ़ेंगे और जगह पड़ी रहेगी हम चाहते थे कि ईद की नमाज के बाद इसको बंद करने बाहर चले जायेंगे लेकिन ये चाहते थे कि दो वक्त नमाज़ पढ़ें, इतनी छोटी जगह पर पढ़ें और ईद के दिन में जब नमाज का वक्त रहेगा तो दस-दस घंटे यहां पर रोड ब्लाक करके रखें यह इनका इरादा है। हमारा इरादा है कि हम वहां से

चले जाएं और इनका इरादा है कि नमाज़ पढ़ों ईदगाह रहेगी, यह पब्लिक है। मैं आपको बताता हूं कि पूना के बाद हमने अपने शहर को इतना संवारा है कि शायद यह देश भर के लिए एक माडल है। यहां पर जो गजानन गणपति का उत्सव आता है, उसको देखने के लिए लाखों की तादाद में लोग आते हैं। एक भी मुसलमान भाई कहीं भी कुछ नहीं कहता और इसको आदर से देखते हैं। खाली मैदान समझ लीजिये कि पब्लिक है जैसे आपने कहा कि पब्लिक है आप मुझे बताइये कि कभी भी हम कारपोरेशन को चिट्ठी लिख कर परमिशन ले कर नमाज़ पढ़ने के लिये गये थे? नमाज़ पढ़ने के लिए ऐसे नहीं गये, वह जगह तो हमारे लिए 999 ईयर्ज़ लीज़ पर थी। वे कहते है कि लाइसेंस है। लाइसेंस और लीज़ का झगड़ा तो पहले से कोर्ट में चल रहा है और वह डिस्प्यूटेड है। एक बात मैं और आपको बताना चाहता हूं हिन्दु-मुस्लिम भाई हुबली में कितने अच्छे है। मैं वहां इमरजेंसी के टाइम में एम.एल.ए. रहा हूं। मोहसिन साहब डिप्टी मिनिस्टर फार होम रहे। अपा ही की पार्टी की बहुत बड़ी बैठक हुबली में हुई थी। आप मानिये या नहीं मानिये, मैं आपको बताना चाहता हूं कि सब से बढ़िया अगर वहां पर भोज का इंतज़ाम किसी ने किया था तो मुसलमान भाइयों ने किया था। आपकी बी.जे.पी. के एक लीडर बैठते थे, साइड में कांग्रेस का एम.एल.ए. बैठता था। अटल बिहारी बाजपेयी जी साक्षी हैं। मैं उनको एक तरह का संत भी मानता हूं, सद्भावना उनके मन में है। इस तरह से वातावरण को कलुषित करने का आपने मौका दिया। मैं समझता हूं आपने जल्दी की है और अगर हमारे साथ आप बैठ कर के डिसक्शन कर सकते थे। उनका यही इरादा है कि यह पब्लिक प्लेस है, यहां बैठ कर कुछ भी करेंगे, सतायेंगे। यह करने के बजाय मैं चाहता हूं 26 जनवरी भी आ रही है, मैं नहीं चाहता हूं कि मासूम और बेगुनाह लोगों को ऊपर इस तरह का अत्याचार हो या कुछ इस तरह का कुछ काम हो जाए। उस दिन मैंने देखा यहां पर मुझ दर्द था इसलिए मैं भाग कर हुबली शहर चला गया। आप मानिये या न मानिये, मैं आपसे कहना चाहता हूं कि रात के कर्फ्यु में डेढ़ बजे तक हिन्दू मुसलमान भाइयों को घर-घर जा कर यह कहता रहा कि कुछ नहीं होगा, कुछ नहीं होगा, आप घबराएं नहीं। मैंने रास्ते में देखा, मैं आपको क्या बताऊं 6-6, 8-8 फुट लम्बी लकड़ियों पर ने लगाए हुए पड़े थे ताकि पुलिस की जीप इससे पंक्चर हो जाए। मेरा घर वहीं पर है, उसी रास्ते पर है जहां विजयोत्सव मना रहे थे मेरे घर के सामने है। जितने भी लोग वहीं पर है, उसी रास्ते पर है जहां विजयोत्सव मना रहे थे, मेरे घर के सामने है। जितने भी लोग वहां पर बसों में भाग-भाग कर आए मेरे घर के सामने, मेरी आंखों के सामने रूके हुए थे, मैं भी कहां छिपा नहीं था। मुझे यह डर था कि कहीं कुछ न हो जाए। अभी कुछ दिन पहले उमा भारती की प्रेस कान्फ्रेंस हो रही थी। उन्होंने कहा था कि इस इस रास्ते से यह आदमी आएंगे और इस रास्ते से यह-यह आदमी आएंगे। अब आप ही बताइये पुलिस क्या कर सकती थी? उस दिन उन्होंने पुलिस को एम्बुश किया। देशपांडे नगर की जो बात कर रहे हैं वह तो बी.जे.पी. का स्ट्रांगहोल्ड है क्योंकि वहां से कभी भी कांग्रेस पार्टी का उम्मीदवार जीत कर नहीं आता है। वहां 30 फूट का भी रोड नहीं है। (व्यवधान) एक मिनट आप बैठेंगे क्योंकि आपके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। नेकट क्या होने वाला है, मैं इसके लिए चिन्तित हूं। वहां गजानन उत्सव प्रारम्भ होने वाला है। बड़े-बड़े मण्डप वाला है, मैं इसके लिए चिन्तित हूं। वहां गजानन उत्सव प्रारम्भ होने वाला है। बड़े-बड़े मण्डप पड़ रहे हैं। अगर इस तरह का वातावरण हो गया तो मेरा शहर बरबाद हो जाएगा, मिट जाएगा। एक चीज़ मैं आपको यह बताना चाहता हूं। अगर एक कब चाय पीना एक दिन छोड़ देंगे तो 10 करोड़ की ज़मीन खरीदने की कैपेसिटी रखने वाले लोग वहां पर है। मैं चाहता हूं उन दोनों में भाईचारा क्यों नहीं ला सकते हैं, उन दोनों को कब क्यों नहीं मिला सकते हैं। लाखों खर्च करके बिल्डिंग बनाएं और परमिशन से बनाएं। कोर्ट का जजमेंट होता है कि यू डिमालिश आल दी शाप्स, इतना बड़ा नुकसान खाली फैंक दो, झगड़ा कर लो झगड़ा करते रहो। इसलिए इस कंट्रोवर्सी में मैं नहीं जाना चाहता हूं। अगर हम दोनों बैठ कर फैसला करना चाहेंगे तो हज़ारों की तादाद में मुसलमान भाइयों को मैं ला सकता हूं। मुसलमानों का कहीं भी ध्वज के प्रति विरोध नहीं है। आपका ध्वज के प्रति प्रेम की बजाय इसको पब्लिक प्लेस बनाने में है यहां पर कुछ भी कर सकते है इस तरह की ज़िद करने का इरादा है, यह मैं नहीं समझता हूं। मैं समझता हूं लाखों की तादाद में ला कर उसी जगह पर झंडा फहराने का काम हम संभी कर सकते है लेकिन वह जगह डिस्टेड जगह रहने की वजह से न हम जा सकते थे, न रहने की वजह से न हम जा सकते थे, न अपा जा सकते थे (व्यवधान)

श्री सिकन्दर बख्त: मैंने अपासे पूछा था कि कितने लोग बोलने वाले है। मुझे उन सब की बात सुनने के लिए बैठना चाहिये था। मैं भाई साहब की बात सुनने के लिए बैठना चाहता हूं लेकिन बिलकुल मजबूर हूं। माफी मांग कर जा रहा हूं।

شری سکندر بخت: میں نے آپ سے

†[]Transliteration in Arabic Script

پوچھا تھا کہ کتنے لوگ بولنے والے ہیں۔ مجھے
ان سب کی بات سننے کے لئے بیٹھنا چاہیئے تھا
میں بھائی صاحب کی بات سننے کے لئے بیٹھنا
چاہتا ہوں لیکن بالکل مجبور ہوں، معافی مانگ
کر جا رہا ہوں۔

श्री सुरेश पचौरी: (मध्य प्रदेश) माननीय सदस्य उसी क्षेत्र के हैं और कई चीजों से पर्दा उठ रहा है (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): The hon Leader of the Opposition says that he has got some work...

श्री सिकन्दर बख्त: मैं मजबूर हूं जाने के लिए। मुझे सवा तीन बजे बहुत...(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): सनदी साहब आप बोलिए।

प्रो आई जी सनदी: आपकी दो बातों में से एक तो पब्लिक की बात कही थी, उसके बारे में मैंने बताया। दूसरी बात थी, हुबली की अयोध्या करेंगी...(व्यवधान) नहीं, इन्होंने कहा था...(व्यवधान) यह एब्सर्ड बात है...(व्यवधान) सुनिए, मैं उन्हीं की बात कर रहा हूं। यह एब्सर्ड बात अपने ही कहा। सर, मैं आपको, आपकी ही पार्टी के महाने नेता का, जो हुबली आए थे, प्रेस स्टेटमेंट बताउंगा। पर मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता हूं। वे मेरे बहुत अच्छे मित्रों में से भी हैं। उन्होंने कहा कि वह अयोध्या बोल-बोल तो खत्म हो गया, अब खत्म होगा अब इसको हम खत्म करेंगे। इस तरह की लोगों में भड़काने की बातो को डाल कर हिन्दु मुसलमानों को अलग करने की बात कर रहे हैं। यहां हिन्दु-मुसलमानों की बात है ही नहीं। यहां पर नेशनल फ्लैग की बात है ही नहीं। नेशनल फ्लैग के लिए हम सिर ही नहीं जान भी देने के लिए तैयार है। आज वातावरण जो कलुपित हो रहा है हुबली शहर में, मैं बी.ज.पी. से प्रार्थना करता हूं, केन्द्र से भी प्रार्थना करता हूं कि वहां जो एम्बुश करने वाले थे--और एक हकीकत बताता हूं मैं वहां पर था। वे 50 पुलिस वाले घायल होकर पड़े हैं। क्या हास्पिटल में पुलिस नहीं है? उनको था मर जाना नहीं तो वहां से भाग जाना तो पूरे के पूरे आपके लोग ईदगाह की तरफ चले जाते। इतना था। तो उन बेचारों ने उनको जो रोका वह उनकी गलती हो गयी? दो-ढाई हजार लोग एम्बुश करके पथराव करते हैं तो यह भी सोचना पड़ेगा कि क्या यह भी हमारी नेशनलिटी हो सकती है। मैं आपसे अनुरोध करूंगा कि इसको मत बढ़ाइए। इसको और मत बढ़ाइए। देखिए, काल देश में मत दीजिए कि इस तरह का वातावरण न फैले। इस बात को स्टाप करने के लिए आप भी एक और काल दे दीजिए। बैठेंगे। बिठाएंगे, समझाएंगे और हिंदू मुसलमानों को एक करके राष्ट्र का झंडा और भी ऊंचा फहराने का काम करना है। हम दोनों को मिलकर करना है।

एक माननीय सदस्य: वे नहीं करेंगे, आप करिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): थैंक्यू, श्री सत्य प्रकाश मालवीय...(व्यवधान) सनदी साहब, आप खत्म कर दीजिए।

प्रो. आई.जी. सनदी: तो आने वाले 26 जनवरी को भी मैं वहां की आज की स्थिति बताता हूं। मैं एक बहुत ही प्रमाणिक अभिप्राय यहां पर रखता हूं। मेरी समझ में नहीं आता है अगर किसी एक टास्क को देकर हम वहां पुलिस को नियुक्त करते हैं, वह पुलिस, वहां के अधिकारी सुप्रीम कोर्ट का आर्डर भी आता है। सुप्रीम कोर्ट का आदेश भी आता है तो वहां पर डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट जैसे अधिकारी स्वीकार नहीं करते हैं। आदेश जब भी आता है तो वहां पर रहने वाली पुलिस, वहां पर अयोध्या में काम कर चुकी है, वैसी पुलिस नहीं थी। यें चाहते थे दो-ढाई हजार की तादाद में वहां पर घुस पाएंगे तो रेड कारपेट बिछाकर ईदगाह में ले जाएंगे, फ्लैग हायस्टिंग करेंगे। यह समझकर किया। तो जो भावना उनकी थी वह ठीक भावना नहीं थी, भावना में आकर, भड़काऊ भाषणों से सब कुछ हुआ। मैं कहता हूं कि आपके यहां बहुत से अच्छे लोग भी हैं। लेकिन दो सज्जनों की जुबान में पता नहीं क्या अमृत भरा है यह जहर भरा है। मैं हाथ जोड़कर कहता हूं कि उनके कृपया मत भेजिए। उस शहर को शांत करने का काम हम करेंगे। बहुत नुकसान हुआ है उन परिवारों को। मैं उन परिवारों को जानता हूं। हमारी चीफ मिनिस्टर इतने काइंड रहे कि फौरन एक लाख रुपये हर एक मृतक को उन्होंने देने को कहा है। जो कुछ भी वहां पर गुंडी हो गयी है उसकी इंक्वायरी के लिए उन्होंने वहां पर प्रबंध कर दिया है। मैं चाहता हूं कि जो फैली हुई आग है इसको बुझाने का काम करें, कष्ट करें। आपने जो समय दिया। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): श्री सत्य प्रकाश मालवीय।

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: सनदी साहब ने बहुत अच्छी बाते कह दीं लेकिन एक बात उनके ध्यान में नहीं आई..(व्यवधान)

†[Transliteration in Arabic Script

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mathurji, I called another name. I have not called your name.

श्री जगदीश प्रसाद माथुर: सिकन्दर बख्त साहब ने यह भी कहा था कि जो कुछ वहां..(व्यवधान) पार्टी है उधर की उनको कहा था कि आप आ जाइये, मैं नहीं जाऊंगा। हमारी बी.जे.पी. से कोई नहीं जाएंगे। आप आकर झंडा लहरा दीजिए..(व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: माननीय उपसभाध्यक्ष जी, इस देश में अंग्रेज...(व्यवधान)

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणसामी): माथुर साहब आप बैठिए। I have not asked you to speak. ...(व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: उपसभाध्यक्ष महोदय, जब इस देश में अंग्रेजों की हुकुमत थी तो आजादी के दीवाने अपने हाथ में तिरंगा झंडा लेकर घूमा करते थे और कानपुर के एक पार्षद थे श्यामलाल जी। यह बात दूसरी है कि बाद में बेचारे गुरबत की हालत में मरे। लेकिन उन्होंने तिरंगे झंडे पर एक गाना बनाया था कि "विश्व विजयी तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा, इस झंडे की शान न जाने पाए, जान चाहे भले ही चले जाए"। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने लालकिले पर जाकर उसी तिरंगे झंडे को फहराने की बात की थी। इस देश में पहली बार 16 अगस्त, 1947 को इस देश के पहले प्रधान मंत्री जवाहर लाल नहेरू ने राष्ट्रीय झंडा फहराया। वही तिरंगा झंडा करीब-करीब जा करके बाद में राष्ट्रीय झंडा बना। लेकिन मैं नहीं समझ सकता कि उस राष्ट्रीय झंडे को फहराने के प्रश्न को विवाद का विषय क्यों बनाया गया? यह सारी दुनिया को मालूम था, सारे देस को मालूम था, भारतीय जनता पार्टी के नेताओं को मालूम था कि वह स्थान विवादग्रस्त है। जब विवादित स्थान है तो विवादित स्थान पर झंडा फहराने की बात करना मैं समझता हूं कि राष्ट्रीय झंडे का अपमान करना है। उसके बाद वहां पर क्या हुआ? मोइली सरकार ने वहां पर गोली चलाया। बी.के. हरिप्रसाद यहां पर भाषण दे रहे थे। 16 तारीख के उनके उस भाषण को मैंने पढ़ा उन्होंने भी गोली चलाने के कांड की भर्त्सना की है। 6 निर्दोष लोगों की जान चली गई है। तो आखिर राष्ट्रीय झंडे के फहराने के विषय को जब राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आप करिएगा तो उसका यही हश्र होगा और कम से कम अब 26 जनवरी दोबारा इस बात की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मैं इन दोनों घटनाओं को 6 दिसंबर की घटना से जोड़ना चाहता हूं। 6 दिसंबर को जो घटना हुई वहां भी वह विवादित स्थल था और 15 अगस्त को हुबली में कर्नाटक में जो घटना हुई जिस स्थान को लेकर यह घटना हुई वहां पर भी विवादि स्थल था। 6 दिसंबर को भी भारतीय जनता पार्टी के नेता वहां पर उपस्थित थे। उन्होंने यह कहा कि मेरा कभी यह आशय नहीं था, हम लोग कभी नहीं चाहते थे कि गुबंद या ढांचा गिराया जाए, लेकिन वहां की जो भीड़ थी वह काबू के बाहर हो गई और इसलिए वह ढांच गिर गया। ठीक इसी प्रकार हुबली की भीड़ भी काबू के बाहर हो गई वहां पर भी भारतीय जनता पार्टी के नेता उपस्थित थे। मैं केवल उनसे नम्र निवेदन करना चाहता हूं, एक तो मेरा निवेदन उनसे यह है कि 26 जनवरी को झंडा फहराने की बात ऐसे विवादित स्थल पर नहीं करनी चाहिए। वैसा करके हम झंडे की प्रतिष्ठा नहीं करेंगे बल्कि झंडे का अपमान करेंगे। दूसरे 6 दिसंबर की घटना के बाद उस समय जो लोक सभा के विपक्ष के नेता थे उन्होंने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया था और 6 दिसंबर को जो घटना घटी वहां पर जो निर्दोष लोगों की हत्याएं हुई उसकी जिम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ली थी।

इसलिए मैं इस सदन के माफ़र्त अपनी आवाज़ उठाना चाहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी की सदन के जो विपक्ष के नेता हैं उनको 15 अगस्त की जिम्मेदारी को ले करके अपने पद से त्याग-पत्र देना चाहिए। मोइली साहब ने वहां पर न्यायिक जांच बैठा दी है। आज विपक्ष के लोगों ने मांग की है कि मोइली साहब को मुख्य मंत्री के पद से त्याग-पत्र दे देना चाहिए, लेकिन हम लोग जो ऊंचे आदर्शों की बात करते हैं, जो उच्च मूल्यों की बात करते हैं, आज अपने पद से इस्तीफा दे करके मैं समझता हूं कि जो इस देश के उच्च मूल्य हैं उनका पालन ही सिकन्दर बख्त जी करेंगे। इसलिए मैं फिर इस बात की मांग को दोहराता हूं कि उनको अपने पद से त्याग-पत्र दे देना चाहिए और दूसरे भारतीय जनता पार्टी को 26 जनवरी को दोबारा वहां पर जा करके झंडा फहराने की बात को नहीं सोचना चाहिए। धन्यवाद।

श्री जनेश्वर मिश्र (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष जी, इस देश में एक राजनीतिक पार्टी ऐसी है जिसकी दृष्टि गिद्ध वाली है। गिद्ध उड़ता तो रहता है ऊपर, लेकिन जहां उसको खुराक दिखाई पड़ती है उतर जाता है। पता नहीं इन लोगों को कैसे किसी पुरानी मस्जिद, किसी ईदगाह, किसी कब्रिस्तान, किसी मज़ार पर, हम खुद ही नहीं जानते थे कि हुबली में कोई ईदगाह है, इन लोगों ने 15 अगस्त पर उजागर कर दिया। बहुत बड़े नेता इस सदन में विपक्ष के नेता गिरफ्तार हो गए। हम लोग चिंतित हुए अखबार में पढ़कर कि यह कैसे हो गया। उनकी तरफ से

तर्क दिया जा रहा है अदालत का फैसला, अपने दिल पर हाथ रख कर कहें कि क्या किसी अदालत में यह मामला विचाराधीन नहीं है? वह लोग तर्क देते हैं, बहुत मासूम सवाल मैं पूछना चाहता हूं कि कितने दिनों तक इस तरह का खेल यह लोग खेलेंगे और कितने दिनों तक इस बात की इजाजत दी जाएगी? यह सही है कि किसी बड़े मुद्दे पर लड़ने के लिए कभी-कभी इन लोगों का साथ भी लिया जाता है, लेकिन यह भी सही है कि मुल्क का नुकसान होता है। चाहे हुबली हो, चाहे अयोध्या हो, चाहे जो कोई भी कांड हो। उससे एक संदेश और सूचना जो देश में और देश के बाहर जाती है वह बड़ी खतरनाक होती है। देश के अंदर 20 करोड़ के करीब अल्पसंख्यक हैं, उनके दिल में दहशत पैदा हो जाती है कि अब तो हमारा ईदगाह महफूज नहीं है। अब तो हमारे कब्रिस्तान और मस्जिद महफूज नहीं है और देश के बाहर के लोगों के बीच में हमारी तस्वीर बनती है कि हिंदुस्तान में जिन लोगों की तादाद ज्यादा है, अपने से कम तादाद वालों को सता रहे हैं।

महोदय, सवाल तिरंगे का नहीं है, संदेश का है। अगर हिंदुस्तान में हम तादाद में ज्यादा रहने वाले लोग अपने से कम तादाद वाले लोगों के मन में यह भरोसा न जता सके 50 साल के बाद भी कि यह तुम्हारा देश है तो यह गहरे दुख की बात है। महोदय, लड़कपन में और यूनिवर्सिटी में जब हम पढ़ते थे और उस दौर में से ये लोग कब्रिस्तान में कब्जा कर लेते थे तो हम लोग सोशलिस्ट पार्टी का झंडा लेकर जाते थे इनका मुकाबला करने के लिए छोटा सा एक मंदिर बना दिया, एक शिव की पंडी रखदी या हनुमान जी की मूर्ति रखदी और वह झेलना पड़ता था। महोदय, हम तब से देख रहे हैं और अंतिम बात तो 6 दिसंबर को आ गयी थी अयोध्या वाले केस में। उस समय इन लोगों से दोस्त के तौर से हम लोगों ने कहा था और फिर कहना चाहते हैं दोस्त के तौर पर कि घटना ऐसी नहीं है कि हिंदू मुसलमान का दंगा हो जाय अलीगढ़ में, मेरठ में, अलीगढ़ मेरठ के दंगे तो वहां की पुलिस कंट्रोल कर लेती है, लेकिन यह मामले जो बिगड़ते हैं तो उसकी आग देशभर में और दुनियाभर में लगती है। आयोध्या का मामला बिगड़ा था। महोदय, जैसे साइंस में कुचालक और सुचालक होता है तो अलीगढ़ का, मेरठ का, मुरादाबाद का, इलाहबाद का दंगा मुकामी होता है, यह तो कुचालक टाइप का होता है लकड़ी में एक तरफ आग लगा दीजिए, दूसरी तरफ ठंड़ी रहेगी, लेकिन यह जो आयोध्या का मसला हुआ या ईदगाह का मसला हुआ, यह सुचालक किस्म का हो जाता है। आयोध्या में मस्जिद गिरी और आग लगी बंबई में, आग लगी बड़ौदा में। पूरा हिंदुस्तान जल उठा, लेकिन इस मरम को ये लोग समझने को तैयार नहीं हैं। हो सकता है वकती तौर पर इनको राजनीतिक फायदा मिल रहा हो, लेकिन वह भी मिलनेवाला नहीं है। इस तरह की सियासत से कोई फायदा मिलता नहीं है। इस मरम को समझना ही पड़ेगा और जो कुछ भी हरकत ये लोग कर रहे हैं कि जो तादाद में हम से कम हैं, उनको पीटते रहेंगे। कभी किसी ईदगाह में पीटने की कोशिश करेंगे कभी तिरंगा झंडा लेकर, कभी राम की मूर्ति लेकर रामलला लेकर। मैं कहना चाहता हूं कि जितने जज्बे इनके रामलला के लिए होंगे, उतने ही हमारे भी हैं। जितने जज्बे इन लोगों के राष्ट्रीय तिरंगे के लिए हैं, उतने ही हिंदुस्तान के सब लोगों के होंगे, लेकिन राष्ट्रीय झंडे का अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए दुरूपयोग कोई राजनीतिक पार्टी करे। इस बात की इजाजत दी जा सकती है, यह सवाल है?

महोदय, बहुत पहले एक पार्टी नेता थे, वह उम्र में हमसे कम है। उन्होंने एक बयान दिया था जिस पर हमने ताज्जुब किया था। कहा था कि इस तरह की जमात सोच के जितने लोग हैं, वह सब के सब राष्ट्रद्रोही है। भाई लोगों ने बहुत गुस्सा किया था। हमको भी लगता था कि, लड़का है जोश में बोल गया होगा। इतनी कड़ी भाषा नहीं बोलनी चाहिए, लेकिन इन हरकतों को देखने के बाद इस नतीजे पर पहुंचा जा रहा है कि इनको समझना दो मिनिट, चार मिनिट का खेल नहीं। आप घंटी बजाकर चाहें कि हम दो मिनिट में समझा दें, तो यह दो मिनिट में नहीं होगा। इनको समझाने के लिए पचासों साल लगेंगे।

महोदय, एक बात कहकर अपना भाषण खत्म करूंगा। इनकी सोच के लोग जब ये बोला करते हैं कि हिंदुस्तान के चप्पे-चप्पे पर तिरंगा राष्ट्रीय झंडा फहराया जाएगा, तो क्या काशी विश्वनाथ पर राष्ट्रीय तिरंगा फहराया जाएगा? नहीं फहराया जाएगा क्योंकि काशी विश्वनाथ मंदिर का अपना जज्बा होता है और राष्ट्रीय झंडे का अपना जज्बा होता है और जज्बे के ऊपर जज्बा रखा नहीं जा सकता है। ईदगाह का भी अपना जज्बा है, मस्जिद का भी अपना जज्बा है। वहां आदमी ईद की नवाज अदा करता है। किस मुंह से आप कह रहे हैं कि चप्पे-चप्पे राष्ट्रीय पर झंडा फहराया जाएगा? मैं अभी सुन रहा था तो हंसी आ रही थी कि ये कैसे कह रहे हैं? महोदय, हमें अच्छी तरह से याद है 51-52 का जमाना। राजनारायण जी हम लोगों के नेता थे, नौजवान थे। इस सदन में भी रह चुके हैं। काशी विश्वनाथ में हरिजनों को लेकर घुस गए। वहां के पंडों ने, पुरोहितों ने और करपात्री जैसे लोगों ने राजनारायण

जी को ललकारा, बनारस के राजा ने ललकारा, शंकराचार्यों ने ललकारा। काशी विश्वनाथ मंदिर अपवित्र घोषित कर दिया गया। 40 साल के बाद, 45 साल के बाद अभी बनारस में एक धर्म संसद की बैठक हुई। अब करपात्री जी तो नहीं है, राजनारायण जी भी नहीं है, लोहिया जी भी नहीं है, वह पंडित पुरोहित भी नहीं होंगे, लेकिन धर्म संसद की जो बैठक हुई आयोध्या मसले और किस-किस सवाल पर, तो आखिर में उन लोगों ने तय किया कि चलकर डोमराज के यहां भोजन करना है। जो लोग विश्वनाथ मंदिर में हरिजन का प्रवेश वर्जित मानते थे, मंदिर उनका अपवित्र हो जाता था, वह लोग डोमराज के यहां भोजन करने चले गए। अब पचास साल बाद इनको अकल आती है तो पांच मिनट के भाषण में हम इनको अकल कहा से दे सकते हैं। धन्यवाद।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Shri Sangh Priya Gautam. Only three minutes has been allowed to you by the Chair.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश): उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं प्रोफेसर सनदी साहब का बड़ा सम्मान करता हूं और उनके वक्तव्य की भी सराहना करता हूं। मैं उनको पसंद भी करता हूं ओर मैंने ताली बजाई उनके वक्तव्य पर। मैं एक राष्ट्रीय विचार का व्यक्ति हूं। मैं कोशिश करता हूं दलगत राजनीति से ऊपर उठकर चलूं।...(व्यवधान)

श्री सत्य प्रकाश मालवीय: गलत जगह फंस गये है...(व्यवधान)... A good man in a bad company.

श्री संघ प्रिय गौतम: दरअसल आप लोगों की खुराफात की वजह से, उन लोगों की खुराफात की वजह से। मिश्र जी का शब्द इस्तेमाल कर रहा हूं:-

सताते भी हैं मुताबातिर भी और रोने भी नहीं देते।

यही बस इनका मंशा है कि मैं घुट घुट के मर जाऊं।

हिन्दुओं में भी कट्टरपंथी है और मुसलमानों में भी कट्टरपंथी है। यहां भी हठधर्मी है और वहां भी हठधर्मी है। कमियां दोनों जगह हो सकती हैं।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं अपने आपको केवल इस मुद्दे पर ही सीमित रखूंगा। यह जमीन नगरपालिका की है। नगरपालिका ने जमीन नमाज पढ़ने के लिए दी है। नमाज पर भी पाबंदी है कि साल में दो बार केवल नमाज होगी। आप रिकार्ड देख लें, जितना मैंने जाना है।...(व्यवधान)... मैंने इंटरफीयर नहीं किया था, आप मुझे कह लेने दीजिए। इजाज़त है कि ईद की नमाज, और ईद की नमाज केवल दो ही बार पढ़ी जाती है क्योंकि साल में ईद दो ही होती हैं। इसलिए लोजिकली भी इस पर केवल दो बार नमाज पढ़ी जा सकती है। सन् 1921 में लीज हुई थी और उसमें यह इजाजत मिली कि साल में दो बार नमाज मुस्लिम पढ़ेंगे और बाकी सभी वर्गों के लोग इस पर कोई भी यात्रा, आदि और पब्लिक फंक्शन कर सकते हैं। आप लीज को देख लीजिए। लिहाजा मुस्लिम और सभी लोग इसको इस्तेमाल इसी प्रकार करते रहे।

महोदय, अब इसमें झगड़ा कहां से शुरू होता है? यह होता है इन कांग्रेसियों के कारण। इन्होंने वहां पर बिल्डिंग बनाने की इजाजत दे दी। एक तो यह है ईदगाह के नाम से जाना जाने वाला स्थान अगर आप ईदगाह बनाएं तो बात समझ में आती है, लेकिन आप बना क्या रहे हैं? प्रोफेसर सनदी साहब बताएंगे। आपका इरादा चारों तरफ से गोलाई में एक मल्टीस्टोरी बिजनेस कांपलेक्स बनाने का है और उसको घेरकर के केवल अपने इस्तेमाल के लिए करना चाहते हैं और पब्लिक प्लेस से दूसरे वर्गों को सामाजिक समारोहों से वंचित करना चाहते हैं। चूंकि कांग्रेस सरकार की नीति हमेशा यह रही है।...(व्यवधान)...

मैं तो अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी का छात्र रहा हूं और आज के जो मुसलमानों के हमदर्द है, मैं रिपब्लिकन पार्टी का फाउण्डर मैम्बर रहा हूं, मैंने उस मंच से दलितों ओर मुस्लिमों की लड़ाई 23 बार जेल में जाकर लड़ी है। मैं डा. लोहिया जी के साथ भी जेल गया हूं। मैं उनको डा. अम्बेडकर से मिलाने के काम में शामिल था। जिस दिन डा. लोहिया का प्राणांत हो रहा था, मैं पछाड़ खाकर डा. लोहिया अस्पताल में नीचे गिर गया था। मनीराम बांगड़ी जी थे और भी कई आदमी गवाह है, जो वहां मौजूद थे। चूंकि अखबार में मेरा नाम प्रकाशन में नहीं आया और मैं बहुत गरीब घर में पैदा हुआ हूं, पब्लिसिटी नहीं मिली, लेकिन मेरा भी अपना एक योगदान है राष्ट्र के सौहार्द की स्थापना में। महोदय, यह झगड़ा कहां से शुरू होता है? आप कहते है कि आप नमाज पढ़िए ईद के दिन और बाकी पब्लिक प्लेस की तरह इस जमीन का इस्तेमाल होगा, बिल्डिंग वगैरह कोई नहीं बनेगी। जब आपने बिल्डिंग की इजाजत दे दी और बिल्डिंग एक साइड से बननी शुरू हो गई, छह दुकानें वहां बन गई। इस बारे में सनदी साहब बता देंगे तो झगड़ा शुरू हो गया।...(समय की घंटी)... सर, मैं भी फैक्ट्स पेश कर रहा हूं, किसी को प्रोवोक नहीं करूंगा।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Only three minutes were allowed to you.

श्री संघ प्रिय गौतम: दो मिनट की और मेहरबानी कर दीजिए, मैं जल्दी-जल्दी कह देता हूं। चुनांचे, वहां पर जो दूसरे वर्ग के लोग थे वे मुंसिफ की अदालत में गए। उन्होंने कहा कि बिल्डिंग पर रोक लगनी चाहिए, अदालत ने रोक लगा दी और कहा कि जो बिल्डिंग बन गई है, डिमालिश हो जाए। उसके खिलाफ अपील में सिविल कोर्ट में गए, डिस्ट्रिक्ट कोर्ट में गए, वहां से अपील खारिज हो गई। उसके बाद हाई कोर्ट में गए, हाई कोर्ट से भी अपील खारिज हो गई। अब सुप्रीम कोर्ट में गए, सुप्रीम कोर्ट का फैसला क्या है:-

> जितनी इमारत बन गई है वह डिमालिश नहीं होगी, इतना तो इनको स्टे है, जब तक यह केस सुप्रीम कोर्ट से तय नहीं हो जाता, पब्लिक प्लेस की तरह ये इस्तेमाल होगी और यात्रा वगैरह वहां पर जाएगी।

करना तो यह चाहिए था कि जिस अदालत के आदेश का अनुपालन होता, प्रो. सनदी साहब ने कहा कि बहुत दिनों से इस पर झगड़ा हो रहा है तो कर्नाटक की सरकार को, मेरा आरोप है कि कर्नाटक सरकार को दोनों पक्षों को बुलाकर के, इन्हें समझाकर के ...(व्यवधान)...

प्रो. आई. जी. सनदी: एक क्लेरिफिकेशन देना चाहता हूं। दूरदर्शन पर भी जब मेरा नाम आता है तो ''सनदी'' के नाम से आता है, वह ''सानदी'' नहीं ''सनदी'' है।

श्री संघ प्रिय गौतम ''सनदी'', ठीक है। थैंक्यू वेरी मच। बहुत-बहुत शुक्रिया।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly conclude.

श्री संघ प्रिय गौतम: तो वहां होना यह चाहिए था कि पब्लिक प्लेस झंडा फहरवा दिया जाता कोई हिन्दू वहां मंदिर तो नहीं बनाना चाहते थे या कोई अपनी आबादी नहीं बनाना चाहते थे, केवल झंडा ही तो फहराना चाहते थे। तो वहां की सरकार को यह करना चाहिए था कि पुलिस की मौजूदगी में और पैरा मिलिट्री फोर्सिस की मौजूदगी में हिन्दू-मुसलमान दोनों को मिलाकर झंडा फहरा देना चाहिए था, दो मिनट के बाद बात खत्म हो जाती। लेकिन हुआ क्या? लीडर आफ दि अपोजीशन, जिनको आप कह रहे हैं, वहां की अंजुमन से वह मिले और उन्होंने वह कहा कि हम मुसलमान लोग केवल वहां झंडा फहराएंगे, आपका हिन्दू कोई नहीं जाएगा, उन्होंने कहा कि हमें स्वीकार है लेकिन वहां के दूसरे लोगों ने, कठमुल्लाओं ने उनको बहका दिया। अब, जनाब, वहां समारोह होने वाला था, एक तो यह कहना कि लीडर आफ दि अपोजीशन वहां थे यह गलत है, उनको तो दो दिन पहले ही गिरफ्तार कर लिया गया। डेट आफ अकरेंस के दिन भारतीय जनता पार्टी का कोई नेता वहां मौजूद नहीं था और लीडर आफ दि अपोजिशन वहां मौजूद नहीं थे। यह हुआ 15 अगस्त को, जबकि इनको 13 अगस्त को ही गिरफ्तार कर लिया गया था। मैं इस बात को जरा स्पष्ट कर दूं।

दूसरी बात यह है कि जब सरकार ने इतनी तैयारी की, पुलिस लगाई, पैरा मिलिट्री फोर्स लगाई, रेपिड एक्सन फोर्स लगाई तो पहले पुलिस को, सरकार को, क्या करना चाहिए था? हम पर भी पहले पानी डाला गया था, 25 फरवरी को एम.पीज़. पर, फिर हम पर लाठीचार्ज किया गया, फिर आंसु गैस छोड़ी गई। तो करना यह चाहिए था कि पहले आप पानी डालते, फिर आंसु गैस छोड़ते, फिर लाठीचार्ज करते, यह न करके आपने सीधे फायरिंग क्यों की?

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Gautam, you have to conclude now.

श्री संघ प्रिय गौतम: इसका क्या अर्थ है? इसका सीधा मतलब है कि आपने जान-बूझकर के हत्या की है और जो सरकार यह इंतजाम नहीं कर पाई, वह सरकार फेल हुई है। इसलिए वहां की ''मोइली सरकार'' को डिसमिस किया जाना चाहिए। मैं अपनी यह बात विद फैक्ट्स एंड फिगर्स कह रहा हूं और आईदा के लिए ..(समय की घंटी).. आखिरी बात कह रहा हूं, मैं स्वागत करता हूं आपकी बात का, चलिए हम आपके ऊपर छोड़ते हैं कि इस तरह के झगड़े जहां भी हैं, मुसलमान केवल ईद पड़े साल में दो बार, कोई कंस्ट्रक्शन न करें और हर धर्म के लोग-हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, अपनी सभा करें, हमें आपका फैसला मंजूर है और सभी नहीं सोचेंगे झंडा लगाने की बात लेकिन यदि पब्लिक प्लेस पर इमारत बनाई जाएगी और दुकानदारी के लिए बनाई जाएगी और सरकार अगर ऐसी नीति अपनाएगी तो हम इसका विरोध करेंगे। धन्यवाद।

डा. जगन्नाथ मिश्र (बिहार): माननीय उपसभाध्यक्ष जी आज एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण विषय पर इस सदन में विचार-विमर्श हो रहा है जो हुबली की घटना से संबंधित है। इसके लिए हमें इस पृष्ठभूमि में जाना चाहिए कि ऐसी घटनाएं क्यों घटती हैं। ये तमाम यात्राएं, ये रथ-यात्राएं क्यों की जाती हैं। जिनसे कि संप्रदायवाद को, सांप्रदायिक तनाव को बल मिलता है। उच्चतम न्यायालय के इस निर्णय के बाद कि धर्मनिरपेक्षता हमारे संविधान की बुनियाद

है, मूल अवधारणा है, क्या इस देश के नागरिकों को, किसी संगठन को, किसी दल को यह छूट हो सकती है कि संविधान की मूल अवधारणा के विरुद्ध वह आचरण करे, संगठन करे और उन्माद उत्पन्न करे?

महोदय, भारतीय जनता पार्टी जिन बुनियादों को लेकर चली है विभिन्न नामों से, उनके नामों में परिवर्तन होता रहा है लेकिन वे हैं वही, एक ही मानसिकता, एक ही दृष्टिकोण और एक ही स्ट्रेटेजी राजनीति के लिए उन्होंने अपनाई है कि सांप्रदायिक तनाव पैदा करके जनादेश हासिल किया जाए।

महोदय, अयोध्या की घटना के बाद मुझे ऐसा लगता था कि भारतीय जनता पार्टी के शीर्षस्थ नेताओं के यह अहसास हो सकेगा कि अयोध्या की घटना की कितनी कीमत उनको देनी पड़ी जब उत्तर प्रदेश की, हिमाचल, प्रदेश की, मध्य प्रदेश की और राजस्थान की सरकारें टूटी थीं और जनता ने भी इसे अपनी मंजूरी दे दी चुनावों में। इसके माने यह हुए कि इस देश की एकता को खंडित करने के लिए, इस देश के सांप्रदायिक सद्भाव को क्षत-विक्षत करने के लिए जो कोई भी दल, जो कोई भी संगठन कार्य करेगा, उसे जनता का समर्थन और सहयोग नहीं मिल सकता।

महोदय, अब समय बदल गया है। जब जातियों में, संप्रदायों में बांटकर अगर कोई राजनीति करना चाहे, खास करके सांप्रदायिक भावना को उभार करके, हिंदू-मुस्लिम संप्रदायों में भेद डालकर अगर कोई जनाधार बनाना चाहे तो यह धारणा आज की परिस्थिति में निरर्थक हो गई है, इसकी सार्थकता समाप्त हो गई है और इस देश के लोग सचेत हो चुके हैं कि चुनावी दृष्टि से जो नारे लगाए जाते हैं, भाषण दिए जाते हैं, हिंदू-मुस्लिम लोगों में जो नफरत पैदा करने की बातें कही जाती हैं, वे केवल दलगत स्वार्थ की पूर्ति के लिए होती है। जन-समस्या से उनका कोई ताल्लुक नहीं है।

महोदय, जो यात्राएं या कार्यक्रम हुए हैं भारतीय जनता पार्टी की तरफ से वे अगर सामाजिक समस्याओं को दूर करने के लिए, राष्ट्रीय-एकता को मजबूत करने के लिए, सामाजिक-उत्पीड़न और सामाजिक अन्याय को दूर करने के लिए, समतावादी समाज बनाने के लिए या इस देश की नैतिकता को उठाने के लिए या हमारे राष्ट्रीय जीवन में आई गिरावट के मुद्दों को लेकर चलाए गए होते तो हमें इनकी ईमानदारी पर थोड़ा-बहुत विश्वास हो सकता था लेकिन उनके राजनीतिक कार्यकलापों में हमें कोई विश्वास नहीं है। केवल एक ही उद्देश्य से वे इन कार्यक्रमों को चलाते हैं कि वे जनता का समर्थन हिन्दू-मुस्लिम विभाजन करके प्राप्त करें।

महोदय, अब वह समय नहीं है जब ऐसे संवेदनशील मामले को हलके ढंग से लिया जाए। कोई कारण नहीं था वहां झंडा फहराने का और माननीय सदस्यों ने ठीक ही कहा है कि जो हमारा राष्ट्रीय झंडा है, वह किसी एक संप्रदाय का, किसी एक संगठन का नहीं है। ऐसा संगठन जिसकी निष्ठा हमारे संविधान के प्रति नहीं है, उसकी संपत्ति वह नहीं हो सकता है, उसका अधिकार वह नहीं हो सकता है। राष्ट्रीय झंडे के साथ कोई मजाक करे, खिलवाड़ करे और यह झंडा हमारे समाज को दो भागों में विभक्त करने का माध्यम बन जाए, यह उचित नहीं है।

माननीय सदस्य ने ठीक ही कहा कि अगर तिरंगे झंडे से सांप्रदायिकता बढ़ने की बात होगी तो हमारे तमाम स्वतंत्रता सेनानियों और नेताओं ने देश की आजादी के लिए जो कुर्बानियां और त्याग किए है, उनका हम अपमान करेंगे। इसलिए मैं निवेदन करना चाहता हूं कि केवल वहां का गोलीकांड ही आज की चर्चा का विषय नहीं है। वहां के मुख्यमंत्री ने तत्तकाल जांच की घोषणा कर दी है लेकिन मामला यहीं तक सीमित नहीं है। मामला बहुत गंभीर है और खुराफात की राजनीति, विध्वंस की राजनीति, देश को तोड़ने की राजनीति इनका मंसूबा है, इसको हमें स्पष्ट रूप से उजागर करना चाहिए और एक जांच समिति सदन की बने या सदन के बाहर बने, एक सर्वदलीय समिति बने जो सारे मामले की जांच करके राष्ट्र के सामने इस तथ्य को उजागर करे कि ऐसी हरकतें बार-बार इनकी ओर से क्यों की जाती हैं।

क्या इस देश को नुकसान पहुंचाने से इनको संतोष नहीं हुआ है? हमारे सैकड़ों-सैकड़ों लोग मारे गए, हमारी करोड़ों-करोड़ की निजी सम्पत्ति बरबाद हुई है। देश के बाहर जिन लोगों में हमारी प्रतिष्ठा के प्रति एक संदेह उत्पन्न हो गया था कि क्या भारत जो प्रतिबद्ध है, कमिटेड है सेक्युलरिज्म के लिए, उस देश के एक सम्प्रदाय के धर्म स्थल को शहीद किया जा सकता है? आखिर इस देश के अल्पसंख्यकों के मन में अगर सुरक्षा का भरोसा और विश्वास नहीं होगा, उन्हें धार्मिक स्वतंत्रता नहीं होगी जैसा कि भारतीय संविधान के अनुच्छेद 25, 26, 27, 28 में 29 में और 30 में निर्दिष्ट हैं तो उन धाराओं को हम याद क्यों रखेंगे? क्या देश के लोग संविधान के इन प्रावधानों की रक्षा के लिए आगे नहीं आएंगे? इन तमाम बिन्दुओं को आज उजागर करने की जरूरत है। इसलिए सरकार जल्दी से जल्दी एक जांच आयोग बैठाकर इन सभी बातों की गहराई में जाए और ऐसे लोगों की पहचान करें। हमें सार्वजनिक तौर पर इनकी भर्त्सना करने के लिए और ऐसे

दल की कार्रवाईयों को आगे रोकने के लिए ऐसी जांच की आवश्यकता है। इसलिए हुबली का जो इनका प्रोग्राम था, वह निश्चित रूप से हानिकारक था और देश को तोड़ने का था। कर्नाटक में जहां इनका कोई जनाधार नहीं है, इस कार्य के माध्यम से वह अपना जनाधार बनाने की शुरुआत करना चाहते हैं। इसकी जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है।

SHRIMATI MARGARET ALVA: Mr. Vice-Chairman, Sir. we have been listening, over the last four hours, to the various opinions that have been expressed in the House and the various accusations that have been made from some quarters of the House about the incident in Hubli. I rise. Sir, first of all, to say that we do share the sorrow of all those who have expressed it here and outside at the unfortunate loss of lives in Hubli which was absolutely unnecessary if a situation had not been created in which the law enforcing authorities had to ultimately intervene and protect the rights of the common citizens to peace and tranquillity in Hubli. Sir, it is obvious from the planning and from all the statements that have been made from particular quarters, that the BJP leadership had really wanted to launch its election campaign in the South from Hubli. It has used this occasion to start literally a political campaign. Immediately after the incident, the first demand has been for the dismissal of the local Government. And all sorts of other charges which are, undoubtedly, political in nature have been made. I do not wish to go into them at this stage. All I wish to say, Sir, is that Hubli has had a tradition of peace and tranquillity. In Hubli, Hindus, Muslims and other minorities have lived in peace, in total understanding, and the atmosphere was vitiated, unfortunately, on a solemn day lime the Independence Day, using nothing less than the National Flag as an instrument for creating discord and dissension among the local communities.

Sir, since the issue of the legal status of the land has been raised repeatedly—we have had different versions—I would like to place on record a few facts about the dispute itself. It was in 1921 that the then Municipality of Hubli Dharwar, had passed a resolution granting the open space of land in front of the Idgah on a lease basis, for a period of 999 years, on a nominal rent of Re. l/-per year, to the Anjumane-islam, Hubli. The said plot measured 1 acre S guntas and 76 square yards, bearing CGS No. 174. The resolution was approved by the Government of Bombay—at that time, these areas were under the Government of Bombay—on 11.1.1922. Thereafter, a document came to be executed in 1930 by the Anjuman-e-Islam, Hubli, in favour of the Chief Officer of the Municipality of Hubli. The document was supposed to be a lease deed in respect of the open space which was permitted to be used only for religious purposes and to enclose it with a compound wall, prohibiting them from subletting it and also from erecting any building on it.

In the meanwhile, during 1960, a modified order was passed by the Administrator of the Municipal Corporation, to enable Anjuman-e-Islam to construct shops around the Idgah. On 30.3.62, Anjuman-e-lslam executed a document, styled as "rent note', in favour of the Commissioner of Hubli-Dharwar Municipal Corporation, in terms of the Government Order of 1962. In 1971, Anjuman-e-Islam secured permission to put up construction on the plot in accordance with the plan approved by the Corporation, the validity of which was extended up to 1972. When Anjuman-e-lslam started construction of six shops, the BJP and some of the local leaders objected to construction of the building. The litigation is going on between both the parties since then, which means, the BJP has been a party to the dispute. *(Interruptions)*

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: In 1972?

SHRIMATI MARGARET ALVA: From 1972.

SHRI SANGH PRIYA GAUTAM: The BJP came into existence in 1980. There was no BJP before 1980.

SHRIMATI MARGARET ALVA: Now, if you change your names and your *Avtar* every few years, then, it is very difficult to keep Irack. of you. *(Interruptions)*

श्री एस.एस. अहलुवालिया: मैडम जिस तरह सेल्स टैक्स के लिए ये अपना बोर्ड बदलते हैं उसी तरह से ये अपना बोर्ड बदलते रहते हैं। (व्यवधान)

श्री जनार्दन यादव: *

.....(व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Kindly take your seal. Mr. Yadav, take your seat.

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, aggrieved by the decision of the Hubli .....*{Interruptions)*

SHRI S.S. AHLUWALIA: Mr. Vice-Chairman, Sir, I object to Mr. Yadav's remark. I object to it. He should withdraw this word. This turban is a sign of sacrifice. This turban which I am wearing, was the sacred thread of the Hindus. It was die *Tilak* of Hindus and you are talking about this turban, you withdraw your words.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Yadav, you withdraw your words because your words should not hurt the sentiments of the Member.

श्री जनार्दन यादव: मेरे शब्दों से अगर अहलुवालिया जी को कोई तकलीफ है तो मैं माफी मांगता हूं।

श्री एस.एस. अहलुवालिया: तकलीफ आपको होनी चाहिए। मेरे को नहीं, आपको होनी चाहिए।

श्री जनार्दन यादव: मैंने उस भावना से नहीं कहा था। यह ....(व्यवधान)

श्री एस.एस. अहलुवालिया: तकलीफ आपको होनी चाहिए। *

श्री जनार्दन यादव: जो मैंने कहा था...(व्यवधान)

श्री एस.एस. अहलुवालिया: इससे तुलना मत कीजिए।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): He has already withdrawn those words. Madam, you continue. Those words have been withdrawn from the record.

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, aggrieved by the decision of the Hubli-Dharwar Municipal Corporation granting permission for the construction of shops, these †[ ]Not recorded

parties filed a suit in 1972 in the Court of the Munsif at Hubli. The Commissioner of the Hubli-Dharwar Municipal Corporation was one of the defendants in the said suit. After the decision in the trial court, the matter was appealed before the Additional Civil Judge, Hubli. The Additional Civil Judge, Hubli, passed an order in 1982 and the hon. High Court of Karnataka has confirmed the Judgment of the Additional Civil Judge, Hubli, in 1992.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: What was it?

SHRIMATI MARGARET ALVA: One minute. Let me finish the whole thing. I am not going into the details of what happened. The Anjuman-e-Islam preferred an appeal before the Supreme Court of India. The Supreme Court of India has admitted it as a Special Leave petition and issued a stay order in 1992. The stay order reads as under:

> "The demolition of buildings in the area which was a subject matter of dispute in the file of the Karnataka High Court, is hereby stayed".

So, all other actions on this area have been stayed by the Supreme Court. It is evident from the judgment of the High Court of Karnataka and that of the Additional Civil Judge, Hubli, that the dispute is about the usage of Idgah *maidan* and also the construction and demolition of buildings. In 1992, a group of people, belonging to the BJP... *(Interruptions)*

SHRI PRAMOD MAHAJAN: You give the details. You are concealing the basic facts. What was the decision of the Commissioner of the Hubli-Dharwar Municipal Corporation? What was the decision of the Judicial Magistrate? What was the decision of the High Court and what was the stay order of the Supreme Court? You are concealing all these facts. *(Interruptions)*

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): She stated about the Municipal Corporation.

SHRI PRAMOD MAHAJAN She is quoting what she wants to quote.

SHRIMATI MARGARET ALVA: I am not taking sides. I do not belong to this side or that side. *(Interruptions)*

SHRI PRAMOD MAHAJAN: You cannot give a half-truth.... *(Interruptions)*....

SHRIMATI MARGARET ALVA: Please listen to me... *(Interruptions)* ___ I am not yielding. You should not interrupt me. ... *(Interruptions)*....\ am not yielding. I am not yielding. 1 am sorry, I am not yielding.....*(Interruptions)*... I am not yielding.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: She is misleading the House, Sir.....*(Interrup tions)* ....

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir, what is this? What is he saying? .... *(Interruptions)*....

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr Mahajan, from your side your version has been given. Let them give their version.

SHRI PRAMOD MAHAJAN: Sir, it is not a question of version.....*(Interrup tions)*.... It is not our decision. It is a public litigation.

SHRIMATI MARGARET ALVA: What is it, Sir? You cannot allow him to go on interrupting me like this. Why is he going on record; .....*(Interruptions)* .....I am sory, I am not yielding.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Mahajan, you will have to hear the Minister.

श्री एस.एस. अहलुवालिया: पहले सवाल किया, अब जवाब तो सुन लीजिए।

उपसभाध्यक्ष (श्री वी. नारायणस्वामी): अहलुवालिया जी, आप बैठ जाइए। (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): Mr. Ahluwalia, kindly take your seat .....*(Interruptions)*....

SHRIMATI MARGARET ALVA: Sir. I am not yielding and I do not think that he should interrupt me when I am giving a reply.

I am not going into the merits or the demerits of what has happened. What I am saying is that the matter is before the Supreme Court. It is *sub judice* and *(Interruptions)*.... Please do not interrupt me. ...*(Interruptions)*. .. The matter has been admitted in the Supreme Court as a Special Leave Petition and is pending with the Supreme Court. Sir, I want to say that a group of people belonging to the BJP planned, also in 1992, to hoist the National Flag at the disputed place coinciding with the unfurling of National Flag at "Lal Chowk' in Srinagar. As the place was disputed and the matter was pending before the High Court of Karnataka at that time, the local authorities decided not to allow any flag hoisting at the disputed place. This led to some tension in Hubli city then. Subsequently, the BJP activists have been making serious attempts to hoist the National Flag on the occasion of the Independence Day and the Republic Day. The district authorities have been thwarting all their attempts. In the last two years there were four attempts. Right? Okay.

Regarding the attempted flag hoisting by the BJP and other elements at Idgah Maidan on 15.8.94, the situation-report is as follows:

"The controversial Idgah Maidan was sealed by district authorities as a precautionary measure to prevent the BJP activists and other leaders, coming from all over, from hoisting the flag on 15.8.94. As a precautionary measure, curfew was also clamped in the limits of eight police stations between 3 P.M. on 14.8.1994 up to the mid-night of 15.8.1994. Ms. Uma Bharti, MP, was arrested at 10.55 A.M. on 15.8.1994 along with her supporters. Shri B.S. Yediyurappa, MLA and National Secretary of the BJP, was also arrested for defying the prohibitory orders along with followers at 11.30 A.M. Between 12.30P.M. and 1.00P.M. a crowd of about three to four thousand collected in the Maidan in front of the Savai Gandharva Kala Mandir near Deshpande Nagar. The crowd wanted Uma Bharti to come and address the gathering. Since Ms. Uma Bharti had been taken to preventive custody, the crowd was informed that she would not be allowed to address the gathering. The crowd got infuriated and resorted to vandalism. Immediately, local police arrested about 40 persons and they were

about to take them to Taluka Magistrate for being remanded to judicial custody. When the crowd surrounded the bus and tried to overpower the police. The bursting of teargas shells and rubber bullets had no effect and ultimately, as a last resort, the police opened fire to disperse the violent mob. Five persons died in the police-firing, ten persons suffered bullet injuries and twelve policemen and one Assistant Commandant were seriously injured. Additional reinforcements were rushed to the place and situation is tense, but under control. Director-General of Police also rushed to Hubli and the law and order situation is under control.

The BJP then gave a call for the Hubli *bandh* on the 16th and "black flag' demonstration all over the State. District Magistrates and other Superintendents of Police have been asked to maintain total peace in the State.

Sir, I am just placing these facts on record. I am not saying what the judgment of the Supreme Court should be. The point, on which all sections of this House are agreed, is, what is called for is an understanding, particularly on Independence Day; that there is no majority or minority when it comes to patriotism and nationalism. We all have to work together We all have to work for peace and understanding together.

4.00 P.M.

Therefore, the way in which the whole thing is now being sought to be made into an insult to the national flag because of the protest of some minority groups, who are anti-national and who do not want the national flag to be hoisted on the Independence Day, is not fair to leaders like my colleague. Prof. Sanadi, and many other outstanding leaders of different communities who have maintained peace and absolute amity between communities in Hubli. Election battles are fought. They are won and they are lost. But religion and particularly the national flag, should not become a symbol of this battle of the ballot. We all fight on issues, not on the national flag.

Sir, I must say two things here, which, I think, would set the record right. One is that the State Government, rather the Chief Minister, has announced a judicial inquiry. The State Cabinet will decide tomorrow who should head the inquiry. Payment of compensation of Rs. 1,00,000 to the next of kin of those who died in the firing has also been announced. The situation is under control. I have just spoken to Bangalore a little while ago. There is no problem at all. There is no problem of any kind which has erupted after this.

Sir, there is one issue on which the Members, particularly the BJP Members, spoke that is, the court orders. I think the BJP is the last party today who can quote laws and orders to us because even before the Supreme Court they had given affidavits, they had court orders, and they had committed themselves to following the court orders and then the Babri Masjid came down. Therefore, keeping this in view, we did not want to take any more chances. Karnataka is a peaceful Stale. Minorities and majorities, all of us, have lived in peace. We don't want the people, who have experimented in the North, who have burnt cities, whole areas-rather caused to bum the cities and whole areas-in the name of a place of worship, to destroy the amity in the South, particularly in Karanataka. Therefore, 1 wish to say that we share the concern of all those in the House, who have expressed their anguish over the turn of events. I would appeal to all sections not to make this a parly issue. This is not a Hubli issue. I think this is the time when we have to look at the whole issue as a national issue. Secularism is the cornerstone of our nation and all of us are committed to preserving this basic structure of our society. Therefore, I appeal to all of you, let us not get into acrimony over this issue. Those who died cannot come back to life. But we have to ensure at least that no more will die. 1 think it is what should really come out of this debate, in a sense of understanding and in a sense of national pride.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI V. NARAYANASAMY): We have taken more than 4 hours for one subject and that too during Zero Hour. Now we will go to the Government business. We will take up the Appropriation Bills. The other businesses, which are slated for today, may be taken up tomorrow. Now

Mr. Shankar Dayal Singh to continue his speech on the Bills.

THE APPROPRIATION (NO. 3) BILL, 1994, THE APPROPRIATION (NO.4) BILL, 1994 & THE APPROPRIATION (NO.5) BILL, 1994—

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार): उपसभाध्यक्ष जी, मैंने कल गांधी जी से अपनी बात शुरु की थी। मैंने यह कहा था इस देश के विकास के लिए, इस देश की योजनाओं के लिए, इस देश की अर्थनीति के लिए गांधी के बताए हुए रास्ते पर ही इस देश को चलना होगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री सतीश अग्रवाल) [पीठासीन हुए]:

हमारे सामने जो स्थितियां है और जो परिस्थितियां है वह अच्छी तरह से इस सदन में कई बार चर्चा में आ चुकी है। पिछले दिनों हमने डंकल प्रस्तावों को मानकर गेट संधि करके भारत के सम्मान के साथ जिस तरह से खिलवाड़ किया उसको लेकर देश में और देश के कोने-कोने में, सदन में और सदन के बाहर विस्तार से चर्चाएं होती रही है उसमें मैं जाना नहीं चाहता।

लेकिन इतना जरुर कहना चाहता हूं कि यदि आज गांधी जी होते तो देश की तस्वीर कुछ और होती। पिछले 47-48 वर्षों से देश की जो तस्वीर बनती चली जा रही है, राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक, तीनों तरफ से वह बहुत ही विचारणीय और गंभीर है। मैं इसे राजनैतिक मामला कतई नहीं मानता। इसलिये कि देश के विकास का जो मामला होता है, राष्ट्रीय स्वाभिमान का जो मामला होता है, वह राजनीति से ऊपर होता है और हम सब जो यहां बैठे हुए हैं, निश्चितरूप से कहीं न कहीं एक मत पर आकर जुड़ते है कि इस राष्ट्र को टूटना नहीं चाहिये, मजबूत होना चाहिये और हमारा स्वाभिमान बना रहना चाहिए। गांधी जी की सबसे बड़ी शक्ति थी सत्य और अहिंसा। लेकिन आज हमारा ढांचा धीरे-धीरे असत्य और हिंसा के मार्ग से चरमरा रहा है।

उपसभाध्यक्ष जी, आज देश एक चौराहे पर खड़ा है। हमारी विदेश नीति, हमारी आंतरिक नीतियां, कश्मीर की स्थिति, असम की स्थिति और दूसरी अनेक स्थितियां ऐसी हैं, जिनके बारे में इस सदन में चर्चा होती रही है। खुशी की बात है कि पंजाब में शांति है और इसके लिये पंजाब के भाइयों को मैं बधाई देता हूं जो वहां पर शांति स्थापित हुई है। लेकिन दूसरी ओर प्राकृति आपदायें कहीं पर बाढ़, कहीं पर सूखा, कहीं बीमारियां और कहीं दूसरी तरह की मार हमारे ऊपर होती है। उसको तो हम सह लेते हैं लेकिन दूसरी जो मार होती है वह बहुत असह्य हुआ करती है।

मैं आर्थिक नीतियों की बात जो कर रहा था, जो विनियोग विधेयक 3,4 और 5 के सिलसिले में मुख्य रूप से चर्चा का विषय होना चाहिये, इस संबंध में मैं एक खास मुद्दे पर आऊं, इसके पहले मैं आपके माध्यम से सरकार का ध्यान 1980 की ओर ले जाना चाहता हूं। 1980 में भी देश में इस तरह का माहोल पैदा हुआ था और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष से भारत को 5.2 अरब का ऋण मिलने की बात चल रही थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने उसे अस्वीकार कर दिया था। मंत्री महोदय को अच्छी तरह से याद होगा, इसको उन्होंने इसलिये अस्वीकार किया था क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष की जो शर्तें थीं, उन शर्तों को मानने से हमारे देश का स्वाभिमान समाप्त होता और हमारी अनेक नीतियां गिरवी हो जाती। 1980 में जब श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसे अस्वीकार किया तो विश्व बैंक ने उस समय 25 करोड़ डालर खर्च करके, 750 करोड़ रुपया खर्च करके, भारत की आंतरिक अर्थव्यवस्था पर विस्तार से एक रिपोर्ट तैयार की। 30 नवम्बर, 1990 को भारत सरकार को उस रिपोर्ट की प्रति थमायी गयी और मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है कि जिसको स्वाभिमान के नाम पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने 1980 में ठुकरा दिया था, उसी ऋण को 1990 में नयी सरकार जब आयी तो वह उस ऋण के चंगुल में चली गयी।

उपसभाध्यक्ष जी, आज हमारी वर्तमान स्थिति क्या है? विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा-कोष की निर्धारित शर्तों को मान कर हम चल रहे हैं। हम बैसाखी के सहारे चल रहे हैं। वह कहते हैं कि उठो हम उठते हैं, बैठो तो हम बैठते हैं। हो क्या गया है इस देश को? 1989-90 में डालर की दर 16.65 प्रति डालर थी, 1991-92 में वह 24.74 हुई और आज 1993-94 में 32 रुपया एक डालर का मूल्य हमको देना पड़ रहा है। रुपये का अवमूल्यन हमने दो-दो बार किसके इशारे पर किया, यह मैं जानना चाहता हूं? महोदय, मुझे खुशी है कि जब मैं इस बात को उठा रहा हूं तो आप इस कुर्सी पर पदासीन हैं और इस बात के आप सबसे अनुभवी और जानकार व्यक्ति हैं। जब कोई जानकार व्यक्ति सामने रहता है तो बहुत सी ऐसी बातें भी जिह्वा पर चली आते हैं, जो बातें छिपी रहती हैं, शायद ये बातें सरकार तक पहुंच सकें तो मैं समझूंगा कि मेरा बोलना सफल रहा। इसलिए उपसभाध्यक्ष जी, मैं सीधे कुछ सवाल सरकार से पूछना चाहता हूं और यह कहना चाहता हूं कि सरकार की ओर से जब हमारे